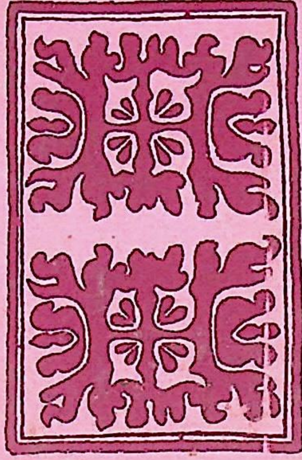


राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्

नवदेहली

गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ ग्रन्थमाला

।।४५।।

अथ

श्रीलक्ष्मीदत्तविरचितम्

।। पाण्डवचरितम् ।।

महाकाव्यम्



संशोधकौ

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

डॉ० राधेश्याम

श्रीलक्ष्मीदत्तविरचितम्

॥ पाण्डवचरितम् ॥

श्रीलक्ष्मीदत्तविरचितम्

॥ पाण्डवचरितम् ॥

महाकाव्यम्

(मैथिलाक्षरेषु लिखितायाः एकमात्रमुपलब्धायाः ताडपत्रमातृकायाः
संशोधितः पाठः)

●

संशोधकौ
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी
प्राचार्यः

डा० राधेश्याम
प्राध्यापकः



गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्
चन्द्रशेखर-आज़ाद उद्यानम्
प्रयाग-२

प्रकाशक -

डॉ० गयाचरण त्रिपाठी, डी०लिट्०
प्राचार्य
गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
चन्द्रशेखर आजाद पार्क
इलाहाबाद-२

मूल्य -

अक्षरसंयोजना -
विनोद कुमार द्विवेदी

मुद्रक -
दुर्गा एण्टर प्राइज़ेज
इलाहाबाद-२

RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN
(Under the auspices of the Ministry of H.R.D.)
New Delhi

Ganganatha Jha Kendriya Sanskrit Vidyapitha

TEXT SERIES

Chief Editor
Prof. G.C. Tripathi
Principal



Vol., No. 45

Pāṇḍavacaritam

by
Lakṣmīdatta

(A poetical work based on the story of Mahābhārata)



Edited by
Dr. Gaya Charan Tripathi
and
Dr. Radheshyam



Ganganatha Jha Kendriya Sanskrit Vidyapeetha
Chandrashekhar Azad Park
Allahabad-211 002

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्
(केन्द्रीय-शिक्षामन्त्रालयस्याङ्गभूतम्)
देहली



गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठ-ग्रन्थमाला

प्रधानसम्पादकः
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी

पञ्चचत्वारिंशं प्रसूनम्



श्रीलक्ष्मीदत्तविरचितम्

॥ पाण्डवचरितम् ॥

महाकाव्यम्

(मैथिलाक्षरेषु लिखितायाः एकमात्रमुपलब्धायाः ताडपत्रमातृकायाः संशोधितः पाठः)

संशोधकौ
डॉ० गयाचरण त्रिपाठी
डॉ० राधेश्याम

गङ्गानाथझा-केन्द्रीय-संस्कृत-विद्यापीठम्
प्रयागः

प्राक्कथन

संस्कृत की अधिकांश साहित्यिक रचनाओं की कथावस्तु के मूल स्रोत के रूप में 'रामायण' एवं 'महाभारत' का महत्त्व सर्वविदित है। साथ ही इन दोनों आदि-महाकाव्यों के सक्षिप्ततर, एवं साहित्यिक दृष्टि से अधिक परिष्कृत रूपान्तर करने के भी अनेक प्रयास हमारे कवियों द्वारा किये गये हैं। इन्हीं प्रयासों की शृंखला में श्री लक्ष्मीदत्त "कविडिण्डिम" द्वारा विरचित 'पाण्डवचरितम्' नामक प्रस्तुत काव्यग्रन्थ को भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिये जिसमें पाण्डवों के जन्म से लेकर उनके स्वर्गारोहण तक की कथा इक्कीस सर्गों में वर्णित है। ये लक्ष्मीदत्त बिहार या बंगाल के लक्ष्मीनारायणराय नाम के राजा के आश्रित थे। इनका काल अज्ञात है, फिर भी अनुमानतः एवं आन्तरिक प्रमाणों के आधार पर, हम इन्हें लगभग १६ वीं शती में रख सकते हैं। बृहत्त्रयी एवं लघुत्रयी दोनों का प्रचुर प्रमाण इन पर परिलक्षित होता है।

वर्तमान प्रकाशन कोई समालोचनात्मक संस्करण नहीं है। गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में इस ग्रन्थ की केवल एक खण्डित मातृका (क्रम संख्या ४३२६, आगम संख्या २९२१,८३) उपलब्ध है जो श्रीताल-पत्रों पर कलम द्वारा मसी से मैथिली लिपि में लिखी हुई है। इसमें कुल १३२ पत्र हैं किन्तु बीच-बीच में ६ पत्र (११,२९,३०,३२,३७,१२८) विनष्ट हो गये हैं। अन्तिम पृष्ठ भी नहीं है। जो पत्र उपलब्ध है, उनमें भी कई ऐसे हैं जिनका ऊपर-नीचे या दाहिनी-बाईं ओर का भाग टूट कर नष्ट हो गया है जिससे श्लोकों का पाठ त्रुटित हो गया है। सामान्यतः पत्रों की लम्बाई लगभग ३९ से०मी० त्तथा चौड़ाई ५ से०मी० से कुछ अधिक है। प्रतिपृष्ठ ५ पंक्तियों का लेखन है, पत्र के मध्य में छिद्र है। त्रुटित होने के अतिरिक्त पत्र कीट भक्षित भी हैं जिससे बीच-बीच में भी कुछ अक्षर अपाठ्य हैं। लिपिकर्ता का नाम भवदेव है।

इस ग्रन्थ की अन्य प्रतियों के अस्तित्व की सूचना प्राप्त करने के लिये कई संग्रहालयों को लिखा गया किन्तु कहीं भी इसकी कोई अन्य मातृका होने

की सूचना नहीं मिली। आउफ़्रैष्ट के 'सूचीपत्रों के सूचीपत्र' (Catalogus Catalogorum) में एल० २००४ संख्यक एक अन्य मातृका का उल्लेख अवश्य है किन्तु वह भी अब अप्राप्य है। ग्रन्थ की अन्य प्रतियों के अनुपलब्ध होने पर भी यह वाञ्छनीय समझ गया कि विद्यापीठ में उपलब्ध मातृका का ही यथावत् पाठ एक बार सुधी पाठकों को उपलब्ध करा दिया जाए जिससे कम से कम एक महाकाव्यात्मक रचना तो प्रकाश में आ जाए और संस्कृत कवियों की सूची में एक उज्ज्वल नाम और जुड़ जाए। हमारे ग्रन्थागार में पड़ी पाण्डुलिपि को तो दिन-प्रतिदिन क्षीणतर ही होते जाना है। यदि भविष्य में किसी सौभाग्यशाली विद्वान् को इस काव्य की कोई अतिरिक्त मातृका (या मातृकाएँ) प्राप्त हुईं, तो वह इसका समीक्षात्मक संस्करण प्रकाशित कर सकता है, अस्तु।

वर्तमान समय में काव्य जिस रूप में प्राप्य है, उसमें श्लोकों की समग्र संख्या १७१५ है। पूर्ण ग्रन्थ में अनुमानतः लगभग दो सहस्र पद्य रहे होंगे। काव्य की कथावस्तु में बहुत परिवर्तन कवि ने नहीं किया है, पाण्डवों के जन्म से लेकर उनके महाप्रयाण तक की कथावस्तु काव्य का विषय है। महाभारत की कथा का यह घटनाक्रम इतना विस्तृत है कि काव्य में 'सन्ध्यासूर्येन्दुरजनी-प्रदोषध्वान्तवासराः' से लेकर 'शैलर्तुवनसागराः' आदि विषयों के वर्णन का बहुत अवकाश नहीं था। फिर भी चतुर्थसर्ग में स्वयंवर के प्रसंग में द्रौपदी के सौन्दर्य एवं हाव-भाव आदि का वर्णन, षष्ठ में ग्रीष्म ऋतु एवं यमुनानदी का वर्णन तथा एकादशसर्ग में स्वर्ग की छटा का वर्णन कवि की काव्यप्रतिभा का सुन्दर परिचायक है। लगता है कि इक्कीसवें सर्ग में कवि ग्रन्थ को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करने का इच्छुक है। बीसवें सर्ग तक वह आराम से चलता हुआ, केवल जयद्रथ वध तक ही पहुँच पाता है। किन्तु २१वें में अश्वत्थामा द्वारा पाण्डवों की अवशिष्ट सेना का शिविर में विनाश, उत्तरा के गर्भ की कृष्ण द्वारा रक्षा, मृत स्वजनों का तर्पण, भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को राजधर्मोपदेश, अश्वमेधयजन तथा तदनन्तर पाण्डवों द्वारा हिमालय पर देह त्याग आदि इतने सारे विषयों का एक साथ वर्णन है।

महाभारत में प्राचीन आचार्यों ने शान्त को अंगीरस माना है किन्तु 'पाण्डवचरितम्' में संभवतः वीर को ही अंगी का स्थान देना पड़ेगा। बीच-बीच

में शृंगार, करुण, रौद्र एवं शान्त भी गौणतया आते-जाते हैं। छन्दों के प्रयोग में कवि निपुण है। ३२ प्रकार के छन्दों का बहुत ही कौशलपूर्ण निबन्धन उसने किया है जिनमें प्रचलित एवं अप्रचलित दोनों प्रकार के छन्द हैं। भाषा पर उसे उत्कृष्ट अधिकार है, शब्द संपदा उसकी विशाल है। पदावली प्रायः कोमल, मसृण एवं अनुप्रास युक्त है, किन्तु प्रसंगानुकूल परुष भी हुई है। कुल मिलाकर यह काव्य संस्कृत साहित्य का एक रत्न ही कहा जाएगा। सहृदयों को इसके अवलोकन से अवश्य तोष मिलेगा, यह मान कर हम इसे प्रकाशित कर रहे हैं।

इस काव्य की नागरी प्रतिलिपि मेरे शोधच्छात्र श्री (डॉ०) राधेश्याम ने अपने शोध प्रबन्ध हेतु आज से लगभग २० वर्ष पूर्व की थी जो अब हँडिया के एक माध्यमिक विद्यालय में प्राध्यापक हैं। मैथिली लिपि का अभ्यास कम होने के कारण उस समय डॉ० किशोरनाथ झा, श्री जीवेश्वर झा एवं श्री रामकिशोर झा ने भरपूर सहायता की थी। उनका शोध-प्रबन्ध ही इस ग्रन्थ के प्रकाशन का मूल आधार बना है। इस दुर्लभ काव्यग्रन्थ के प्रकाश में लाने में श्री तारिणीश झा एवं श्री विनोद द्विवेदी का भी सक्रिय सहयोग रहा जिसके लिये वे बधाई एवं आशीर्वाद के पात्र हैं।

आशा है विद्वज्जन इस काव्य का अवलोकन कर हम सबके परिश्रम को सार्थक करेंगे, इत्यलम् ।

विनयावनत

गयाचरण त्रिपाठी

अथ प्रथमः सर्गः

कन्दर्पदर्पाङ्कुरमात्तयोगं सिन्दूरपूरारुणमिन्दुगौरम्।
वृन्दा[1]रजातस्मितमट्टहासं वन्दामहे तद्‌द्वयमद्वयं वा।।१।।

गोवत्सपुच्छग्रहणोत्सुकाय गोपाङ्गनापाङ्गतरङ्‌गिताय।
सानन्दनन्दाङ्‌गणरिङ्गणाय तस्मै परस्मै महसे नमोऽस्तु।।२।।

सन्दर्भलम्भाय विदर्भवाचां व्यासं भजे चन्द्रमसङ्कवीनाम्।
यद् भारतीनिर्भरचन्द्रिकाभिर्मोहान्धकारा जगतो विधूताः।।३।।

व्यासस्य यद् भारतभारतीषु व्यासं समासादभिधातुमीहे।
बाल्यं हि तन्नोपहसन्तु सन्तः कर्माणि कुर्वन्ति न किं किशोराः।।४।।

सोमान्वये सोम इवाम्बुराशौ राजा भवत् पाण्डुरिति प्रसिद्धः।
यद् बाहुमासाध्य - - - - न हारा -- - - - - - - व्यरंसीत्।।५।।

क्षात्रं वपुः प्राप्य जगद्विजेतुं व्यासस्य जाग्रत्तपसः प्रभावः।
दुष्यन्तसूनोरिव लब्धकीर्तिः यः शान्तनोः सन्तति - - -[2]।।६।।

---

१. मन्दार?
– लिपिकृताऽऽदौ ''ॐ नमो महागणेशाय'' इति लिखित्वा ग्रन्थलेखनमारब्धम्।
२. मुद्दधार?

- - - - - -वितश्चेतसि -- - - - - - - - - विस्मयाय।
दृष्टो जडिम्नेऽनुसृतः सुखाय योऽभूदरीणामिव सुन्दरीणाम्।।७।।

विद्या - भिर[3] ष्टादशभिः सखीभिः सरस्वतीं वीक्ष्य मुखे वसन्तीम्।
वक्षःस्थल - - - - - - - - - - - वैरपिना रुरोह।।८।।

द्यामभ्युपेते भरते तदीया जग्मुर्गुणाः पूर्वमितस्ततो ये।
सम्भूय सर्वैर्विनयादिभिस्तैरासेव्यता माप स राजसिंह।।९।।

चन्द्रः प्रजानां तपनो रिपूणाम् इन्द्रो नृपाणां मदनोऽङ्गनानाम्।
'धाता नतानां धन[4]दः कवीनां य एक एवाखिल देवमूर्तिः।।१०।।

महीभृतां नीतिरितीव यस्य प्रज्ञानिधे मंत्रिभिरास मन्त्रः।
धनुर्गुणेनैव धरां विजेतुश्चमूरभूच्चामर-चारु-भूषा।।११।।

सेनासु येनाम्बरनायकानां नाराचधाराभिरुपद्रुतासु।
आसीत् सुनासीरधनुर्द्धराणामम्भोमुचामाभरणैककार्यम्।।१२।।

रोमोद्गमस्तम्भविवर्णभावस्वेदप्रकाशस्वरभङ्ग कम्पैः -[5]।
यः क्षोणिपालानिव वैरिबालाः पादारविन्दे करदीचकार।।१३।।

---

३. ''धनदाता कुबेरश्च'' अत्र काकपदमाधाय केनापि विलिखितम्।

४. प्रकाश – ५/६

५. एतत्तुलमीयम्–
स्तम्भप्रलयरोमांचाः स्वेदोवैवर्ण्यवेपयू।
अश्रु वैस्वर्यमित्यष्टौ स्तम्भोऽस्मिन्निष्क्रियाङ्गता।।
दशरूपकम्

भल्लौघकीलापटलीजटालं[६] तेजस्फुलिङ्गावलिदुष्प्रसह्यम्[७]।
यं पावकप्रायमवाप्य पाण्डुं दशार्णसेनाशलभ विनेशुः[८]।।१४।।

यां कुन्तिभोजः सुहृदोऽनपत्यः शूरादवाप्तां तनयाञ्चकार।
सा राजमध्ये मृगराजमध्या ववार[९] गोविन्दमिवेन्दिरा यम्।।१५।।

कुन्ती च माद्री च कुतूहलिन्यौ लक्ष्मीधरण्योरिव लक्षणेन।
स श्लाघनीयै रभस-प्रसङ्गैः राम्बालिकेयो रमयाम्बभूव।।१६।।

यज्ञेन देवान् विनयेन मान्यान् दानेन दान्तान्ः परितोष्य विप्रान्।
मृगेन्द्रगामी मृगलोचनाभ्यां समं स मानी मृगयारतोऽभूत्[१०]।।१७।।

कदाचिदासन्नतरे हिमाद्रेः सोऽधिज्यधन्वा विवरचन्नरण्ये।
निःशङ्कमेकान्तरतप्रसक्तो मृगौ शरैः पंचभिराजघान।।१८।।

किमिन्दमो नाम मुनिः स्मरार्त्तो ह्रिया मृगीभूय रतौ प्रसक्त[११]।
तद्बाणभिन्नः पुनराप्तरूपो निर्भर्त्स्य राजानमिदं जगाद।।१९।।

त्वं कामभोगानपि बुद्ध्यमानो यत् प्राहरत् के[१२] लिपरायणम्माम्।
तस्मात् त्वमेतादृगवश्यमेव मृत्योर्वशं यास्यसि दुर्विदग्ध।।२०।।

---

६. जटालम्?
७. दुष्प्रसह्यम्?
८. विनेशुः?
९. रराज?
१०. एते महाकवि कालिदासस्य अधोलिखितेन प्रयोगेन तुलनीये –
ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी (रघुवंशम् द्वितीयः सर्गः ३०)
ततः समानपि स मानितार्थी (रघु० २.६४)
११. रतौ प्रसक्तः? किमिर्दमः इति महाभारते
१२. प्राहरत् केलि?

तयोधने[१३] मुदीर्य याते राजापि वज्राहतवद्विमूढः।
चिराय चिन्ताविनिमीलिताक्षः कोष्णं श्वसन्नाश्रममाजगाम।।२१।।

कुन्त्यै स शापं विनिवेद्य गन्तुं तपोवनं सन्ततिवर्जिताशः।
सम्मानितान्[१४] स्वाभरणप्रदानैः पुरं कुरूणां प्रजिघाय भृत्यान्।।२२।।

सो भोजभद्राधिपनन्दिनीभ्यां तपस्विदीक्षां नृपतिर्गृहीत्वा।
तीर्थेषु-तीर्थेषु चिरं तपस्यन्[१५] जगाम[१६] दुर्गं शतशृङ्गमद्रिम्।।२३।।

तपस्यतस्तत्र तपोभिरुच्चै राजात्मजाभ्यां सह पार्थिवस्य।
मध्येमुनीनामधिकं स्वनोऽभूत् क्षत्रस्य सर्वत्र हि जैत्रमोजः।।२४।।

दोःशालिनो दिग्विजये यथाभूत् तथैव पाण्डोस्तपसि प्रतिष्ठा।
यथामहिष्योरपिरूपलक्ष्मीरभ्यर्हिता तद्वदभूत् तपस्या।।२५।।

अन्तर्बहिश्चेश्वरमेव पश्यन् यदा न वैक्लव्यमवाप किंचित्।
- मनसी - - - - प्रसादादुन्मुक्तमात्मानममन्यतासौ।।२६।।

स गन्तुकामस्त्रिदिवं तदानीमुवाच - - - [१७] भूपत्यु चितं कुलस्य।
[१८]मत्तः परं हन्त पृथे पृथिव्यामन्तर्हितः शान्तनुवंश एषः।।२७।।

नेष्टं न पूर्तं न तपो निदानं[१९] पैत्रादृणादुद्धरति प्रजैव।
तत् कुन्ति रक्षां कुरु नः कुलानां किंचित् व्रज व्रा - -- त्मजाय।।२८।।

---

१३. मुनावमुम्?
१४. तान्?
१५. तपस्यन्?
१६. जगाम्?
१७. भूपत्युचितम्?
१८. अथक्रतुकर्मेष्टम्, पूर्त्त खातादिकर्माणि (इत्यमरः)
१९. न दानम्?

- - स्वयतामहि वीरराशः मुदामसुर्नोन्म - - -न्तिकेव।
अभ्यर्थ्य कंचिद् वसुधादितेयमपत्यमुत्पादयितुं यतस्व।।२६।।

त्रिःसप्तकृत्वः किल भार्गवेण निःक्षत्रियायामवनौ कृतायाम्।
पुरोहितैः क्षत्रियधर्मपत्न्यः समेत्य पुत्रानु-दत्पादयन्त।।३०।।

यक्ष्मोपशान्ते च विचित्रवीर्ये यत्नेन दासाधिपतेस्सुतायाः।
उत्पादयामास मुनिर्यथास्मान् द्वैपायनस्तद्विदितं तवैव।।३१।।

इत्युक्तवन्तं तमुवाच कुन्ती स्यां त्वत्तएवाहमवाप्तपुत्रा।
योगेन शा - दीप शाल्वमद्रात् भद्रा यथा प्रव्युषिताश्व भूयात्।।३२।।

स्वेच्छाविचारैः कुरुपूत्तरेषु चारित्रभङ्गो न कुलाङ्गनानाम्।
- - - त्तरति क्रमे यत् स्त्रीव स्वतन्त्रा कुतवानवैमि।।३३।।

तथापि नान्यत्र न विप्रसङ्गमभ्युत्सहे केसरिणीव फेरौ।
क्षेत्रे तव क्षत्रियनाथ नान्यो मनुष्य - - - - - स्तिसा।।३४।।

नाप्युत्सहेऽतिक्रमितु - - - - - भिधास्ये कुरु[20] चेद्विधेयम्।
दुर्वाससम्पूर्वमहं महर्षिमुपाचरम् नाभिगृहे[21] वसन्ती।।३५।।

वरं ददौ मे स मुनिः प्रसन्नो यं यं वरं वांछसि राजकन्ये।
मृशं[22] स्मरार्त्तो भवतां समेत्य दास्यत्य[23]पत्यं न - - - सीति।।३६।।

---

२०. कुरु?
२१. आतपेक्षत्रियेनाभिः (इत्यमरः)
२२. सोऽपि?
२३. यास्यति?

अनेन तस्या वचनेन राजा स्नातोऽमृतेनैव स निर्ववाव।
प्रत्याह चेनां सहसा निमज्जन्नुज्जीवितोऽहं सुभगे भवत्या।।३७।।

कुलं च मामुद्धर पुत्रहेतोः कल्याणि सङ्कल्पय धर्ममग्रे।
यत् पापपुण्योभय-पारदृश्वा न स प्रवर्तेत कदाप्यकृत्ये।।३८।।

तथेति कुन्त्याथ निमन्त्रितेन नान्येन केनापि च लक्षितेन।
विधाय दिव्यं स्मरकेलिनर्म[२४] धर्मेण तस्यामुदपादि पुत्रः।।३९।।

यातेऽथ धर्मे विशदेऽन्तरीक्षे दिक्षु प्रसन्नास्वनिलेऽनुकूले।
इन्द्रस्थचन्द्रेऽभिजिते मुहूर्त्ते सुखेन कुन्ती सुषुवे कुमारम्।।४०।।

अभूत् तदानीमशरीरिणी वाक् धर्मावतारः तव कुन्ति पुत्रः।
यशोभिरोजोभिरसौ तपोभिः स्यादद्वितीयो नृपचक्रवर्ती।।४१।।

योगी परब्रह्म यथा विभाव्य शरण्यमासाद्य यथा भयार्त्तः।
कुमारमालोक्य कुरुप्रवीरोऽभवत् तदानन्दनिमीलिताक्षः।।४२।।

पृथामथाभाषत भारतेन्द्रः स्यादेव वत्सस्तपसा प्रकाशः।
वरङ्गरीयस् तपसोऽपि राजा वृणुष्व वायुं बलिने सुताय।।४३।।

कुन्ती नभस्वन्तमथोपदध्यौ सोऽपि स्मरार्त्तः सहसा समेत्य।
वृकोदरो नाम ददौ कुमारं तस्यै हनूमन्तमिवाञ्जनायै।।४४।।

माता तमङ्के निपुणं निरीक्ष्य चिक्षेप शार्दूल इति त्रसन्ती।
संचूर्णितास्तेन पतिष्यताद्रेः[२५] शिलाः सहस्त्रं शतकोदिटनेव[२६]।।४५।।

---

२४. द्रवकेलिपरीहाताः क्रीडालीला च मर्म च। (इत्यमरः)
२५. पतिष्यताद्रेः?
२६. शतकोटिः स्वरुः शंवोदम्भोलिरशनिद्वयोः (इत्यमरः)

विलोक्य बालं बलशालिनं तं जगाद राजा पुनरेव जायाम्।
स्यादेव पुत्रो बहुपौरुषेयः किं पौरुषं वा[२७] यदि नास्ति दैवम्।।४६।।

[२८]दैवस्य दाता किल देवराजः सन्तोषयिष्ये तमहन्तपोभिः।
सांवत्सरेण त्वमपि व्रतेन प्रिये तमाराध्य वृणुष्व पुत्रम्।।४७।।

तिष्ठन्तमेकेन पदेन भूमौ ध्यायन्तमन्तर्मघवन्तमेकम्।
आगत्य राजानमवोचदिन्द्रः पाण्डो सुतं प्राप्यसि मत्समानम्।।४८।।

पृथापि सांवत्सरिकव्रतान्ते महेन्द्रमावाहति स्म सम्यक्।
स कामलोलः समुपेत्य कुन्त्यां निधाय गर्भं[२९] दिवमारुरोह ।।४९।।

दिङ्मंडलं कल्पतरोः प्रसूनैरामोदितं दुन्दुभयः प्रणेदुः।
अकारि तौर्यत्रिकमप्सरोभिस् तज्जन्मना भूस्त्रदिवी[३०] बभूव।।५०।।

उक्षा बभूवे क्षितिरम्बुलेशैस्ततो वगसे सुरभिर्य[३१] मरुद्भिः।
मन्दारमालाभिरथाभिपेते पश्चादिति व्योम्नि गिरा रिरासे।।५१।।

हे कुन्ति वन्द्यौ तव[३२]चादितेश्च कुक्षी द्वयोरेव जगत्त्रयेऽस्मिन्।
एतेन यत्रोषितमर्जुनेन यत्रोषितं[३३]वा पुरुषोत्तमेन।।५२।।

---

२७. यदि?
२८. दैवस्य?
२९. विधाय केलिम्?
३०. त्रिदिवी?
३१. धनुकूल प्रसरैः?
३२. तव?
३३. यत्रोषितम्?

कुमुद्वतामिन्दुरिव प्रसादैरानन्दनः स्यात् सुहृदां सुतस्ते।
सहस्त्रधामा तमसामिवासौ तेजोभिरुज्जासयिता रिपूणाम्।।५३।।

सुरासुराणामपि सांयुगीनो भोक्ता भुवः सागरमेखलायाः[३४]।
महारथानां[३५] प्रथमस्त्रिलोके धनुर्द्धराणामयमग्रणीः स्यात्।।५४।।

शल्यस्वसुः काकुभिराकुलस्य महीभृतोऽभ्यर्थनयाथ कुन्ती।
गीर्वाणवैद्यावुपमन्त्र्य सद्यो माद्र्या समं[३६]संगमयां चकार।।५५।।

★नासत्ययोः[३७] सङ्गमुपेत्य माद्री रूपेस्वभाव[३८]प्रतिमावसूत।
धर्मार्थयोः प्रश्रयमाश्रयन्ती यशः प्रतापाविव राजनीतिः।।५६।।

कल्पद्रुमान् बाहुभिराक्षिपत्सु वपुःप्रकर्षेण जनान् जयत्सु।
प्रवर्धमानेष्वथ पाण्डवेषु स्पर्धां दिवासार्द्धमधत्तरात्री।।५७।।

संस्कृत्य दिव्याभिरथ क्रियाभिरध्याप्यमानान् मुनिभिर्यथावत्।
★प्रपेदिरे पाण्डुकुलप्रदीपान् नद्यः समुद्रानिव सर्वविद्याः।।५८।।

दिनं-दिनं तेषु वपुःप्रकर्षं नवं नवं रूपमिवोद्वहत्सु।
दिशामधीशानिव मन्दमन्दं लक्ष्मीः समालम्बत लोकपालान्।।५९।।

---

३४. मेघलायाः?

३५. महारथानाम्?

३६. समम्?

★ सुतौलक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्रासुषवे यमौ।
सम्यगाराधिता विद्या प्रबोधविनयाविव।।रघु. १०.७१

३७. रुपस्वभाव?

★ गुणैराराधायमासुस्ते गुरुं गुरुवत्सलाः।
तमेव चतुरन्तशं रत्नैरिव महार्णवाः।।रघु. १०.८५

३८. नासत्यावीश्वनौ (इत्यमरः)

बन्दीकृतैः केसरिणां किशौरैः क्रीडामकुर्वन्त कुमारकास्ते।
तद् वीक्ष्यमाणस्य सह प्रियाभ्यां बभूव पाण्डोर्मनसि प्रमोदः।।६०।।

कूजत्पिकालम्बितबालचूते गुंजन्मधूलीमदलोलभृङ्गै।
परागधारापरिमन्दवायौ वने कदाचित् विजहार राजा।।६१।।

विवृण्वती कुन्तलमङ्गुलीभिः स्तनाग्रतुङ्गस्तिमितोत्तरीयाम्।
आनम्रनेत्रां स लतानिकुञ्जे स्नातोत्थितां मद्रसुतां ददर्श।।६२।।

स्मरातुरो विस्मृतपूर्वशापस्तया निषिद्धोऽपि[३९] मनोरमा ताम्।
प्रसह्य माद्रीं परिरभ्य दोर्भ्यां प्रसक्तमात्रो निपपात भूमौ[४०]।।६३।।

निमीलिताक्षं तमुदीक्ष्य माद्री कुन्तीं कृतार्त्तस्वरमाजुहाव।
हा हा हतास्मीति जवादुपेत्य तं तादृशं वीक्ष्य भृशं रुरोद।।६४।।

दृष्ट्वा जनन्यौ परिदेवयन्त्यावुदस्रवस्ते रुरुदुः कुमारा[४१]।
- - -[४२] विलापमाकर्णयतां मृगाणां पपात शष्पाङ्कुरमाननेभ्यः।।६५।।

तेषां समाक्रन्दनमन्दवेगैः तपस्विभिस्तत्र समेत्य सद्यः।
आश्वास्य बालैस्सह राजपुत्र्या वकारि - - -मथोद्यमस्तम्।।६६।।

नत्वा महर्षीन् परिरभ्य पुत्रानापृच्छ्य कुन्तीमनुचिन्त्य चन्द्रम्।
यथावदारोपितपाण्डुमग्निं प्रदक्षिणीकृत्य विवेश माद्री।।६७।।

---

३९. निषिद्धोऽपि?
४०. निपपात भूमौ?
४१. कुमाराः?
४२. हि काक?

कुन्त्या समं नागपुरं कुमारान् मनोविमाना मुनयः हिमाद्रेः।
निन्युः पयोधेः सह कामधेन्वा कल्पद्रुमान् स्वर्गमिवादितेयाः।।६८।।

सौधोपकार्यां बलभी गवाक्षेष्वितस्ततः कौतुकदत्तनेत्राः।
हर्षप्रदाश्चेतसि नागराणां पुरं प्रविष्टा ऋषिभिः समं ते।।६९।।

विधाय तेषां विधिवत् सपर्यां ततो महर्षीनिदमाह भीष्मः।
राज्यं वयं च द्वयमर्पितं वः प्रशास्त चान्यत् करवाम किंवा।।७०।।

जटाजिनी तत्र महर्षिरेको ज्ञात्वा मुनीनां मतमित्युवाच।
यदात्थ गङ्गात्मज-तत्तथैव ह्ययं कुरूणां कुलधर्म एव।।७१।।

युधिष्ठिरोऽयं तपसैव भीमो नभस्वता जिष्णुरसौ मघोना।
उत्पादितास्स्व-स्व-गुणेन कुन्त्यां भर्त्तार एते भरतस्य कीर्तिम्।।७२।।

कुलोत्तमोऽयं नकुलो रिपूणामसह्यधामा सहदेव एषः।
यमाविमौ मद्रपतेः सुतायां गीर्वाणवैधप्रभवावभूताम्।।७३।।

पाण्डोरभावविकलान् पृथया सहैतान्
युष्मभ्यमर्पयितुमत्र समाताः स्मः।
अन्तर्हितेष्विति मुनिष्वथ पाण्डवानां
पुत्राविशेषमकृताखिलमाम्बिकेयः।।७४।।

तैरभ्यवादि पृथया सह मत्स्यपुत्री
काशीपतेर्दुहितरावपि भक्तिनम्रैः।
साक्षादिव श्रुतिभिराभिरथ प्रयुज्य
मानेन मूर्ध्नि निदधे मधुरा शुभाशीः।।७५।

अथ स निग - - - [४३] ब्राह्मणे पंचवाद्ये

नदति मधुरगा - -[४४] नृत्यति स्त्रीकदम्बे।

युवतिविततलाजा राजनेपथ्यभाजो

भवनमभि न - - दूत्तमांगल्यमीयुः।।७६।।

इति श्री लक्ष्मीनारायणकवि - - - - - - - त लक्ष्मीदत्तकृते पाण्डवचरित्रे महाकाव्ये पाण्डवोत्पत्तिनम प्रथमः सर्गः।।

४३. निगदिते?

४४. गाढम्?

अथ द्वितीयः सर्गः

अथ स्नुषाभ्यां सह सत्यवत्यां तपोवनं व्यासगिरा गतायाम्।
आस्कन्द्य - माद्रीषु गिरार्त्तवाता (?) - - - - ह इव द्विपेन्द्रान्।।१।।

क्रीडाविधौ मुष्टिविमोक्षणादौ सर्वत्र विक्रान्तमुदीक्ष्य भीमम्।
समक्षमास्कन्दितुमक्षमास्ते रन्ध्रानुसन्धानपरा बभूवुः।।२।।

दुर्योधनः क्ष्वैधम - - - -[१] चिक्षेप भीमं सुरसिन्धु-मध्ये।
सन्दश्य तन्तत्र च दन्दशूकाः प्राबोधयन् भाग्यमहो गरीयः।।३।।

पीत्वा ततः पन्नगपत्तनेऽष्टौ कुण्डानि लब्ध्वायुतनागवीर्यः।
प्रायात् पुरं सव्य - - -[२] न्नरातीन् खलापकरोऽपि सतां हिताय।।४।।

द्रोणो निगूढद्रुपदावमाना - द्वसन् कृपस्यावसथे कदाचित्।
★क्रीडाकृतां कौरवपाण्डवानां वीटान्विलादीधिकयोज्जहार।।५।।

अथावधायै त्रिपथात्मजस्तं द्रोणं यथावत् कथितं कुमारैः।
जनैस्समानाय्य गुरोस्समानं सपर्ययित्वा कुशलान्यपृच्छत्।।६।।

---

१. योजतैनम्?
२. व्यदनन्नरातीन्?
★ तेषां संक्रीडमानानां उदपानेऽङ्गुलीयकम्।
पपात धर्मराजस्य वीहा तत्रैव चापतत्।।
म.भा.आ.पर्वणि १२४.४
पीत्वा पिष्टोदकं तच्च मातृदत्तं प्रियेण च।
अनभिज्ञः क्षीररसो नृत्यति प्रहसन् मुहुः।।
म.भा.आ.प. १२४.४२
द्रुपदीयज्ञसेनः इत्यर्थः (भा.प्रा.च. कोशे ३०५ पृष्ठेषु)

द्रोणस्तमूचे द्रुपदो न मावत् निगह्यते मे कुशलं न तावत्।
गाङ्गेय गङ्गासविधेऽपि सख्यं विस्मृत्य मां न्यक्कृतवान् स पापः।।७।।

कृपी विधातुः कृपया यमश्वत्-थामेति नामानमसूत सूनुम्।
तपस्विपुत्रान् पिबतः पयांसि दृष्ट्वा स दुग्धाय चिरादरोदीत्।।८।।

पात्रात्सतोऽप्राप्य पयो मयास्मै पिष्टातकोन्मिश्रमदीयताम्भः।
बालस्तदापीय पयोभ्रमेण मध्ये शिशूनां मुदितो ननर्त्त।।९।।

तदा दरिद्रस्य जनुध्र्यथेति चिन्ताकुलोऽहं चिरमर्थहेतोः।
श्रुत्वा नृपं पार्वतमभ्युपेत्य स्वरत्यस्तु सख्ये सदसीत्यबोधम्।।१०।।

क्रुद्धः तदामामिदमाह राजा कोऽयं मृषा विप्र तव प्रलापः।
समानयोरेव हि साधु सख्यं न जातु गोमायुसखो मृगेन्द्रः[३]।।११।।

बद्ध्वा भवन्तं वसुधा ग्रहिष्ये ततः प्रतिज्ञाय तद[४]ग्रतोऽहम्।
भवन्तमालोकितुमागतोऽस्मि कौरव्य कच्चित् करवाणि किम्बा।।१२।।

इत्युक्तवन्तं तमुवाच भीष्मः - - - - भारतानाम्।
यदृच्छया कल्पय राज्यभोगा - - - - पुत्रानिव शिक्षयैतान्।।१३।।

गिरा स तस्याङ्गिरसः प्रहृष्यन् नाचार्यमेषा मुररीचकार।
उद्दामशिष्याभरणा हि विद्या सत्पात्र - - - - त।।१४।।

स ग्राहयामास कुरु प्रवीरान् अन्यांश्च राजन्यसुतानुपेतान्।
सर्वं धनुर्वेदमनुक्रमेण, सत्कर्मणः स्वर्गमिव स्वधर्मः।।१५।।

---

३. मृगेन्द्रः?
४. तदग्रतो?

अभ्यासभाजां मुहुरन्यदन्यदाविन्दतां कौशलमस्त्रविद्याः।
तेषा - - - - रुपदेशादिन्दूदयादाप इवाम्बुधीनाम्।।१६।।

तस्याश्नतो यत् पवनास्तदीये ध्वान्तेऽपि हस्तोऽगमदन्नमेव।
तामेव शिक्षां कलयन् किरीटी व्यधात् शरक्षेपमपि क्षमायाम्।।१७।।

जिष्णोश्शरानभ्यसतोऽथ रात्रौ श्रुत्वा गुरुर्ज्यातलघोषमुच्चैः।
ऊचे तमागत्य तथा यतिष्ये यथा तव स्यात् सदृशो न धन्वी।।१८।।

मध्ये कुरुणामधिकः शरणा-मभ्यास - - - भाझां सच[५] सव्यसाची।
द्रोणस्य भक्तावपि सम्भविष्णुः प्रीताविव प्राथमिको बभूव।।१९।।

नियुज्य नीराहरणाय नित्यं कुरूद्वहानाङ्गिरसोऽथ पुत्रम्।
अभ्यासयामास रहस्यमस्त्र-मतर्कयत् तत्परमिन्द्रपुत्रः।।२०।।

आपूर्य पात्रं वरुणास्त्रवारा समर्प्यंयस्तस्य समीपवर्ती।
सर्वं रहस्यास्त्रमवाप पार्थः किमप्यसाध्यं नहि यात्रिकस्य।।२१।।

कदाचिदाचार्यमतं गृहीत्वा मृगेन्द्रदर्पा मृगयाङ्गतास्ते।
जघ्नुर्बहूनृक्षवराहवाम वाहद्विषत् गण्डकपूण्डरीकान्।।२२।।

मृगान् प्रति श्वा मृगयुः प्रयुक्तो यतस्ततस्तत्र वनं विचिन्वन्।
दृष्ट्वैकलव्यं मृगचर्मबद्धमणिं जटालं तगशोत्रधारा?।।२३।।

शुनस्तदास्यं भ्रमतः समीपे तेनाप्रपूरे युगपत्पृषत्कैः।
तत् सायके लाधवमस्य दृष्ट्वा तं कौरवाः कस्त्वमसीत्यपृच्छन्।।२४।।

---

५. भाजां स च?

स तानिति प्रत्यवदत् पिता मे राजा निषादस्य हिरण्यधन्वा।
द्रोणो गुरुः[६] सोऽहमरण्यवासी नामैकलव्यो धनुरभ्यसामि।।२५।।

ज्ञात्वैकलव्यं कुरवो मृगव्य-मथा-चरन्तो दिवसावसाने।
पुरीमगच्छन्नलकाभिरामां ते राजराजात्मजरूपभाजः।।२६।।

सन्तप्यमालोक्य च स[७] किरीटी द्रोणं प्रणम्याथ मिथो बभाषे।
प्रतारितोऽहं भवता यदन्यः शिष्यो न मे स्यादधिकः तवेति।।२७।।

निषादसूनुर्निपुणः शराणा - मादानसन्धान-विमोक्षणेषु।
धनुर्वने यत्-परिशिक्ष्यमाणो मत्तोऽपि शिष्यः स विशिष्यते ते।।२८।।

क्षणं विचार्याथ सहार्जुनेन गत्वा वनं साधु कृतं प्रणामात्।
स दक्षिणां दक्षिणपाणिशाखां निषादसूनोस्त्वरितं[८] ययाचे[९]।।२९।।

द्रोणो ययावे मयि शिष्य देयं करस्य हृष्यन्निति दक्षिणस्य।
क्षित्त्वेषुणाङ्गुष्ठमदात् स तस्मै शूरस्य दातुः किमदेयमस्ति।।३०।।

द्रोणः स्ववाणीमिति पालयित्वा प्रीतेन पार्थेन पुरीं सहाययौ[१०]।
अङ्गुष्ठवैन्याच्च निषादसूनो [११]रिषु-प्रयोगे शिथिलः करोह्यभूत्।।३१।।

गुरुस्तमुद्योगिनमित्यमंस्त न केवलं शिष्यजनेषु मुख्यम्।
बीभत्सुरेको भुवने धनुष्मान् इति -- - - - [१२]एव जज्ञे।।३२।।

---

६. गुरुः?
७. च सः?
८. निषादसूनोः?
९. ययाचे?
१०. पार्थेन पुरीं सहाययौ?
११. निषादसूनु?
१२. प्रतिज्ञां गुरु?

श्रेष्ठो रश्थिष्वास युधिष्ठरोऽश्व त्थामा रहस्ये यमजौ कृपाणे।
दुर्योधनो भीम उभौ गदायां सर्वत्र वास्तोऽष्पति[१३] सूनुरेकः।।३३।।

द्रोणो द्रुमग्रेऽथ निबद्ध्य भासं[१४] शिष्यान् बभाषे भवतात्तधन्वाः।
ततोऽयमाज्ञापयितास्मि सोऽग्रे स -[१५]हरेदस्य शिरः शरेण।।३४।।

गुरुप्रयुक्ता युगपत्प्रवीराः पतज्जिकासज्जितसायकास्ते।
सत्कारुणा चित्रसमर्पितानां धनुर्द्धराणामुपमामवापुः।।३५।।

किं पश्यतेत्याङ्गिरसेन पृष्टाः पार्थादृते ते पृथगित्यवोचन्।
पश्यामि भासं द्रुमबद्धमेनं शिष्यैस्सह त्वां च न किंचिदन्यत्।।३६।।

भेत्तुं भवद्भिन्नविहङ्गमोऽयं शक्योनिवर्तध्वमिति ब्रुवाणम्।
प्रत्याह तं जिष्णुरहं तु भास-कण्ठातिरिक्तं कलयामि नान्यत्।।३७।।

प्रहृष्यता तेन कृताभ्यनुज्ञाः क्षिप्रं क्षुरप्रेण खगस्य शीर्षम्।
छित्वा पुरः पातयति स्म पार्थः पश्चाद्धनुर्ज्याध्वनिरुच्चार।।३८।।

गङ्गाम्भसि ग्रस्तवतस्तदङ्घ्री वारिव्यवस्यत्स्वितरेषु सद्यः।
छिन्नाच्च स्वमनुद्धरन्तं ग्राहाद् गुरुं वासविरुज्जहार।।३९।।

कदाचिदेवन्नृषु न प्रयोज्यं स्वीकारि तानेति कृतप्रसादः।
तस्मै गुरुस्तत् परितोषणार्थ[१६] मस्त्रं ददौ ब्रह्मशिरोऽभिधानम्।।४०।।

---

१३. वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः (इत्यमरः)
१४. भासः कुक्कुटपक्षिविशेषः (आप्टे)
१५. सद्यो? चित्रार्पितारम्भ इवावतस्थे रघु. २.३१
१६. परितोषणार्थ?

भूयं कृतास्त्रा महदीप्सितं मे करिष्यथैकं गुरुणेति पृष्टाः।
ते - - - - -[१७] दतीवतस्थुः बीभत्सुरेकः प्रतिजज्ञिवांस्तत्।।४१।।

ततः स्तमाश्लिष्य स [१८]रामशिष्यः पांचालराजं जितमेव जानन्।
आनन्दबाष्पेण अनुर्द्धराणां - - - -[१९] ध्यमुंचत्।।४२।।

राज्ञा नियुक्तो गुरुसम्मतेन निरूप्य भूमिं रणरङ्गयोग्याम्।
मंचप्रपंचा विदुरः समन्तादुत्तोलयामास तदोपकार्याः।।४३।।

सहायभीष्मादिभिरात्मरङ्मे - - - -[२०] धृतराष्ट्रभूपे।
नार्योऽपि गान्धारसुतां च कुन्तीमावृत्य वातायनमाश्रयन्त।।४४।।

पुण्याहमाङ्गल्थविधौ प्रयुक्ते गुरुं पुरस्कृत्य कुरुप्रवीराः।
धृतायुधाः क्लृप्तभटप्रसाधाः ते रङ्गभूमिं विवशुस्सलीलम्।।४५।।

★गोधाङ्गुलित्रा दृढ़बद्धकक्षाः कोदण्डिनः कुङ्कमचर्चितास्ते।
निषङ्गिणः कंचुकिनोऽचकासन् सामन्तधर्मा इव देहभाजः।।४६।।

आचार्यवाचा भरतेषु सद्यः कर्षत्सुमोर्वीमवरोध्य चा।
उर्ध्वं किलोद्यौरभितौ धरित्री भियास्वधोऽधो भुवनं बभूव।।४७।।

पत्तौ रथेवाजिनिवारणे वा या कापि तैराविरकारि शिक्षा।
सैषा स विस्मायित पूर्वपूर्वा निरीक्षकाणां नयनोत्सवाय।।४८।।

---

१७. तेऽवाङ्मुखाः?
१८. परशुरामः इत्यर्थः
१९. मध्ये स राजानम्?
२०. निवेस्त्रमाणे?
★ महाभारतस्य एतदर्शेन तुलनीयम् -
बद्धगोधाङ्गुलित्राणाः सङ्गवन्तोऽमितौजसः।।
वनपर्व १४३.१

ज्येष्ठानुपूर्व्या पुरुषङ्गवानां यो दर्शयामास यदा यदस्त्रम्।
जनेन तत्रैव तदा तदीयमध्यासनैपुण्यममन्यतैषाम्।।४९।।

अथोद्यतौ कोपकषायनेत्रा - वुल्लासितोद्दाम गदावभूताम्।।
युद्धाय दुर्योधनभीमसेना-बुदस्तहस्ताविव मत्तनागौ।।५०।।

भूयो मुजास्फोटनसिंहनादौ सव्यापसव्यभ्रमिधावमानौ।
परस्परं वीक्ष्य निहन्तुकामौ तौ वारयामास गुरोः कुमारः।।५१।।

प्रदर्शयिष्यन्तमथास्त्रशिक्षा वैशिष्ट्यमाकृष्टयशरासनज्यम्।
बीभत्सुमभ्यर्णगतं विलोक्य द्रोणो मुदा वाक्यमिदं जगाद।।५२।।

शिष्येषु पुत्राद पियः प्रियो मे मत्तोऽपि धत्ते कृतहस्ततां यः।
भोः पश्यतास्त्रं प्रकटीकरिष्यन्ननन्यसामान्यमसौ किरीटी।।५३।।

अथार्जुने कर्षति कार्मुकज्यां न केवलं त्रासमगुर्मनुष्याः।
अधि - - - विलोध्यरोहन? ध्युः --[२१] क्षोणिभृतोऽपि कम्पम्।।५४।।

पश्चात्पुरस्सार्द्धमधश्च मुक्ते वर्मिं तथा दक्षिणतः च लक्ष्यम्।
ज्यासिंचितो द्वे - - -विश्व क - - - - - - -- - - ।।५५।।

एकादशमपत्रं न सम्प्राप्यम् कर्तुमनेन लोकः
मामक्षिपन् क्षिप्रतरैः क्षुरप्रैः क्षतोऽद्य गन्तासि मया त्वमेव।।५६।।

कर्णो जगादार्जुन किं वचोभिः प्रत्युत्तरं पत्रिभिरेव देहि।
सहेलमुक्तैर्विशि - - -[२२] पुरो गुरूणां न हरामि यावत्।।५७।।

---

२१. कुल?
२२. विशिखैर्विचित्रैः?

- - - -[२३] द्रोणकृताभ्यनुज्ञो हृष्टः समीकाय समुद्यतोऽभूत्।
गान्धारिकेयैरभिनन्द्यमानः कर्णोऽपि बाणं समधत्त मौर्व्याम्।।५८।।

छायामथाम्बोधर-चक्रवर्ती चकार पुत्रोपरि बज्रपाणिः।
वैकर्त्तनस्योपगते समीपं तिग्मद्युतौ चाधिकमातपोऽभूत्।।५६।।

एकत्र सूरारुणितं परत्र बलाहकश्यामलमन्तरिक्षम्।
अर्द्धोल्लसत् केसरमर्द्धलम्बि - रोलम्बमम्भोज -[२४]वाबभासे।।६०।।

द्वयोरणारम्भमुदीक्ष्यमाणा[२५] द्वेधा तदानीमभवत् समैव।
अदायि भीमावरजाय कैश्चित् कर्णाय कैश्चित् मधुराशुभाशीः।।६१।।

कृपस्तदाभाषत भारतीयः स एष पाण्डोस्तनयः किरीटी।
कर्ण त्वमाख्याहि निजाभिजात्यं समानयोरेव समीकमाहुः।।६२।।

ससायमच्छाय मुखं निरीक्ष्य दुर्योधनेनेदमथाभ्यधायि।
तेजोभिरेवोदितमाभिजात्यं कर्णस्य पृच्छेत् कृपमन्तरा कः।।६३।।

राजैव योद्धा यदि चार्जुनोऽयं ससायमङ्गेऽद्य मयाभिषिक्तः।
इत्यासयित्वा कनकासने तं सहैव स भार्तृभिरभ्यर्षिचत्।।६४।।

स्नातोब्धितः पाण्डवदारमर्ध्ये त्रस्यन्तमुद्दाम मदाभिरामः।
दुर्योधनाधोरणमात्मपृष्ठे करेण राधेय करीन्यधासीत्।।६५।।

अथागतं प्राजनपाणिमारादङ्गाधिराजोऽधिरी बबन्दे।
स चाभिषेकार्द्रममुष्य हर्षान् मूर्द्धनमाध्राय चिरं ललज्जे।।६६।।

---

२३. पार्थस्तको?
२४. मिवाबभाषे?
२५. मुदीक्ष्यमाणा?

सोत्रास हासोऽथ जगाद भीमो न शोभते सूतसुताभिषिक्तः।
उत्सृज्य सज्यं घनुरात्मनीनं गृहाणजातेः सदृशं प्रतोदम्।।६७।।

अङ्गश्रियं नार्हति सूतसूनो भवान् पुरोडासमिवाध्वरे श्वा।
मा पार्थबाणेन निकृत्तमूर्द्धां वृत्तेः - - - - -[२६]शुषुत्व।।६८।।

कर्णे ततः प्रस्फुरिताधरोष्ठे निश्वस्य भास्वन्तमुदीक्ष्यमाणो।
दुर्योधनः क्रोधकषायनेत्रो वृकोदरं वाक्यमिदं बभाषे।।६९।।

न युक्तमेतत्तव भीम वद्यं यद्धाङ्गनानां बलमेव मूलम्।
किंचप्र - - - - - हि भीनां दुर्बोधनीयाः प्रभवा विराजः।।७०।।

जलोत्थितोऽग्निर्जगतैव पूज्यो दाधीचिकैरस्थिभिरास वज्रम्।
रुद्राग्निगङ्गाशरकृत्तिकानां पुरः - - -किमन्यद् भगवान्कुमारः।।७१।।

यद्भूमिदेवाः किलको - -[२७] क्षत्राङ्गनाभिर्जनिताः श्रुतन्ते।
द्रोणो गुरुर्नः कलशाच्च जातः कृपः शरस्तम्बभवोऽयमास्ते।।७२।।

जगत्प्रसिद्धं भवतांचि जन्म -- - -[२८]निन्दितुमङ्गराजः।
स कुण्डलान्तः कवचं-कर्णं राधानसु - - -[२९]गीवसिंहम्।।७३।।

स एव सर्वावनिराज्ययोग्यो नाङ्गाधिपत्येन - - -[३०]कर्णः।
क्षान्तन्नयेन - - - - यस्य ततो गजस्येव मृगाधिपेन।।७४।।

---

२६. फणानि?
२७. कौरवीभिः?
२८. को वा क्षमो?
२९. मृगीव?
३०. विभाति?

स एष शौर्य्येण मया च सख्या महीतलेऽस्मिन्नसमानधर्मा।
वैयाघ्रमारुह्य पुरो रिपूणांमाकृष्यतां चापमनेन पद्भ्याम्।।७५।।

तद्वाक्यमाकर्ण्यं रणाय दृप्तावुत्तस्थतुर्वासरवायुसुनू[३१]।
आचुकुशुः साधुजनाः समन्तादाचुक्रुधुर्द्रोणकृपादयश्च।।७६।।

सूर्यो - - -[३२] दुर्योधनस्यद्धष्टं[३३] दृष्ट्वा तनूजं जलधावमज्जत्।
शोर्यं च शौटीर्यमुदीक्ष्य सूनो - रानन्दवान् द्यामगमत् महेन्द्रः।।७७।।

सन्ध्यापदेशात् सुहृदं निवार्य दुर्योधने तेन सहाथ याते।
द्रोणं नमस्कृत्य मिथो हसन्तः प्रतस्थिरे पाण्डुकुलप्रदीपाः।।७८।।

भारद्वाजप्रणिहितभरैर्भारतीयैः प्रभाते
यावन्नान्यैर्विजयविधिनायायि पांचालसीमा।
तावद्गत्वा समस्मरश्लाधनीयं विधाय
द्रोणस्याग्रे द्रुपदमनयत् संयतं सव्यसाची।।७९।।

अद्यारभ्य द्युनद्यास्त्वमसि नरपतिर्दक्षिणादुत्तरेण
त्वत्सख्या यौवराज्यं मम किमिति सखे लज्जसे मा च भैषीः।
द्रोणाचार्येण बन्धाद् द्रुपदनरपतिः सादरेणेदमुक्तो
विप्रःशक्तोऽपि शत्रावपि नहि रुचितं मङ्गलादन्यदीष्टे।।८०।।

इति श्री लक्ष्मीनारायणकविडिण्डिमराजपण्डितरायलक्ष्मीदत्तकृते पाण्डवचरित्रे महाकाव्ये
शस्त्रशिक्षा नाम द्वितीयः सर्गः।

---

३१. वायुसून?
उभौ तु द्वैयवैयाघ्रौ द्वीपिचमवृते रथे (इत्यमरः)
३२. सूर्योऽपि?
३३. तुष्टम्?

अथ तृतीयः सर्गः

अथ सम्प्रतिपद्य यौवराज्यं धृतराष्ट्रोपहितं युधिष्ठिरेण।
विनयादनुरञ्जनैः प्रजानां हृदयेभ्यो निरवासि पाण्डुशोकः।।१।।

जगतामनुरागजागरूकानरिजैनानवधार्य पाण्डुपुत्रान्।
भवितव्यतया कृ - -य- - -[१] व्यथितोऽभूदथ चिन्तयाम्बिकेयः।।२।।

केलिनिमन्त्रितस्त[२]दानीमपि दुर्योधनदुर्णयोपरुद्धः।
पृथया सह पाण्डवानकाण्डे प्रजिधाय प्रतिवारणावर्तसः।।३।।

विदुषा विदुरेण दीक्षितास्ते जतु स द्मन्यपि[३] कुण्डदीपिताग्नौ।
हतवैरिमनोरथा ननन्दुः कृतपूर्णाहुतयः पुरोचनेन।।४।।

मुदिता जतुसद्मनः सुरङ्गां पथमाश्रित्य सुखेन निर्ययुस्ते।
परमार्थं गुरोरवाप्य विद्यामनलेनैव म - - - - ऋद्धेः।।५।।

जननीं ककुदेऽध्वसज्यखिन्नां बहुमानो यमजावथांस लग्नौ।
भुजयोरवलम्बिताग्रजन्मा - वरजन्मा तरसा जगाम भीमः।।६।।

पृथया सह तेऽधिरुह्य नौकामुपनीतां विदुराप्तधीवरेण।
त्रिपथामनुकूलगन्धवाहाः सुखमुत्तीर्य ययुर्जवादवाचीम्।।७।।

---

१. कुलस्य चाय?
२. केलिनिमन्त्रितः ?
३. सद्मन्यथि?

अथ भीममुवाच धर्मराजो वनमेतद्विषमं निशान्धकारात्[४]।
- - - - कुलिता दिशो न विद्मः पदमात्रं न च शक्नुमः प्रयातुम्।।८।।

इह यावदुपस्थितो न शत्रुः सह मात्रा पुनस्त्वह त्वमस्मान्।
पततामसकृत् तरिस्त्वमेको ननु दुर्योधनदुर्णयार्णवे नः।।९।।

स तथेति पुनः प्रगृहय् दृप्तः सह मात्रा सहजानुवाह भीमः।
अपरिस्खलतः परस्परं तान् पुरुषार्थानिव मेधया मनीषी।।१०।।

अटवीमभिधावतोस्य वेगा-दुदतिष्ठत् प्रबलः स वायुरुर्वाः।
सभयं विजयादयोऽप्यमीलन् भ्रमितोन्मूलितभूरुहेण येन।।११।।

तिमिरेष्वभिधावि धर्माराजा-वरजोरुप्रभवप्रभञ्जनेन।
अपि भूमिरुहेरपाति दूरा दुपपातिद्विरदाभिः किमन्यत्।।१२।।

विपिने यवमानसुनुरित्थं प्रहरार्द्धिशतियोजनान्यतीत्य।
तरुभिर्विरचप्य वेष्टनंद्रागथ विश्रामयति स्म तत्र सर्वान्।।१३।।

अनुमाय स हंससारसानां रसितैस्तत्र जलाशयं विदूरे।
तरसा तमुपेत्य भीमसेनः सलिलं यत्रपुटैरुपाजाहार।।१४।।

पवमानसुतः स तत्र तेषां श्रमवैकल्यजुषां निरूप्यनिद्राम्।
विषसाद विनिश्वसन्नजस्त्रं नयनाभ्यन्तरघूर्णितोदविन्दुः।।१५।।

इयमत्र हि कुन्तिभोजपुत्री वसुदेवस्य सहोदरा विरेजुः।
अपि पाण्डुनृपस्य धर्मपत्नी जननी नः पृथिवीमुपास्य शेते।।१६।।

---

४. निशान्धकारम् ?
★ तरुजातैः इत्यर्थः

अयमेव जगत्यजातशत्रुः चतुरम्भोधिवसुन्धराधुरीणः।
स्वपिति स्वभुजोपधानमुर्व्यामकृतज्ञस्य न वेधसो विवेकः।।१७।।

युधि चित्त न दत्त मित्रमुख्यान् नृपतीनेकरथेन यो जिगाय।
अयमेकधनुर्द्धरो धरण्यां बत बीभत्सुरवाप कामवस्थाम्।।१८।।

कुलिशादपि सङ्गरे कठोरौ सुकुमारौ कुसुमादपि स्वभावात्।
तनयौ तव मद्रनन्दनायाः स्वपतः प्राकृतपूरुषाविवेतौ।।१९।।

कुरु राज्यमक - - - - तार्थः[५] सह दुर्योधन सौरसौबलाभ्याम्।
यदि हन्त निहन्तुमेव न त्वां गुरुराज्ञापयते युधिष्ठिरो माम्।।२०।।

वयमद्य सुयोधनाधम त्वां सह भृत्येन न शक्नुमो निहन्तुम्।
त्वयि किन्तु दैवमप्रसन्नं यदि न क्रुध्यति धर्मनन्दनस्ते।।२१।।

इति तत्र विचिन्तयन्नजस्त्रं करमामृष्य करेण वीक्ष्यमाणः।
स्वपतां परिपालनाय तेषां प्रजजागार नभः सुतः कुमारम्।।२२।।

अधिगम्य मनुष्यगात्रगन्धं सहसारुह्य हलिध्वजं[६] हिडिम्बः।
अथ तानवलोक्य मातृषष्ठा - नधिगन्तुं प्रजिधाय स स्वसारम्।।२३।।

वसुधामधिशायिनाममीषां सविधे जाग्रतमानिलं विलोक्य।
सपदि प्रियसौहृदोत्सुकत्वा-द्विजहौ भ्रातरि गौरवं हिडिम्बी।।२४।।

समुदीक्ष्य कपाटवक्षसं सा कठिनो वूद्य? पयोधरोपरुद्धा।
भुजगेन्द्रभुजं नितम्बगुर्वी कनकाभं घनसन्निभानुरज्यत्।।२५।।

---

५. कण्टकं कृतार्थः ?
६. पर्वतो विशेषः

अथ मानवमानिनी समानं निरवद्यं प्रतिपद्य रूपमेषा।
उपसृत्य शनैर्वृकोदरं द्रागनुरागोदयगद्गदं जगाद।।२६।।

के इमे भवतः स को भवान् वा किमरण्यागमनप्रयोजनं वः।
रजनीचरपत्तने वनेऽस्मिस्मन् अथ जागर्ति भवानभीः किमर्थम्।।२७।।

नरनाथ निशाचराधिनाथो निवसत्यत्र ममाग्रजो हिडिम्बः।
अवलोक्य बुभुक्षतेह युष्मान् प्रहिता तेन निरूपणाय साहम्।।२८।।

तव काममुदीक्ष्य रामणीयं हृदयं मे हृदयङ्गमप्रसन्नम्।
न स यावदुपैति शाधि तावत् वियता दुरमितो नये भवन्तम्।।२९।।

विजिहीर्षसि गन्धमादने चेदथ मेरौ मलये हिमालये वा।
भुवने यदृच्छया चरन्ती वद जीवेश तदानये भवन्तम्।।३०।।

परिपाहि नरेन्द्र पश्यतस्तेऽक्ष्णोऽ नपराधामपि हन्ति मामनङ्गः।
पुरुषैरबला हि पालनीयाः परकीया यदि वा सतां स्वकीयाः।।३१।।

इदमाह विहस्य भीमसेनो धननिह्नदगभीरया गिरा ताम्।
बिभिमो न वयं निशाचरेभ्यो न मधुभ्यः करुभोरु नासुरेभ्यः।।३२।।

मनुजन्मधिया मृगाक्षि मा मा मव समिदेक दोः सहायम्।
मयि तिष्ठति कस्तवाग्रजोऽयं गजराजो मृगराजो मह्यधृव्यः।।३३।।

द्विषतः कपटेन धार्तराष्ट्रा-नपि भ्रातुरनाज्ञया न हन्मि।
तदनाकलनेन कामलोलः स कथं सुन्दरि बोढुमुत्सहे त्वम्।।३४।।

अवधार्य विलम्बितां हि - - - ७ - यां पगतः स तत्र तालात्।
अवलोक्य च तां मनुष्यवेषा-मवमत्यारभत क्रुद्धा निहन्तुम्।।३५।।

भगिनीमथ हन्तुं काममेनं सहसोपेत्य मरुत्सुतो बभाषे।
परिपन्थि विमन्थि बाहुमूले दण्डे मयि तिष्ठत्यबलां तु मा जिघांसीः।।३६।।

त्यज योषितमेहि योद्धुमस्मद् भुजयष्ट्युरहकेन८ विष्टम्।
इह यक्षतु राक्षसोऽ सृगार्द्रं शकुनि-श्रेणि-शिवास्तरङ्गमङ्गम्।।३७।।

मयि कीलप निष्फलप्रयासः स्तनयिनोः शरदीव गर्जितं ते।
बलवानसि देहि बाहुयुद्धं सुखमेते श्रमविक्लवाः स्वपन्तु।।३८।।

वनमेतदराक्षसं करिष्ये भगिनी द्रक्ष्यति राक्षसाधम त्वाम्।
अवधृण्यं मया निकृष्यमाणं मृगराजेव मतङ्गजाधिराज्यम्।।३९।।

तमभाषत कीलपः सकोपं शमनातिथ्य विकत्थसे वृथा किम्।
प्रथमं परिमध्य भक्ष्यति त्वा-मयमेतानथ चानुजान् हिडिम्बः।।४०।।

स रुषेदमुदीर्य राक्षसेन्द्रः सहसामारुतिग्रहीद् भुजाभ्याम्।
प्रहसन् विजयाग्रजोऽपि तेषां स्वपतां दुरममुं निनाय दोर्भ्याम्।।४१।।

गजयोरिव मत्तयोश्चिरं तत् तुमुलं युद्धमभूत् तयोस्तदानीम्।
विरराम निशाऽपि बज्रकल्पो भयवक्षा भुजशब्दशङ्कितेव।।४२।।

उभयोर्भुजपंजरप्रभृते गुरुनिर्दातरवेरजागुरुस्ते।
अथ वीक्ष्य पुरस्थितां हिडिम्बीं मधुरस्निग्धमुदाजहार कुन्ती।।४३।।

---

७. हिडिम्बीम् ?

८. अरेश्चक्रावयवसहस्त्रैः काष्ठैर्ठयते अरषटः सेवछटः इति।

वर्णिनि कासि कस्यहेतोरिह वा तिष्ठसि कानने कठोरे।
अथवा व्यसनं विधातुरेतत् गुणवन्तो गुरुदुःसिनः क्रियन्ते।।४४।।

अथ तामिदमाह सा स्वसाहं निकषापत्ययते-र्हिडम्बनाम्नः।
परिचेतुमिहागतोऽस्मि युष्मान् वचसा तस्य बुभुक्षतो हिडिम्बी।।४५।।

गुरुपत्नि सुतस्य जाग्रतस्ते मदनौपम्यमुदीक्ष्य रामणीयम्।
सुखितेव चिरायितेह साहं तदुपायादशनाय वो हिडिम्बः।।४६।।

तरसा तव नन्दनेन दोर्भ्यां बलिदैतेय इवाच्युतेन बद्ध्वा।
द्युषदामिव दुःसशायिनां वः सुहृदा मे संहृतो बलेन दूरम्।।४७।।

इदमेव निशम्य पाण्डवास्ते सहसोत्थाय ससम्भ्रमार - - - [10]।
- - -[11] वीक्ष्य तयोर्नियुद्धमाराद्विजयो भ्रातरमित्यवोचदुच्चैः।।४८।।

त्यज भीम भयं वयं प्रबुद्धा भविताऽहं भवतोऽस्मि यत्सहायः।
निशितैरिषुभिर्निपातयिष्ये तमिमं दाशरथिर्यथा दशास्यम्।।४९।।

अथ या - - - - - - [12]प्रहितः कालनिकेतनं मयैव।
इति वामभुजोद्धृतं[13] स भीमः शतघाऽभ्रामयदम्बरे हिडिंम्बम्।।५०।

---

९. हिडिम्बो नाम राक्षसः इति।
१०. रबालाः?
११. अथ?
१२. पार्थ मुवाच भीमसेनः?
१३. भुजोद्धतम् ?

न ननाद तदा निशाचरेन्द्रः पवमानात्मज बाहुधुर्ण्यमानः।
तदरण्य निकुजं धु - - - [१४] - तिशब्देन[१५] जगत्त्रयं चकम्पे।।५१।।

पशुमारममारयद्‌जभुजाभ्यां सहसा राक्षसहस्तिनं नृसिंहः।
तरुणारुणमण्डलस्तदानी - मनुरागादिव भानुरुज्जगाम।।५२।।

निकटे नगरीमुदीक्ष्य हृष्टाः प्रययुस्ते सहितास्ततो हिडिम्ब्या।
पथि वीक्ष्य च राक्षसीं जिघांसुः प्रतिषिद्धोऽनिलसुनुरग्रजेन।।५३।।

अनुनाथ्य पृथामथो कथंचिद् दयितं प्राप्य वृकोदरं हिडिम्बी।
चिरमद्रिषु तत्र तत्र रेमे रमणीयेषु सरित्सरोवरेषु।।५४।।

तडिदम्बुधराविव द्युनद्यामथ विद्याधरनागराविवाद्रौ।
अमराविव मेरवे नितम्बे व्यहरेतां द्विरदाविव ह्रदे तौ।।५५।।

सह तेन यदृच्छया ह्रियाति प्रतिमा - - - - पर्णशालाम्।
समयप्रतिपालनार्थमित्थं विहरन्ती सुषुवे घटोत्कचं सा।।५६।।

स च मेघनिभः कृतो मघोना परिमोघीकरणाय कर्णशक्तेः।
भवितव्यमभूदिति प्रयातां जननीमन्वगम - तेन तेषाम्।।५७।।

अथ वर्त्मनि बादरायणेन प्रबलाः सूचितराजनीतयस्ते।
द्विजसद्मन चक्रुरेकचक्रानगरे विप्रपरिच्छदा निवासम्।।५८।।

---

१४. पुंजमान?
१५. प्रतिशब्देन?

विजयेन सहैकदा - - -[१६] ते सति भैक्षाधिगमाय धर्मराजे।
स बकस्य बलिप्रदानवारे विरुदन् वाचमवोचदग्रवर्णः।।५९।।

सफलां सहचारिणीं समानां सुखदुःखेष्वपि सुप्रजां सुवृत्ताम्।
भवतीं नविहातुमुत्सहे त्वां गृहमेधित्वमलं विना गृहिण्या।।६०।।

तनयो विनयोर्जितः?कुलस्य स्थितिकर्त्रेव न शक्यते विमोक्तुम्।
दुहितापिहितापितुर्यदस्यास्तनुजन्माभ्यधिकः सुधाकरेषु।।६१।।

स्वयमेव भवानि हन्तरक्षः पतिभक्ष्यं यदि·न स्थितिस्तदावः।
निपतद्विपदम्बुवारपारे - - -[१७] दप्याकलयामि नावलम्बम्।।६२।।

तमुवाच स धर्मचारिणीं मा कुरु सन्तापमशेषशास्त्रदृश्वन्।
परिवर्तिनि चक्रवद्भवेऽस्मिन् व्यसनं कस्य न जायते हि जन्तोः।।६३।।

हृदयेश यदर्थमीप्सिता - - - - निते सुतावभूताम्।
परिपालय ताविमावशोकः तदहं राक्षसभक्षणं भवामि।।६४।।

त्वहृतेऽहमस्मद्भिरर्थ्यमाना कुलधर्मप्रतिपालनाय नालम्।
कलयन्ति जना वधूमवीरा - मवनीन्यस्तमिवामिषं विहङ्गाः।।६५।।

न च रक्षितुमात्मजां - - -[१८] -- - - णैधनिकैः प्रलोभ्यमाना।
ननु पावित्र्यं निश्चितं भविष्य-त्यपसम्बन्धकलङ्कितं कुलं ते।।६६।।

---

१६. प्रयाते?
१७. कर्त्तैष?
१८. क्वचिदपि?

पितरावबदत् ततस्तनूजा परदेयाऽहमवश्यमेव सा वाम्।
शिशुना सह तिष्ठतं कृतार्था -वहमेवोपगता[१९] भवामि[२०] रक्षः।।६७।।

भविता समयः सुतः स कर्त्ता परलोकङ्गतयोः प्रतर्पणं वाम्।
इति तस्य भविष्यति प्रतीतिः पितृपिण्डानवतं युवामिदानीम्।।६८।

रुदतामवसृज्य वाष्पमेषां तृणमादाय करेऽगृणत् कुमारः।
क्रियते किमु रोदनं भवद्भिः हननीयः स मयामुना तृणेन।।६९।।

पृथयाथ दयार्द्रया स पृष्टः कथय ब्राह्मण किं निमित्तमाधिः।
भवतामनपायिनां चतुर्णां नहि सन्तापकरं किमप्युदीक्षे।।७०।।

इदमाह महीसुरः पुरेऽस्मिन् बकनामा निकषात्मजो नियन्ता।
करमन्यमपास्य नागरेभ्यो नरमेकैकमहर्द्दिद्वं स भुङ्क्ते[२२]।।७१।।

मम तत्करवासरोऽद्य नैःस्वं पुरुषक्रेतुमतो न शक्यतेधन्यः।
कतमोऽस्य भवेद् बलिः चतुर्णामिति नश्चितन्तयतामयं विषादः।।७२।।

तमुवाच ततो युधिष्ठिराम्बा श्वसिहि क्षिप्रमथास्य चिन्ताम्।
मम पंचसुता हि सन्ति तेषां बकधामैकतरो मया प्रहेयः।।७३।।

अतिथेर्वधभागिता भवित्री न धरित्रीसुर तत् कदापि शक्यम्।
निहनिष्यति नूनमात्मजो मे प्रबलोनामन्तरधाम यातुधानम्।।७४।।

---

१९. क्षमोऽहम्?
२०. मेवोपगता?
२१. भवामि?
२२. सभुङ्क्ते?

गृहमेत्य यथाचिरप्रवासी तनुजं प्राप्य यथा नृपोऽनपत्यः।
आकर्ण्य गिरं तथा पृथाया मुदमाविन्दत पाण्डवः सभृत्यः।।७५।।

अथ सायमुपेत्य धर्मराजं[२३] तदभिप्रायविदा कृताभ्यनुज्ञः।
बकस्यनिकेतनं नभस्वत्सुतशार्दूलपतिः शनैर्विवेश।।७६।।

परिपूगकृतानि तत्र भक्ष्याण्युपभोक्तं पवनात्मजे प्रवृत्ते।
अतिदूरनतोन्नताधरोष्ठं क्षुधया तद् गृहमाजगाम रक्षः।।७७।।

समवेक्ष्य रक्षसा सरोषं - - [२४] शः कस्त्वमसीति पृच्छयमानः।
तमदृष्टमिवावधीयं चक्रे प्रहसन् भोजनमेव भीमसेनः।।७८।।

द्विगुणारुणचक्षुषाकराभ्यामधिपृष्ठं स बकेन ताड्यमानः।
न मनागपि भोजनाद् व्यरं - [२५] - - - -[२६] न केसरी बिभेति।।७९।।

समुदीक्ष्य कटाक्षयन् स्मितेन द्रुममुत्पाट्य करे दधानमेनम्।
स कृताशनः[२७] सुखेन भुक्त्वा बकहस्तादवकृष्य वृक्षमादात्।।८०।।

अथनि - - - - कुर्वतोवनं त - द्विलिनोवृक्ष - - - - - व।
अधिचूडमधारि पाणिना स द्रुतमुत्पाट्य बको वृकोदरेण।।८१।।

परिपीड्य स जानुनाधिपृष्ठं कलयन् दक्षिणपाणिनाधिवादम्।
अधरेण दधत्त्रिके प्रसह्य द्विगुणीकृत्य बकं विनिःपिपेक्ष।।८२।।

---

२३. धर्मराजम्?
२४. बहुशः?
२५. व्यरस्त?
२६. मृगधृत्तत्ति?
२७. कृतासनः ?

सहितोऽवरजैरथाग्रजन्मा बकहन्तारमुपेतमभ्यनन्दत्।
अमरैरिव वैनतेय केतुं हृतवेरोचनि बन्धनं महेन्द्रः।।८३।।

द्रोणावमर्दनमथ द्रुपदस्य पुत्रं
याजोपयाजि[२८] मसवह्निभवं निशम्य।
कन्यां च कौरवकुलक्षयकारिणीं ते
वीराबभूवुरिव मर्मणि शल्यविद्धाः।।८४।।

पशुपतिवरादुद्‌भूताया विभावसु-मध्यतो
द्रुपददुहितुः प्रायो यूयं भविष्यथ नायकाः।
व्रजत तदितो व्यासेनैवं समेत्य निवेदिते
मुदितमनसः पांचालानां पुरीमभि ते ययुः ।।८५।।

गङ्गारोधसि भस्मसात् कृतरथादङ्गारवर्णात् पुरो
गान्धर्वास्तमवाप्य दृष्टविजयप्रद्योतितेनाध्वना ।
पांचालस्य पुरीमुपेत्य महिलामङ्गल्य[२९]गीतोज्ज्वला
मध्यूषुर्निशि कुम्भकारभवनं कुन्त्या संम पाण्डवाः ।।८६।।

इति श्री पाण्डवचरिते महाकाव्ये एकचक्रानिवासो नाम तृतीयः सर्ग :

---

२८. माङ्गल्य?

★ उपयाजानुमतो महाराजद्रुपदः तस्यानुजयाजेन सह राजधानीमागत्य यागमकारयत। समाप्ते यागे तस्य फलोपभोक्तुं याजः द्रुपदपत्नीं सौत्रामणिमाहूवयामास परन्तु यदासा बिलम्बमकरोत् तदा ते यागफलमग्नौ न्यक्षियत्। यस्मात् धृष्टद्युम्नो द्रौपदी च बभूवतुः ।। (प्रा० च० कोशे ३०६ पृष्ठेषु)

२९. उपभ्राज?

अथ चतुर्थः सर्गः

मंचाधिरूढमनुजाधिपमण्डलीं ते
पंचातिगूढमथ वाडवचक्रवाले[1]।
तस्थुः स्वयं वरमहीमुपगम्य वीराः
कल्पद्रुमाः प्रमथनादिव पूर्वमब्धौ।।१।।

आचारमङ्गलविधौ विहितेऽङ्गनाभि -
स्तौर्यत्रिके[2]मिलति मूर्च्छति पंचवाद्ये।
कृष्णा विमानचतुरंच तुरङ्गयान -
मध्यास्य मध्यसदसं समुपाससाद।।२।।

श्रीमत्यनङ्गजयमङ्गलरङ्गभूमिः
शृङ्गारयोगिवर-सिद्धिसमाधिवेदी।
सौन्दर्य सारसहकार वसन्तलक्ष्मी -
लावण्यवारिधिनवोदितचन्द्रलेखा।।३।।

पाणिप्रवालधृतचामरमंजरीभि -
रुद्धृत्य कुङ्कुमपरागपरम्पराभिः।
आलीभिरुत्तरलनेत्रमधुवताभि -
र्मुक्तालताभिरभितः सुरभेरिव श्रीः।।४।।

---

१. चक्रवालं तु मण्डलम् (इत्यमरः)
२. तौर्यत्रिकं नृत्यगीतं वाद्यं नाट्यमिदं त्रयम् (इत्यमरः)

आदिकुलकम् -

छायां निदाधहरिणा इव पादपाना-
महनोमुखे मधुकरा इव पद्मराजीम् ।
पांचालराजतनुजां मनुजाधिपाना -
मीयुः स्वयंवरण दौ - - - - ।।५।।

(विशतिः एकविंशतिश्च संख्ये न स्तः)

दोष्कुण्डलिप्रबलकुण्डलितप्रचण्ड-
कोदण्डमण्डलगलद्धनबाणवर्षै।।६।।

क्रीडन्मरालगमने समराटवीषु
वीनोऽयमङ्घ्रिभरभङ्गुरितोरगेन्द्रः।
उच्छृङ्खलोन्मदकरीव करेण रम्भा -
स्तम्भानिवा - - - - [3] विदिक्ष्वरातीन्।।७।।

तत् कर्त्तुमित्यपरभूमिभृतां सभाया -
मुत्थातुमप्रतिमया न शशाक शल्यः ।
प्रायो महाकुलवतां पुरतोजनानां
प्रागल्भ्यमेति गुणवानपि नाकुलीनः।।८।।

नीलारविन्दनद - - - याज्ञसेनी -
मूचे विराटपुरतः स्तुतिपादिका सा।
मत्स्याधिराजमवधारय राजपुत्रि
न क्षत्रियः क्षितितलेऽस्य समानधर्मा।।९।।

---

३. नामथ?

यद्येष भेत्स्यति शख्यमदः शरण्योऽ
रण्योपभोगशबरीकृतवैरिवर्गः।
भर्त्रा भविष्यसि तदा द्युतिमत्यनेन
चूतद्रुमेण मिलितेव वसन्तलक्ष्मीः।।१०।।

एतेन तेन शमिताः समिति प्रतीपा
दीपायमानमहसा भुवनैकभित्तौ।
के के धनैरतिथयो न कृता कृतार्थाः
कल्पद्रुमं विहसता कर-पल्लवेन।।११।।

एतेन ते भवतु भीरु करोद कन्या
क्रीडाधिवारि करिणेव चिरं करेणोः।
उद्यानवेदिमधिवेदि विलग्नमध्ये
पुरुषैः करोतु पुनरेष तव प्रसाद्याः।।१२।।

सा बन्दिनीस्तुतिवचोभिरनुत्थितस्य
स्मित्वा विराटनृपतेरकृत प्रणामम्[४]।
पांचालिका व्यतिकरेण जवाभियोगे
नूनं ययावनतिं नवयौवनश्रीः।।१३।।

सा मागधी मगधराजमथोपनीय
पांचालराजतनयामिदमाबभाषे।
द्वैमातुरो यमवनीपतिचक्रवर्ती
लक्ष्यं न भेत्स्यति तदा सुलभो न भर्ता।।१४।।

---

४. प्रणामा?

मध्यानृते मगधराजमगाधसत्त्वं
दोर्भ्यां न चेत् सरभसं परिरम्भसे त्वम्।
अस्योरसो विपुलता विफला तदानी -
मुतुङ्गिमा बत वृथा स्तनयोस्तवापि।।१५।।

युद्धे विजित्य नृपतीनयमेकवीरः
कल्याणि कारयति सद्मनि भृत्यचर्याम्।
एतस्य चेद्भवसि हस्तगता तदानीं
सम्वाहयन्तु चरणौ वत राजपत्न्यः।।१६।।

द्रष्टुं महाहवममुष्य सहाङ्गनाभि -
र्वैमानिका गगनमेत्य कुतूहलेन।
अस्मिन्नथो ज्यानति दुःसहबाणवर्षे
व्यग्रा भवन्ति कतिधा न पलायमानाः[५]।।१७।।

अपूर्णोऽयं सर्गः समाप्तः । कतिपयानि पत्राणि न विद्यन्ते।

---

५. पलायमानाः इति सम्भाव्यते।

अथ पंचमः सर्गः

(अपूर्णोऽयमपि सर्गः । प्रारम्भस्य कतिपये श्लोका न सन्ति।)

- - - - - योधराधिपश्चित्रनिर्मित इव व क्षणं[1]बभौ।
धर्मसूनुमभणच्च शोभनं लग्नमेतदधिकं न विद्यते।
शाधि तत् त्वमधुनैव धार्मिको द्रोपदीपरिणयः प्रवर्तताम्।।१।।

अब्रवीदथ नृपं युधिष्ठिरो यत् तवाभिलषितं ममापि तत्।
किन्तु मातृवचसा भवत्सुतां सर्व एव वयमुद्वहामहे।।२।।

पाण्डवं पुनरुवाच पार्षदो धर्मराज किमिदं चिकीर्षसि।
लोकवेदविषये कुलस्त्रिया न श्रुता क्वचिदनेकभर्तृता।।३।।

मातृवाक्यपरिपालनाय यत् पुण्यमेतदिति कर्तुमिच्छसि।
लोकवेदविपरीतवार्तया तर्कयिष्यति जनस्तदन्यथा।।४।।

धर्मनन्दनमितीदमालपन्-नैव वीक्ष्य समुपस्थितं पुरः।
पाण्डवैः सह सहर्षमाराद् बादरायणमपूपुजन्नृपः।।५।।

यज्ञसेननमथ विज्ञसम्मतं वक्तुमेतदुपचक्रमे मुनिः।
आगतोऽस्मि नृप संशयन्तव-च्छेत्तुमत्र दुहितुः समर्पणे।।६।।

---

१. तत्क्षणम्?

★जज्ञिरे जगति पंचवासवाः पूर्वपुरुषगिरात्र पाण्डवाः।
श्रीरसावपि भवत्सुताभवत् भर्गदत्तवर-पंचभर्तृका।।७।।

प्रत्ययो भवति चेन्न चेतसि क्षोणियाल तदितो निभालय।
इत्युदीयं मुनिनाप्पिताजलि स्तत्तथैव सकलन्ददर्श सः।।८।।

ते प्रतीत हृदये महीपतौ पुष्यवर्तिनि निशाकरे ततः।
व्यास-धौम्यवचसा यथाविधि द्रौपदीमुदवहन् कुरूद्वहः।।९।।

कुङ्कृमारुण-विवाहकोतुकाऽन्योऽन्यसम्वलितपाणिपल्लवैः।
पंचभिः परिभृता रराज सा कल्पवल्लिरमरद्रुमैरिव।।१०।।

काम‌पि द्रुपदनन्दिनी दधौ जीवितैस्तनुरिवाभिरामताम्।
पंचभिः कुसुमकोमलैः शरैश्चापयष्टिरिव पुष्पधन्वनः।।११।।

युग्मकम् :–

पाण्डवैरथ निमन्त्रितौ बलश्रीधरौ कुकुरसेनया सह।
भोजनं द्रुपदधाम्नि चक्रतुः किं न कारयति सत्कुटुम्बिता।।१२।।

यज्ञसेन मिलितान् यशस्विनो यादवेन्द्रसुहृदो निशम्य तान्।
द्रोणभीष्मकृपमन्त्रितो नृपः पाण्डवानयनहेतवे ततः।।१३।।

विग्रग्रहिल एव सौबल ब्रध्नसूनुसहिते सुयोधने।
प्राहिणोद्विदुरमम्बिकासुतो मन्त्रिणां भवति नैकवाक्यता।।१४।।

★ पंचेन्द्रोपख्यानम् (म.भा.आ. पर्वणि)

२. पुरन्दरश्रीः पुरमुत्पताकं प्रविष्य पौरैरभिनयन्यमानः (रघु. २ सर्गे)

युग्मकम् –

जग्मुरास विदुरोपमन्त्रिता-स्ते हरिद्रुपरसम्मतास्ततः।
¹कृष्णया सह पुरन्ध्रिलोचने-रुत्पताकमिव हस्तिनापुरम्।।१५।।

तेषु तत्र निवसत्सु दोषदृक् पूर्ववत् पुनरभृत् सुयोधनः।
लक्षशोऽपि विफलोद्यमः खलो नोज्झति व्यसनमुज्झितत्रपः।।१६।।

आज्ञया शकुनिकर्णसूनुभिः प्रेरितस्य धृतराष्ट्रभूपतेः।
पाण्डवाः परिकरेण खाण्डवप्रस्थपत्तनमथ प्रतस्थिरे।।१७।।

व्यासधौम्यकृतवांस्तुमङ्गलं संविभक्तनरनाथमण्डलम्।
दत्तदृष्टिसुरवैरिणा पुरं तत्र चारु निरमाय कारुभिः।।१८।।

तत्र नाक इव पाकशासनं धर्मराजमधिरोप्य माधवः।
तान् निवर्त्य रुदतो रुदन्नथ द्वारकां यदुभिरावृतो ययौ।।१९।।

कीर्तयो वितरणैरिव श्रियः साहसैरिव धियो धनैरिव।
तत्र पाण्डुजनुजन्मनां गुणे-रन्वहं ववृधिरे बहुप्रजाः।।२०।।

विक्रमाक्रमित चक्रवर्तिनः पालितामनुनयेन ते मिथः।
द्रोपदीमिव परस्परस्फुरत् प्रीतयां बुभुजिरे नृपश्रियम्।।२१।।

एत्य पाण्डुतनयानथैकदा बल्लकीरवविनिवेदितागमः।
तैर्यथाविधि समर्चयार्चितो वक्तुमारभत नारदो मुनिः।।२२।।

पाण्डवाः समयमग्रतो मम द्रौपदीं प्रतिनिबद्धमर्हता।
स्त्रीनिमित्तमितरेतरेण वो मा विरुद्धमपिमानसं भवेत्।।२३।।

प्रीतिरस्ति सुदृढ़ा परस्परं नैति नो वचसि मुञ्चतादरम्।
दारयन्ति सहजान्[३] सुहज्जनान् द्वारशब्दमिति बिभ्रति स्त्रियः।।२४।।

निर्जितत्रिजगतांर्वराद्विधे-र्द्विध्वयोरिव तदेकजीवयोः।
आसहेत तदुपसुन्दंसुन्दयोः[४] द्राक् परस्परवधे तिलोत्तमा।।२५।।

एकसङ्गतमिदं विलोकते यः कलत्रमपरः स वत्सरान्।
द्वादश क्षिपतु तीर्थयात्रया सोऽयमस्तु समयो भवादृशाम्।।२६।।

नारदस्य वचसा परस्परं वीक्ष्य ते प्रमुदिताः शुभंयवः।
एवमस्त्विति तथैव चक्रिरे नाप्तवाचि हि विचारणोचिता।।२७।।

स्वर्गं ते[५] सुरमुनावथैकदा तस्करापह्रियमाण गोधनः।
पाण्डवाः कुरुत विप्रपालनं कश्चिदेवमबदत् निशि द्विजः।।२८।।

आर्त्तनादमवकण्यं फाल्गुनो[६] ब्राह्मणस्य सहसा समुत्थितः।
क्षात्रधर्ममनुचिन्त्य ब्यायुधं धर्मसुनुगृहवर्ति विव्यथे।।२९।।

दुःखदा द्विजधनक्षतिः पुरो राज्यहानिरपि शर्मणो मम।
इत्युपेत्य गृहमग्रजन्मनो जिष्णुचक्रमुपगृह्य निर्ययो।।३०।।

स प्रमथ्य तरसैव तस्करान् ब्राह्मणाय च समर्थ्य गोधनम्।
स्वस्तिवाचमभिनन्द्य तत्कृतामाजगाम रजनिक्षये गृहम्।।३१।।

---

३. सहजान्?
४. तदुपसुन्द?
५. स्वर्गति?
६. फाल्गुनो?

ज्यायसि द्रुपदजासमन्विते नागसेऽनुगमनं यवीयसः।
मा कुरुश्रममजातशत्रुणा वारितोऽपि मुहुरित्थमर्जुनः।।३२।।

धर्मराजभिवाद्य धर्मविद् ब्रह्मच्चर्यमथ सम्यगग्रहीत्।
सज्जना हि विजहन्त्यसूनपि प्रस्खलन्ति न तु धर्मवर्त्मनः।।३३।।

सम्भ्रमन्नखिल-तीर्थमश्रमो यात्रिकैश्च पथिकैश्च सङ्गतः।
तेषु तेषु कृतमात्मनस्तपः संस्मरन्नभवदुन्मना नरः।।३४।।

कन्यकां कनखले[७] फणीशितुः कामबाण वशगां विभाव्य च।
ब्रह्मचर्यमवधार्य चात्मनः सोऽप्रसक्तमिव तामरीरमत्।।३५।।

प्राप पाण्डुतनयादुलूपिका विश्रुतं सुतमिरावदाख्यया।
यः समग्रमधिजग्मिवान् धनुर्वेदमर्जुनसमानविक्रमः।।३६।।

चैत्रमासि मणिपूरपत्तने चित्रवाहननरेन्द्रनन्दिनीम्।
स व्यवस्थमुपगम्य पाण्डवो बभ्रुवाहनमजीजनत् सुतम्।।३७।।

यात्रिकैरपि निवारितोऽविशत् पंचतीर्थमभिषेक्तु? मर्जुनः।
उत्तरन्नथपदावलम्बिनं ग्राहमप्युदहरन् महाबलः।।३८।।

ग्राहरूपमपहाय सा किल द्रागभूदमरवारनागरी।
विस्मयस्तिमितनेत्रमर्जुनं वीक्ष्य वक्तुमुपचक्रमे ततः।।३९।।

एकदा मधुवने मधूत्सवे पंचपंचशरमाहिता वयम्।
ब्राह्मणस्य कुपितस्य शापतो ग्राहतामुपगताः सुराङ्गनाः।।४०।।

---

७. तीर्थ स्थानुसनाम्

शापदायिनमथ द्विजं वयं काकुपूर्वमभिवाद्य कातराः।
तं प्रसादमसकृद्ध्ययाचिम ब्राह्मणोऽथ कृपया जगाद नः।।४१।।

उद्धरिष्यति नरो यदि ह्रदात् कश्चिदाक्रमणविक्रमेण वः।
ग्राहरूपमपहाय हारिणीं यूयमाप्स्यथ तदा निजां श्रियम्।।४२।।

युष्मदागमनशंसिनो गिरा नारदस्य नदमाश्रिता वयम्।
तत्र मामुदहरः कृपानिधे ता अपि प्रियसखीः समुद्धर।।४३।।

तत् कृताभिरथ काकुभिर्हस-नुज्जहार विजयः पृथक्-पृथक्।
ता अपि त्रिदशवारयोश्रितः स्वरूपमुपगम्यरेजिरे।।४४।।

तं यथावदभिवद्य तास्वथ प्रस्थितासु कुतुकी पृथासुतः।
पश्चिमस्य सविधे पयोनिधेस्तदैवोक्षत मुदा तपोवनम्।।४५।।

मन्द-मन्द लहरीसमीरणा स्निग्धकोमलतमालमालया।
वेलयेव बलवैरिनन्दनः स प्रभासमभिजग्निवानथ।।४६।।

अभ्युपेत्य यदुभिस्समं तदा स्वागतेन परिरम्य निर्भरम्।
प्राक्तनं सहचरं चतुर्भुजः तन्निनाय निजकेलिपर्वतम्।।४७।।

प्रीतये यदुपतेरहर्निशं तानि तानि कुतुकानि सर्वतः[८]।
तेन रैवतक एव तिष्ठता यापनीय समयोऽथ यापितः।।४८।।

एकदा स विचरन् वनस्थलीः शौरिणा सह समापितव्रतः।
तां विलोक्य वसुदेवन्दिनीं द्रागभून्मदनबाणगोचरः।।४९।।

---

८. कुर्वतः?

तं विहस्य मधुसूदनोऽब्रवीत् ब्रह्मचारिणि न किंचिदद्भुतम्।
अर्द्धमङ्गमहरन्महेशितुः योगिनोऽपि गिरिराजनन्दिनी।।५०।।

अर्जुनोऽपि निजगाद माधवं स्त्रीः स्वयं रमयते परः शताः।
सेवकांस्तु वनवासचर्यया वंचयत्यहह कोऽपि सत्प्रभुः।।५१।।

इङ्गितैरथ रथाङ्गिनोरथं स्वं[६] मनोरथपथं महारथः।
कार्यसिद्धिमधिरोप्य माधवीं सारणस्य भगिनीं जहार सः।।५२।।

तन्निशम्य यदवो युयुत्सवः सर्व एव सहसोढकंचुकाः।
भीषणभ्रुकुटि[?] रक्तचक्षुषः सर्वतः सदसमासदन्नथ।।५३।।

यादवेषु निगदत्सु सज्जतां सज्जतामिति जगाद लाङ्गली।
बल्गितानि विफलंतानि वृष्णयः कृष्ण एव यदि मौनमाश्रितः।।५४।।

ज्ञायतेऽभिलषितं न शार्ङ्गिणः तेन जीवति धनंजयः क्षणम्।
याच्चिकीर्षति न कंसकर्षणम् तन्न कर्त्तुममरा अपि क्षमाः।।५५।।

यद्यसावनुमतिं ददाति मे तत् करोमि धरणीमकौरवम्।
लाङ्गले तु रणरङ्गमङ्गले किं न भूतबलिमर्जुनं ददे।।५६।।

वक्तुमेनमुपचक्रमे हरिः कीर्तिस्तरेव विजयेन नः कृता।
दुर्लभां यदनुजां विभाव्य नो लौल्यमाप भरतेन्द्रनन्दनः।।५७।।

तै समीरणरया हयाः स च स्यन्दनस्तदी पि कार्मुकं मम।
साहसैकरसमानसं च तं कः सहेत युधि सव्यसाचिनम्।।५८।।

---

६. स्वम्?

आततज्यधनुषः किरीटिनः सम्मताः समिति के सुरासुराः।
योद्धुमध्यवसिताः कुरूद्वहं युध्यताहमपि वः सहानुगः।।५९।।

सम्मतं मम तु सामपूर्वकं दीयते यदनुजा किरीटिने।
श्लाघ्य एव भुवि तादृशोवरः संशयस्तु समरे जयम्प्रति।।६०।।

कुन्तिभोजदुहितुस्तमात्मजं पाण्डुनन्दनमुदारविक्रमम्।
को न मानयति सव्यसाचिनं मत्सरो हि गुणवत्सु नार्हति।।६१।।

ते तथेति वचसा मुरद्विषः सान्त्वनेन विनिवर्त्य पाण्डवम्।
सन्मुहूर्त्तमनुचिन्त्य तत्क्षणादुद्यमं परिणयाय चक्रिरे।।६२।।

सा निशानगरलोकयात्रया द्योतमानमणिदीपमालया।
नागरीनयनभङ्गिचङ्गिम प्रेर्यमाणमुखचन्द्रिका बभौ।।६३।।

शूर ---- ----

।। अपूर्णोऽयं पंचमः सर्गः समाप्तः ।।

षष्ठः सर्गः

स्पृहणीयचन्दनविलेपनया दिवसावसानहृदयङ्गमया।
शुचिसम्पदा पदमकारि भुवि प्रियसद्गमनीव नवनायिकया।।१।।

शिखरस्फुरद्दिनकरद्युतयो हुतवाहहेतय इवोल्लसिताः।
अधिजग्मिरे न पथिकैरबलां हृदये न गोपयितुमाकुलितैः।।२।।

मलिनं रजोभिरुपधाय भुजामधिवर्त्म भूरुहतले शयितम्।
अवलोक्य वर्त्मनिकुमुद दृशः पथिकाङ्गनाः किमपि दैन्यमगुः।।३।।

वपुषोऽभवत् प्रतिकृतिर्नव हि विजहुर्न पर्वतदरीर्मरुतः।
मिहिरोऽपि मध्यदिवसद्युनदी-मवलम्ब्य नातपभयादचलत्।।४।।

पथि सुप्तपान्थमधि वृक्षतलं स कुटुमिवनिकूटनिषण्णमृगम्।
उपशान्तितत्परसमस्तजनं शुचिना तपोवनमकारि भुवम्।।५।।

हरिणाश्चिरेण पुरपुष्करिणी सलिलं निपीयसुखमापुरहः।
तदलीकचर्णवसलीलमुखाः कदलीवने मुकुलितार्द्धदृशः।।६।।

अशनीकृत कृतनिमज्जनया कुसुमावलिग्रथितकुन्तलया।
कुचकुम्भपिजरितकुङ्कुमया कुसुमायुधः कुवलयेक्षणया।।७।।

मृगतृष्णया जगृहिरे हरितः सरितः परामुपययुः कृशताम्।
बिभिदे भुवा न पवनेन वरे मिहिरे करालकरमुद्गिरति।।८।।

क्षणदास्तुषार किरणाभरणा हरिणेक्षणा मृगमदावरणाः।
शयनं शिरीषकुसुमास्तरणं त्रयमास पुष्पधनुषः शरणम्।।९।।

अभितो वृति[1] प्रतिनिरुद्धरयामुपकूल कल्पितदुकूलगृहाम्।
अथ पाण्डवा यदुपतोर्वचनादबगाहनाय यमुनामगमन्।।१०।।

तरुणीजनस्य चलतो न चिरादरुणातपादरुणमास मुखम्।
गगनाय गन्तुमनुरागभरादभितः सरोरुहमिवाविरभूत्।।११।।

प्रतिचुम्ब्यधर्मकरन्दलचं भ्रमरैरिवालकभरैरभितः।
अपि चन्द्रकान्तमबलावदनं जितपद्मरागपरमागमभूत्।।१२।।

स्फुरितप्रभाकरकरप्रकैः श्रमशीकरैरथ कुरङ्गदृशः।
गजमौक्तिकस्तबकभाजइव ध्वजवल्लयो मनसिजस्य बभुः।।१३।।

अलिकेऽङ्कुरः किसलयं नयने नसि कुड्मलं कुसुममोष्ठपुटे।
हृदि मंजरी स्तनभुवि स्तबकः श्रमवारि वारिजदृशामभवत्।।१४।

इतरेतरं भुजलतेमिलिते मृगदोलिते मृगदृशां बभूवतुः।
मणिदालितोत्सवमधत्त मुदा मदनो विजेतुमहिमांशुमिव।।१५।।

घनपक्ष्मभारपरिमन्ददृशः कबरीकलापनीमतासंभुवः।
स्खलदङ्घ्रयः स्तननितम्बभारात् सुचिरादवापुरबला रविजाम्।।१६।।

तपति प्रचण्डमहसि प्रसभं भुवमाश्रितेव तमसः पटली।
जलताङ्गता जलदराजिरिव द्रवितेन्द्रनीलनगभूमिरिव।।१७।।

---

१. वेरा वृतौ (इत्यमरः)

वलदुष्मभिः फणभृतां श्वसिते रसिताऽथ मग्नगजदानजलैः।
उपशान्तकर्महुतभुक्मलिना यमुनाजलेन न[२] ददृशे पुरतः।।१८।।

युग्मकम् –

श्रममाजहार विहरल्लहरी सहसा सहस्रमहसोदुहिता।
शरणागतेषु किल शान्तिकृतामवलोक एव परितापहरः।।१९।।

स्तनमण्डलैरुपरिदत्तकरैः सलिलप्रवेशसमये व्यरुवन्।
जलकेलिमङ्गलपुरः कलशैः कमलावृतैरिव कुरङ्गदृशः।।२०।।

उपकण्ठमग्रवपुषः पयसि स्तिमितेक्षणाः क्षणमरालदृशः।
अवतीस्तिरं विगतभीति चिरम् वदनारविन्दविलसद्भ्रमराः।।२१।।

परिदोलमान कुचकुम्भभर प्लवमान कल्पवपुषः वनिताः।
षिचुः परस्परकफोणितलव्यतिषिक्तपाणिभिरुदस्तजलैः।।२२।

स्तनयोः श्रियं विनमदुन्नमतारलोक्य वीबिचषु चकोरदृश।
यमुनां रथाङ्गमिथुनानि जहुः अपिना हि नास्यमधिकस्य पुरः?।।२३।।

अथ सिच्यमानतनुरेकवधूरभितः सखीभिरपि वारिभरैः।
विनताननेन जलमुक्षिपती परितश्चचाल न तु भङ्गमदात्।।२४।।

जलमग्नया प्रियतमस्य जलान्तरितस्य तव परिरम्भरसः।
प्रकटीकृतः सरसभसोत्थितया विलसत् कपोलपुलकाङ्कुरया।।२५।।

---

२. न इत्यधिकः पाठः।

परिरभ्य कश्चन नवोढ़बधूं विनयन्नगाधजलमक्रमतः।
स तयाधिकश्च दृढ़बद्धभुजो भ्रमति स्म स्मितमुखः कुतुकी।।२६।।

परा[3] जलान्तरित एव पतिः कुचकुम्भयोरुपरि दत्तकरः।
सभयप्रकम्पमभिनम्र[4]मुखी किंमिदं ससम्भ्रममपृच्छदिति।।२७।।

अवधानपूर्वसमयाभिनयं प्रहरन्तमुत्पलदलैरसकृत्।
अपराजधान दरसम्वलितैः स्मितकोमल प्रियमपाङ्गलवैः।।२८।।

दयितेन संकुचदपाङ्गलवं कररुद्धमम्बुमजमचुम्बि मुहुः।
असितभुवो लसितसीतकृतया परिप्रपथे वदन-चन्द्रिकया।।२९।।

नखरेण लेखयति जीवपतौ पुरतः सरोजमुकुलं स्वतनोः।
पुलकाञ्चिता स्तनमहाकलशी कलशीतकृताननविधौः शुशुभे।।३०।।

भयभावनैकनिपूणेऽपरया दयिते समीपमवलोक्यति।
रमणीयता भयससम्भ्रमया स चमत्कृतेऽजनि चमत्कृतयां।।३१।।

मृगलोचना मृदुमणालिकया स्पृशति प्रिये निर्भ्रान्तमूरुयुगम्।
अभिविद्यती किमपि विभ्रमवत् सुभगाकृतिः प्रकृतिभीरुभूत्।।३२।।

अपरेण गूढमपनीय पुरो क्रियमाणमज्जमवचेतुमनाः।
रभसाद् गभीरमभिसृत्य पयः त्वरितोत्तरीय तरला जहसे।।३३।।

---

३. अपराम्?
४. नक्रस्तु कुम्भीरः (इत्यमरः)

लहरीभिरुत्तरलिते पयसि स्फुरदस्फुरत् सहजं गौरवधूः।
तुहिनेतरांशदुहिता व्यहसी दचिरप्रभारुचिरम्बुधरम्।।३४।।

सुमुहुर्भुजालहरिदुर्ललिते स्फुरितोत्तराधरदले सुदृशः।
सरितो विलोलदलिकभ्रमरे स्मरतान्त्रिकावदनवारिरुहे।।३५।।

अरुणी बभूव सलिलं तरुणी कुचकुम्भकुङ्कुमैरपि किमेतदहो।
अनुरागमागमयति प्रमदा रसिकं स्मृतैव किमुसङ्गमिता।।३६।।

तड़ितो बलाहकइवोत्तरला दिवि तारका निचिड़भास[५] इव।
नवकज्जलद्युतिकलिन्दभुवः सलिले बभुः शफरलोलदृशः।।३७।।

सुदृशः सरोरुहवने वदनं विनिरुपयन्नपि चिरं निपुणः।
न तदा भविष्यदवगन्तुमलं पिशुनो यदि स्मितलवो न भवेत्।।३८।।

परिणाहसीम्नि कुचकुड्मलयोः कृतकृत्यतामुपनयन्नयने।
अभिषेचनीयमपि जलं न चिरादसिचन्न कश्चिदचिरोढबधूम्।।३९।।

क्वरीपरीतवदनामपरः स्तनयोः स्पृशन्निव करेण शनैः।
उदकं विकीर्य कररुद्धगलत् सचयादिज्वरादसिचत् प्रमदाम्।।४०।।

बलवदुत्तरङ्गतरलानि मुहुः कमलानि कोमलतनूवदनैः।
अपि निर्जितानि परितो ननृतुर्विमलात्मनामनुचिता हि शुचः।।४१।।

स्तनसीम्नि दत्तदृशि यूनि पुरो यमुनासखीव शतपत्रदृशः।
च्युतमुत्तरीयमुरसो लहरी भुजया पुनः पुनरुपानयत्।।४२।।

---

५. निविड?

सुदृशामुदीक्ष्य वदनं त्रपया तरलोर्म्मिलानिनि ममज्ज जले।
पुनरुन्ममज्ज कमलं कुतुका - दवलोकनाय जलकेलिविधौ।।४३।।

स्तिमिताम्बरास्तरुणरागदृशो विशदाधरा गलितमूर्ध्वरुहः।
शयनादिव प्रणयिनामलसा यमुनाजलादुदतरन्नबलाः।।४४।।

अधिकश्चकम्प वलदम्बुपुरः स्तनकुम्भयोः तदवनाभिहृदे।
जधौनस्थलेऽथ पदपल्लवयोः विज कथंकथमपि प्रमदा।।४५।।

नमितभुवस्तिमितचोलतया स्फुटतत्तदङ्गरमणीयतराः।
विदधुर्नवा इव मणिप्रतिमा नयनोत्सवं किमपि कौतुकिनाम्।।४६।।

कमलानना स्फुटमबालकच-भ्रमराः मरालगतयः सरसाः।
शफरीदृशो मृदुमृणालभुजाः श्रियमाहरन्त सरितां महिलाः।।४७।।

अतिशीतशीत्कृतलसऽद्युतयोद्-धरपल्लवाः शुशुभिरे सुदृशाम्।
भुजमूलमुल्लसदवेक्ष्य पुरः प्रणयं विवक्षव इवाभिमते।।४८।।

किमनावृतं किमथ सावरणं निरचायि नेति निपुणेन वपुः।
मिलितार्द्धसूक्ष्मसिंचयं रुचिभिः स्फुरिताभिरावृतमरालदृशाम्।।४६।।

स्मरतापि तं तदनुद्योतमथ प्रतिमार्जुनादनुकृताभरणम्।
वनिताजनस्य कनकप्रतिमा सुभगं वपुः किमपि कान्तमभूत्।।५०।।

सुदृशामनाभरणमेव वपुः हृदयं जहार परिहासवताम्।
क्रियमाणभूषणभरं तदहो भरमेव केवलमधारयत्।।५१।।

चलितासु कामललितासु ततः सरिताऽभवत् सपदि मन्दरुचिः।
अथ सानुरागसुभगामपरा-मवलम्बितुं दिशमभूत्तरलः[६]।।५२।।

मधुसूदनेन सह माधवनो नवपाटलासुरभिगन्धवहे।
मधुरैरुपान्ततरुभिः सुभगे यमुनासमीपविपिने व्यचरत्।।५३।।

नरदेवयोर्नवतमालमयं यमुनावनान्तमवलोकयतोः।
प्रतिबिम्बिता बदरिकातुलसीफलसीधुमत्तमधुपा मनसि।।५४।।

स्मरणेन तत्र चरितस्य पुरा तपसः पुराणमुनिमुन्मसम्।
जननान्तरानु[७] चरमागमयन्-प्रकृतिं जगादमुरजिद्विजयम्।।५५।।

इह जन्तवो जगति सन्ति न ते नहि यत् तनुष्ववतरन्ति सुराः।
वितृणोति तान् परमकारुणिकानुपकारसुन्दरमुदारयशः।।५६।।

अवसादनाय लसतामसतामवसीदतां च भरणाय सताम्।
अचतीर्य कीर्तिरसिकेरमरैः अबलो न किं किमुररीक्रियते।।५७।।

जगतामलस्य करणीयतरं रचयन्ति कर्म यदमी बहुशः।
अतएव देवजनुषोमनुजा-ननुजानते जगति तान् सुधियः।।५८।।

यदि मानसे निरुपधिः करुणा यदि कीर्त्तयः कृति चमत्कृतयः।
बहु मन्महे जगति जन्म तदा विपरीतमेव विपरीतमितः।।५९।।

---

६. तरला
७. जननान्तराय?

इति वासुदेववचनादभवत् सुमना हि तं मृदनावरजः।
भवकातरः परमकारुणिका-दधिगम्य तत्वमुपदेशमिव।।६०।।

कलिन्दजा-कूल-कदम्ब-मूले शीतेन कूलेन समीरणेन।
नवप्रवालैर्विरचय्य शय्यां पूर्वावृषी - - - - - - - ।।६१।।

अपूर्णोऽयं सर्गः

सप्तमः सर्गः

अपूर्णस्तावत् अयमपि सर्गः।

\- - - - - - - - - - - - पि सव्यापसव्यं मुहुराचकर्ष।।१२।।

गाण्डीवकोदण्डमकाण्ड एव स पाण्डवः कुण्डलितं विधाय।
उल्लास-फुल्लानन-पुण्डरीकः संयोद्धुमाखण्डल-माचकांक्ष[१]।।१३।।

तथा मुकुन्दस्य मनः प्रसादो गाण्डीवविस्फारशस्तथाऽभूत्।
तथा च केतोः कपिकण्ठनादः पाणौ यथा खाण्डवदाहकीर्त्तिः।।१४।।

कुन्तीसुतो युद्धकुतूहलान्वी कंसद्विषो दुर्ल्ललितः स भक्त्या।
तृणायमानं जगदेव जानन्नथो बभाषे भगवन्तमग्निम्।।१५।।

अद्याहमेतस्य हरेस्सहायः शक्नोमि जेतुं जगदेव देव।
न दुर्ज्जयः तक्षकपक्षपाती मया स युद्ध्यन्नपि वज्रपाणिः।।१६।।

तत् त्वं निजेनैव महा[२] महिम्ना सज्जायसे पावकपूर्णकामः।
अद्याहमेकेन सहाऽच्युतेन जगन्ति जेता किमुतैकमिन्द्रम्।।१७।।

संकल्पसिद्धेरथ पारदृश्वा वैश्वानरः खाण्डवमाविवेश।
इतस्ततो वारितवन्यजन्तू पूर्वावृषीरभ्रमतां[३] रथेन।।१८।।

---

१. माचकांक्ष?
२. न किम् ?
३. रभ्रमताम्?

अरण्यमासाद्य हिरण्यरेताः समन्ततोऽदीप्यत सद्य एव।
चिराद् विरुद्धाः पुनरात्मलाभे तेजस्विनः तीव्रतरा भवन्ति।।१९।।

तडिद्भिरम्भोद इवावनद्धो विद्योल्लसद्धातुरिव प्रवृद्धः।
ज्वालामयी व्योमनि धूमराजिराचक्रमे तत्क्षणमक्रमेण।।२०।।

हविर्भुजः प्रज्वलतो वनान्ते कीलाकलापैः प्रलयाग्नि-बुद्ध्या।
ब्रह्मासपर्योस्तसमाधिबन्धश्चक्षूंषि चिक्षेप हरिन्मुखेषु।।२१।।

ज्वालाभिया भोगवतीभुजङ्गा वैमानिकाः व्योमनदीमविक्षुः।
करैर्मुहुः शीकरमाकिरन्तश्चीत्कारमाणा[४] करिणोऽपि चक्रुः।।२२।।

समुद्रमुत्सार्य समुत्थितोऽयं सहंर्तुकामः किमु बाडवाग्निः।
अभूदकस्मादभि-दीप्यमानः शङ्कापदं कस्य न हव्यवाहः।।२३।।

विहायसि प्रेक्ष्य विहङ्गयूथं पलायमानं परितः पृषत्कैः।
अपातयत् पावक एव पार्थः कृतो हि रक्षापदमापदश्चेत्।।२४।।

वृका निपेतुः प्रथमं वराहास्ततो मृगेभ्यः परमृक्षभल्लाः।
शार्दूलखड्गिद्विपदाश्चपश्चादनन्तरं दुर्बलमेव देवम्।।२५।।

उड्डीयमानं शिखया सहैव गाण्डीवधन्वा तृणमप्यलक्ष्यम्।
शरप्रतानैः शतशौनिकृत्तं निपातयामास कृपीटयोनो।।२६।।

स पाण्डवः खाण्डवदाहकाले किं विश्वतो राहुरहो बभूव।
तदिङ्गितेन स्वयमेव किं वा नाराचधारा धनुषोनिरीयुः[५]।।२७।।

---

४. माकिरन्तः?

५. निरीयुः?

हौताशलीलां निचयः शिखानामसृग्भरे प्राणभृतां पयोधौ।
आलेलिहानो नवनीतकुल्या तुल्याभिमानः क्षणमात्रमासीत्।।२८।।

अभ्युत्थितो[६] गह्वरतः सगर्वं लाङ्गूलमुल्लास्य[७] जवादुपेतः।
भूयश्चपेटाहतकृष्णवर्त्मा व्याघ्रो व्यरंसीत् सह विक्रमेण।।२९।।

उत्पुच्छमास्ते हि महीरुहाव्राश्चपेट निर्धूतशिषा[८] सगर्वम्।
धावन्तएवाग्निषु पुण्डरीकाः पराक्रमेणैव सहान्तमीयुः।।३०।।

स्लिष्टश्चपेटैरपि[९] चर्वितोऽपि शार्दूलयूथेन सशाम[१०] नाग्निः।
वक्रे विधातर्यथवा भवन्ति फलाय नालं शतमप्युपायाः।।३१।।

समूलमुर्वीरुहमुद्धरन्तो दन्तेर्निहत्य क्षितिमुत्खनन्तः।
पेतुः किरन्तः करशीकरौघं कीलासु चीत्कारकृतः करीन्द्राः।।३२।।

सन्तापमन्तर्विनिहन्तुकामश्छायां निजामेव किमु प्रवेष्टुम्।
आरक्तनेत्रो विधुवन् विषाणे[११] बभ्राम चक्रभ्रमि काश[१२]रौघः[१३]।।३३।।

भिल्लैस्समुल्लासितमृक्षभल्ले यल्लोमभिर्च्छल्लमकारि मोक्षम्।
तैरेव दत्तप्रसरोऽग्निरासीद् भवन्ति नह्यापदि के विपक्षाः।।३४।।

संलग्नमङ्गेषु भुजङ्गमानां श्वासा विनिर्यद् नवलस्फुलिङ्गाः।
उत्तेजयामासुरलं हुताशं प्रायो विपत्तौ हितमप्यनिष्टम्।।३५।।

---

६. अभ्युतिथतो?
७. मुल्लास्य?
८. शिखाः ?
९. श्लिष्टः ?
१०. शशाम?
११. विषाणं स्यात्पशुश्रृङ्गेभदन्तयोः (इत्यमरः)
१२. लुलाधोमहिषोवाहद्विषत्कासरसैरिभाः (इत्यमरः)
१३. कासरोधः?

अखण्डलः खाण्डवजातवेदो ज्वालाजटालाः ककुभोऽवलोक्य।
आः किं स्विदित्याकुल दृक्सहस्त्रः स हेमपीठात् सहसोदतिष्ठत्।।३६।।

स खाण्डवे ताण्डवितुं हुताशं वीक्ष्याकुलस्तक्षकरक्षणाय।
जवादपर्याणितमेव शक्रः सक्रोधमैरावतमासुरवेह।।३७।।

सज्जैरसज्जैरपि सज्जमाने रन्वीयमानः सपदिद्विषदिभः।
द्यामाजगमाथ सहस्त्राधामाऽनुकारि कोपारुणदृक् सहस्त्रः।।३८।।

वाचाथ जम्भद्विषतामिदिष्टा-स्ते पुष्करावर्त्तकमुख्यमेघाः।
समीरगत्यानुमितान्तराला[१४] धाराः करालध्वनयोऽभ्यवर्षन्।।३९।।

गाण्डीवधन्वाविशिखप्रकाण्डैरकाण्ड एवोपरि खाण्डवस्य।
प्रभञ्जनेनाप्यनवाप्त-चारं निकाय्यमुच्चैरचयांचकार।।४०।।

विलोक्य मेधान् विफलप्रयासान् निस्वान कुलीनानिव कोपभाजः।
इन्द्राक्षिपारिप्लवतुल्यकालं गीर्वाणसेना समरोद्यताभूत्।।४१।।

सानन्दमुद्दामशिखे[१५] वनाली वालेलिहाने दहने समन्तात्।
निन्येऽथ पार्थानुमतो रथाङ्गी रथं बहिः सायकसद्ममध्यात्।।४२।।

न कृष्णयोः केवलमाननश्रीरुदस्तवीरोद्धतयोः सुरेभ्यः।
आसीच्च[१६] रामाहतदुन्दुभिभ्यः तत् कम्बुनोरेव रवोऽपि तारः।।४३।।

हेमारविन्दादपि शारदेन्दोरपि स्फुरत् कोमलकान्तिकूटे।
द्रष्टं सुरान्नुन्नमती तदानीमाशिश्रिये कृष्णमुखे जयश्रीः।।४४।।

---

१४. समीरगत्या?
१५. शिखे?
१६. आसीच्च?

टङ्कारयामासतुराकपोलमाकृष्य कोदण्डमृखी[17] पुराणी।
न केवलं विश्वमिदं चकम्पे गीर्वाणचेतांस्यपि कम्पमापुः।।४५।।

वज्रं मघोना वरुणेन पाशो गदा कुबेरेण यमेन दण्डः।
अग्राहि योद्धुं युगपत् - तदानीं सुरासुरैरप्यमरैः स्वमस्त्रम्।।४६।।

प्रहर्त्तुकामानमरानुदीक्ष्य पर्वानतैः पर्वततुल्यसारैः।
नैषां जयः केवलमायुधानि तस्तम्भ भल्लैरपि मानसानि।।४७।।

उतस्थ[18] वज्रेऽथ सुराधिराजे नभश्चरी वागह माह[19] कर्णे।
न तक्षकस्तिष्ठति खाण्डवेऽस्मिन् हरे[20] निवर्तस्व वृथा प्रयासः ।।४८।।

ज्ञातौ किमेतावपि ते न कृष्णौ युष्मादृशां कोटिभिरप्यजेयौ।
किञ्च त्वदर्थोऽयमिहावतारः शान्तप्रकृत्योरनयोरिदानीम्।।४९।।

अपेक्ष्यमाणावमर-प्रहारान् वीराविदं यादवकौरवाणाम्।
पुरन्दरो वाचि तिरोहितायां तस्यामभाणीत् सभयप्रगल्भम्।।५०।।

स्वभावमेतं स्मरतं पुराणा-वृषी दृढा वामवतारचेष्टा।
अहं त्वदोजस्वितया प्रसन्नः किं वाञ्छितं तद्वृणु तद्ददामि।।५१।।

सख्यं जयस्याच्युतमच्युतेन स प्रार्थितोऽस्त्रञ्च पृथासुतेन।
विधाय कल्पद्रुमपुष्पवर्षं सप्रेमहर्षं मघवा बभाषे।।५२।।

दाता वरं यत् वृणुषे त्वमेव मुकुन्दलीलामुचितां दधासि।
जन्मान्तरस्यैव सखा नरोऽयं तवेति नारायण किन्न वेत्सि।।५३।।

---

१७. मृषी?
१८. उदस्थ?
१९. वागिदमाह?
२०. हे इन्द्र ! इत्यर्थः ।

भवांश्च पार्थ प्रमथाधिनाथे[२१] प्रसादिते प्राप्स्यसि सर्वमस्त्रम्।
किञ्च प्रयोक्तासि यदेव युद्धे मन्ये तदेवायुधमप्रसह्यम्।।५४।।

दत्त्वा वरान्नित्यममरैस्सहेन्द्रे याते सहेलंकृतसिंहनादौ।
कृष्णावुदीक्ष्याकृत कृष्णवर्त्मा ज्वालाकलापं पुनरेव तीव्रम्।।५५।।

तस्मिन् क्षणे राक्षसदानवानां प्रधावतां खाण्डवतः समन्तात्।
जघान नाराचशतेन चैकं शतानि चैकेन शरेण पार्थः।।५६।।

★शीर्ण जनन्योरगमश्वसेनं दत्ताभयं पाण्डुभुवामयञ्च।
पुत्रान् महर्षेश्चतुरश्च शार्ङ्गान् षट्प्राणिनस्तत्र ददाह नाग्निः।।५७।।

स भस्मसात् खाण्डवमेव[२२]मग्निर्विधाय हर्षाद्द्विगुणोज्ज्वलश्रीः।
कृतप्रणामामभिनन्द्यवीरो[२३] देदीप्यमानो दिवमारुरोह।।५८।।

याथार्थ्यपद्धतिरपूर्ववचः प्रवृत्तोः प्रागुत्थिता जगति खाण्डवदाहवार्ता।
पश्चात् तयोः प्रतिनिवृत्तिनिमित्तकेन शङ्खस्वनेन जगदारवयांबभूवे।।५९।।

कृष्णौद्दैशाय देशान् प्रतिकिलनृपति प्रेरितैरेत्य[२४] दूतैः
यावन्नावादि तस्मै सरभसमनयोः खाण्डवीया प्रवृत्तिः।
सारथ्यादच्युतस्य व्यजयत विजयो जिष्णुमाराध्यबह्निस् -
त्रैलोक्ये तावदेव प्रतिजनमिति रारासमाङ्गल्यगीतिः ।।६०।।

---

२१. मृत्यु जयः कृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाथिपः (इत्यमरः)
२२. मेव?
२३. बभिन्द्य?
२४. नृपतिः?
★ तं प्रार्थनाभये दत्ते नमुचेभ्रातरं मयम्।
न हन्तुमैच्छत् दाशार्हः पावको न ददाह च ।।२१९.३९ (म.भा. आदि पर्व)
तस्मिन्वने दह्यमानेषऽग्निर्नददाह च।
अश्वसेनंमयं चापि चतुरः शार्ङ्गकानिति ।।२१९.४० (म.भा. आ. पर्व)

अष्टमः सर्गः

अथ द्वारवतीं याते हरावापृच्छ्य पाण्डवान्।
मयः सदसमेतेषां निर्मातुमुपचक्रमे।।१।।

राषसैः स हरिप्रस्थमानाय्य वृषपर्वतः।
सभामावासयामास सुधर्म्मा[1]मिव यौगिकीम्।।२।।

मैनाक-विन्दुसरसः यत्र रत्नानि केवलम्।
मयो नाहरदम्भोथेरपि रत्नाकरप्रथान्।।३।।

खाण्डेवे चण्डगाण्डीवे बाहुमण्डलताण्डवे।
पाण्डवे लुब्धया भेजे आखण्डल[2]पुरश्रिया।।४।।

जयन्तः पुरुषा यत्र गृहा एव सुधाभृतः।
सौभाग्यममरावत्या लीलयोपजहास या।।५।।

लावण्यमलका यस्यै सौभाग्यममरावती।
धन - जय-भयेनैव प्रजिघायापुटूकलम्?।।६।।

---

१. स्यात् सुधर्मा देखसभापीयूषममृतं सुधा (इत्यमरः)
२. आखण्डल?

★अवलोक्य कलाभर्तुरपरान्तमला छनम्।
यद्बालाबलभीजालात् कज्जलैरकलङ्कयन्।।७।।

अलीकसम्पदो यस्यामङ्गनापाङ्गभङ्गिभिः।
मन्दीबभूवुर्देहल्या मिन्दीवरदलस्त्रजः।।८।।

यत्राम्बरतले चित्रा नीलेन्दीवरसम्पदः।
दृगन्तैः सुदृशामास्यै-रथ चन्द्रो गृहे गृहे।।९।।

कामं कनकसोपाने यत्र यान्त्योऽभिसारिकाः।
लक्ष्या न स्युरहोच्छाये सपत्नी यदि नो भवेत्।।१०।।

निद्राभाजां यदुद्याने स्तनयोस्तबकाविति।
रामाणा[३]मलयः पेतुः कान्तलोचनलीलया।।११।।

गवाक्षैरुद्गता नील-मणिस्तम्भमरीचयः।
प्रातरादित्यपद्मस्य य - - - [४] श्रियं दधुः।।१२।।

यान्त्यः श्रृङ्गाटके[५] यत्र शृङ्गाणि सुभगालकाः।
शालभञ्जीति दिवसे खलैरपि न लक्षिताः।।१३।।

★ तुलनीया एतद्कल्पना
महाकविमाऽविरचिताधोलिखितस्यश्लोकस्य कल्पना –
पश्यन्ति भागमिह सानुषुसन्निषण्णाः
पश्यन्ति शान्तमलसान्द्रतरांशु जालम्।
सम्पूर्ण लब्धललनालपनोमानृमुत्सङ्ग सङ्गिग हरिणस्यमृगाङ्कमूर्तैः (माघ. ४.२२)

३. वामानम् पाठान्तरम्

४. यत्रमाल?

५. श्रङ्गाटकचतुष्पथे (इत्यमरः)

यत् सौधकनकस्तम्भशोभातिरधित[६] श्रियाम्।
नाऽभूत् कमलिनीबन्धुर्बन्धकीनामबान्धवः।।१४।।

जीविका पञ्चबाणस्य दृशां विश्रामभूमिका।
नाकश्रियां यमनिका सौभाग्यतिलकैव या।।१५।।

यत्र स्फटिकसौधानां प्रतिबिम्बितभास्वताम्।
आसीदनुमितिः पुंसामुष्णत्वप्रतिबोधतः।।१६।।

यस्यां मरकत[७] - तज्ज्योत्स्नाहारिण्योहरिणीदृशः।
नलिन्य इति रक्ताब्जं हरतो जहसुः प्रियान्।।१७।।

कनकाम्भोजकल्हार-हंसकारण्डवादिषु।
यद्वापीषु जलज्ञानं सन्तापप्रशमादभृत्।।१८।।

आकर्षन्तः स्थले वासो मज्जन्तः तरसा जले।
यत्र न स्खलिताः के वा जलस्थलविशङ्कया।।१९।।

तामुदीक्ष्यमुदं-जम्मूर्मयेन सह पाण्डवाः।
अलकायामिव गन्धर्वा[८] लोका वृन्दारका इव।।२०।।

मुहूर्त्तमथ माहेन्द्रमवधार्यय महीपतिः।
मयवाचा यथाचारमाससाद मुदासदः।।२१।।

तत्र धर्ममयो राजा रराजावरजैस्सह।
सुधर्मायामुपासीनः पुरन्दर इवामरैः।।२२।।

---

६. तिरस्कृत?
७. मरकत?
८. दिवम्?

शीलयन् बल्लकीनादं तपस्विभिरुपासितः।
सभा शोभा-हृताक्षेपु[९] तेषु तत्रागमन् मुनिः।।२३।।

ससम्भ्रममथोत्थाय तैयर्थावत् कृतार्हणः।
जगाद दशनज्योत्स्नासुधार्द्रमधुरंमुनिः।।२४।।

मयः शिल्पी जयो जेता पात्रं त्वमसि पार्थिव।
सौभाग्यमस्य सदसः सुधर्मामवगाहते।।२५।।

ब्रह्मादिदेवसदसः प्रत्येकमवधारिताः।
इयमेव हि सर्वासां तासां गौरवयन्त्रिता।।२६।।

किञ्च संसदियं तस्य हरिश्चन्द्रस्य वा सदः।
प्रतिभाति विभूषायै भुवो वा यदि वा दिवः।।२७।।

हरिश्चन्द्रपदं लिप्सोः पाण्डोरिन्द्रासनस्पृशः।
एकदा तस्य जातं मे वचः श्रवणगोचरम्।।२८।।

यजता राजसूयेन सम्राड्भवतु मे सुतः।
सम्राजो हिं हरिश्चन्द्रपदवी न दवीयसी।।२९।।

इति कौतूहलेनैव त्वयावेदितुमागतः।
अयमेष व्रजामीति नारदेन तिरोदधे[१०]।।३०।।

दूयमानो मुनेर्वाचा राजसूयविधित्सया।
चिन्तयामास कौन्तेयो जगत्त्रातारमच्युतम्।।३१।।

---

९. हृताक्षेपु?
१०. तिरोदधे?

तस्मिन्नेवागमत् काले महाकारुणिको हरिः।
हरिप्रस्थपुरन्ध्रीणां नयनानन्दचन्द्रमाः।।३२।।

अथार्चित[11] मुवाचेदं वासुदेवं युधिष्ठिरः।
कर्णधारो भव हरे राजसूयमहार्णवे।।३३।।

यदि वा यादवेन्द्र त्वं सम्राड्भवितुमर्हसि।
वयमेते परीवाराः साधयामः समीहितम्।।३४।।

तज्जगाद जगन्नाथः सम्राडेवासि पाण्डव।
यष्टासि राजसूयेन भ्रातरस्तव यद्यमी।।३५।।

शक्नुवन्ति दिशो जेतुमेकैकमपि तेऽनुजाः।
किं पुनः समुदायेन जगत्त्रयजिगीषवः।।३६।।

तस्मादस्मदृते सर्वैः सेव्यमानं मनस्विभिः।
राजभिस्तं जरासन्धमग्रतो हन्तुमर्हसि।।३७।।

जरासन्ध[12]जयेनैव जेतासि जगतीपतीन्।
इन्द्रियाणि हि जीयन्ते जिते मनसि योगिना।।३८।।

अक्षोहिणीभिः सहितं कः सहेत तमाहवे।
किन्तु हन्तुमलं दोर्भ्यामेनमेको बृकोदरः।।३९।।

ददौ यदाऽऽम्रं कृपया कोमलं चण्डकौशिकः।
तत् द्विधाभोजयत् पत्न्यावपत्यार्थी बृहद्रथः।।४०।।

---

११. अथार्च्चित?

१२. जरासन्धः इत्यस्मिन विषये परिशिष्ट भागे द्रष्टव्यम्

एकवाहवक्षिचरणे अभूतां शकले तयोः[१३]।
संहिते जरया भोक्तुं ताभ्यामयमजायत।।४१।।

दन्तेन कदलीस्तम्भं स्तम्बेरम इव द्विधा।
द्वैमातुरमयं भीमो गदया दारयिष्यति।।४२।।

मगधेन्द्रकरी[१४] को वा भीमः केसरिणो बले।
तत् त्वं भीमार्जुनावेतौ न्यासीकुरु करे मम।।४३।।

धर्मसूनुरुवाचेदं यदुनाथ यदात्थ[१५] माम्।
तत्तथैव न सन्देहः किन्तु मे कातरं मनः।।४४।।

मनस्त्वमसि गोविन्द नयने भीमफाल्गुनौ।
मनोनयनहीनस्य देहिनो जीवनेन किम्।।४५।।

तथापि व्रजमामाशु पुनरुज्जीवयिष्यसि।
मङ्गलायतनं धीराणामेवं[१६] भवतो जगुः।।४६।।

ब्रह्मचर्येण वेषेण त्रयोयादवपाण्डवाः।
दग्धुं हविर्भुज इव द्वैमातुर[१७]पुरं ययुः।।४७।।

वेषप्रभैव धीराणामधीरायतलोचना।
आजुहाव गृहव्यग्रा जालायामिव प्रिया।।४८।।

---

१३. तयोः?
१४. जरासन्धः इति (पाठ च.को. पृ. ६३४)
१५. यथात्थ?
१६. धीराणाम्?
१७. द्वैमातुरः जरासन्धः इति (पा० च, को. पृ० ६३४)

तदालोकनलोलानां निर्यतीनामितस्ततः।
बभूवे विभ्रमायैव सम्भ्रमेणापि सुभ्रुवाम्।।४६।।

प्रसन्नैराननैस्तासां प्रफुल्लैरथ लोचनैः।
पूर्णेन्दुभरिता-जाला नीलेन्दीवरिता[१८]दिशः।।५०।।

अथ राजगृहं प्राप्य विप्रवेशेन ते त्रयः।
पक्षद्वाराग्रतस्तस्य मागधस्याग्रतो ययुः।।५१।।

बर्हिमाल्यानथालोक्य तामूचे मगधेश्वरः।
न ब्रह्मचारिणः सत्यं ब्रूत के यूयमीदृशः।।५२।।

दीयन्ते शम्भवे यावत् सहस्त्रं बलयो नृपाः।
तावत् तिष्ठत निर्वृत्ताः पश्चाद् व्यक्तीभविष्यथ।।५३।।

अन्वभाषत जरासन्धं कंस-कुञ्जस्य केसरी।
अर्जुनोऽयमयं भीमो विद्धि मां मधुसूदनम्।।५४।।

न दृष्टं न श्रुतं वापि दीयन्ते बलयो नृपाः।
अयमेव तवाऽऽरम्भः संरम्भाय बभूव नः।।५५।।

रुद्धास्ते सुहृदोऽस्माकमपराद्धोऽसि मागध।
अतो वयमनाहूता अपि त्वामाह्वयामहे।।५६।।

द्वैमातुर महाबाहोभीर्मगाण्डीवधन्वनोः।
यौद्धुमिच्छसि केन त्वं ब्रूहि सज्जीभवत्वसौ।।५७।।

---

१८. नीलेन्दीवरिता?

दवीयो धनुरस्माकमित्युपेक्ष्य धनञ्जयम्।
नियुद्धाय क्रुधा भीमो भीममाह्वास्त मागधम्।।५८।।

नखानखि महासिंहौ हस्ताहस्ति महागजौ।
देहादेहि महानागौ तौ चिक्रीडतुराहवे।।५९।।

द्वैमातुरमथाकृष्य केशेषु भ्रमयन् भुवि।
गदया वक्षसि क्षिप्रं विददार वृकोदरः।।६०।।

जरासन्धस्य शकले सहसा पुनरुत्थिते।
गदया मर्दयामास लवशः पवनात्मजः।।६१।।

निमन्त्र्य क्रतवे राज्ञो बन्धादुन्मोचितानथ।
दत्त्वारिसूनवे राज्यं त्रयस्ते पुरमाययुः।।६२।।

चतुरङ्ग-चमूभाजौ राजाथ चतुरोऽनुजान्।
चतुर्भुज-गिरा जेतुं प्रजिधाय चतुर्दिशम्।।६३।।

अर्जुनः करदीकुर्वन्नुदीच्यानवनीभुजः।
प्रागिन्द्रसदृशं ज्योतिः प्राग्ज्योतिषमुपागमत्।।६४।।

प्रागज्योतिष्पतिः पार्थमपार्थीकृतजीवनः।
अयोध्यदहन्यष्टावष्टमूर्तिमिवान्धकः।।६५।।

हेलाजितमदोन्मत्तो[१९] भगदत्तमतङ्गजः।
अशोभत यशोमुक्ताफलैः फाल्गुनकेसरी।।६६।।

---

१९. मदोन्मत्त?

जयन्तमेव विजयं पर्वतीयान्नितस्ततः।
प्राप्तोत्तरकुरुद्वारं द्वारपालास्तमूचिरे।।६७।।

पार्थ नातः परं पन्था गन्तुं मानवजन्मनः।
आहरामो वयं तावद् यावद् द्रविणमिच्छसि।।६८।।

तथेति प्रतिजग्राह तेषां वचनमर्जुनः।
कार्यसिद्धौ मतिमतां व्यसनाय नहि ग्रहः।।६९।।

उदीचीं हुतसर्वस्वमलञ्चक्रे स कीर्त्तिभिः।
भवन्ति हि महात्मानो रिपावपि कृपालवः।।७०।।

कुवेर-कुकुभः पार्थो नहि रत्नानि केवलम्।
न्यवर्तत तत् पुरस्त्रीणामाहृत्य हृदयान्यपि।।७१।।

भूभुजः समरारम्भरम्भाभञ्जनकुञ्जरः।
कवलाहारयामास प्राच्यानथ वृकोदरः।।७२।।

जरासन्धे जिते चैधः प्रीत्यैव करमाहरत्।
नापि चुक्रोध राधेयो राजसूयदिदृक्षया।।७३।।

कथञ्चन सुधर्माणमुग्रकर्मणिमाहवे।
दशार्णाधिपतिं जित्वा स चकार चमूपतिम्[२०]।।७४।।

सहदेवेन चाक्षिप्ता दाक्षिणात्याः क्षि[२१]तीक्षितः।
न ते संरेभिरे वीराः सादिगेव हि दक्षिणां।।७५।।

---

२०. चमूपतिः?

२१. किष्किन्धानाम नगरी रामायणे बलिनसुग्रीवयोः राजदान्यासीदिति सहदेवेन स्वदक्षिणाशाविजयप्रसङ्गे अत्र निवासिनौ द्विविदमैन्दनामकौ द्वौ वानरश्रेष्ठौ पराजितौ (म.भा. कोशे)

★विन्दानुविन्दजविलः किष्किन्धायामथोद्यतम्।
युद्धंद्विविदमैन्दाभ्यां [22]तस्य सप्तदिनान्यभूत्।।७६।।

आवां हि कृतकर्माणो रामरावणयोः रणे।
अद्य विस्मयमायातौ तवायोधनलीलया।।७७।।

तवैवास्मकरत्नानि तद् गृहाण यदृच्छया।
एवमभ्यर्चिता३स्ताभ्यामथ[23] माहिष्मतीं ययौ।।७८।।

युमकम् :–

★★लीलया नीलभूपालमभिभूयाथ भारतः।
तस्य जामातरं स्तुत्या शमयामास पावकम्।।७९।।

अथ दूतमुखेनैव प्रजिधाय विभीषणः।
रत्नानि सहदेवाय कालो हि बलवत्तरः[24]।।८०।।

दर्शयन्नथ शोटीरं नकुलोऽपि कुलोचितम्।
पश्चिमाशाक्षितीशानां बलिनां बलिमाददे।।८१।।

दर्शयन्नथ शौटीरं नकुलोऽपि कुलोचितम्।
पश्चिमाशाक्षितीशानां बलिनां बलिमाददे।।८१।।

★ अवन्ती निवासिनौ द्वेविशेषे जाती। ये सहदेवेन दक्षिण दिग्विजय प्रसङ्गे पराजिते ।
बिन्दानुविन्दावावन्त्यौ सैन्येन महता कृतौ।
जिगाय समरे वीरावाश्विजेयः प्रतापवान । म.भा.स.प. २८.१०

२२. अभर्च्वितस्ताभयाम्?

★★ तत्र नीलेन राज्ञा स चक्रे युद्धं नरर्षभः (म.भा. स.प. २८.११)

२३. कालो हि दुरतिक्रमः (बा.रा. सु. का. १६.३)

२४. अवनीभुजः ?

स चान्यतममन्विष्यन् कृष्णेन करयुद्धयोः।
हसन्नेव महार्हेण रत्नेन महतार्हिता।।८२।।

ते करानिति चत्वारश्चतुर्दिगवनीभुजाम्[२५]।
समाहुत्य हरिप्रस्थे राजानमुपतस्थिरे।।८३।।

अथ प्रववृते यज्ञो धर्मराजस्य राजभिः।
क्रियमाणेषु कर्मण्यैर्मानिभिर्भृत्य-कर्म्मसु।।८४।।

व्यासो ब्रह्मा हरिः पाता दुर्वासा यत्र सामगः।
याज्ञवल्क्यो यदर्ध्वयुः किं वा तस्य क्रतोः फलम्।।८५।।

पात्राणामेव सर्वेषामुत्तमः पुरुषोत्तमः।
इति देवव्रतेनोक्ते तमानर्च्च तपः सुतः।।८६।।

तेनाहूतः पुरो राज्ञां निन्दिताभीष्मपाण्डवान्?।
शिशुपालक्शिरः शार्ङ्गी चक्रेणाथ चकर्त्तिवान्।।८७।।

बद्धाञ्जलिः समुत्थाय सहसा महसा ततः।
प्रावेशि च वपुर्विष्णोरपाति च दिवः स्रजः।।८८।।

अथाभिषिच्य साम्राज्ये यथाविधि युधिष्ठिरम्।
गृहं जन्मुस्तदा पृष्टास्सर्वे यज्ञनिमन्त्रिताः।।८६।।

सम्राट्समस्तमवनीपतिमण्डलं तत्
सम्मानपूर्वमनुजैः सहितो विसृज्य।
गत्वा गृहीतकुरुराजकरोऽवरोध -
मादत्त मङ्गलमनङ्गजनाङ्गनानाम् ।।६०।।

---

२५. निपततिजाल?

कौख्यैनिप - - - - ल पुष्करिम्या -

माकर्षत्यधिमणिवेदि चाधरीयम्।

द्रौपद्या सहितमहासि पाण्डवैर्यत्

तज्जातं कुरुवधमङ्गलं विधातुः ।।६१।।

इति श्री लक्ष्मीनारायण राय राजपण्डित कविडिण्डिम श्री
लक्ष्मीदत्तविरचिते पाण्डवचरिते महाकाव्ये राजसूयो नामाष्टमः सर्गः ।

अथ नवमः सर्गः

अथागतो नागपुरं परामृशन् सुयोधनः धर्मसुतस्य सम्पदः।
पदाभिमृष्टः शिरसीव विव्यथे[1] खलस्य शल्यानि सतां विभूतयः।।१।।

जगाद गान्धारमिदं स तादृशो दृशोः पथं नीतवतो रिपुश्रियः।
ममातुला मातुल मानसी व्यथा वृथा सहायस्य मनस्विनो जगुः।।२।।

अथैनमूचे शकुनिः कुरुप्रभो न साम्प्रतं सम्प्रति कर्त्तुमक्षमाः।
ननु त्वया विप्रकृतेषु भूयसा कृत्तं कदाचित् पदमेषु नापदा।।३।।

अदायि गाण्डीवधनुस्तदग्निना रतं सतूणीरयुगं तदक्षयम्।
सभावसादा नरराजकारुणा प्रसन्नमेतेषु सदैव दैवतम्।।४।।

मनोरयाश्चित्ररथेन ते हया जयाय गान्धर्वमदायि चायुधम्।
हिडम्बहन्ता भुजयाजयत् बकं कदा न [2]तेषामवदानमद्भुतम्।।५।।

न कर्तुमीर्ष्याहिं पाण्डुजन्मनां त्वयापि तावत् क्रियतां जयो दिशाम्।
सहायशक्तिस्तव यादृशी पुनः न तादृशीकौरवनायक क्वचित्।।६।।

त्रपामुपानीयत येन संयुगे यमः स राज्ञा यमदग्निनन्दनः।
वसुन्धरायां वसु-विक्रमाङ्कुरः स एष भीष्मस्तव वाहिनीपतिः।।७।।

---

१. सीव विव्यथे
२. न तेषाम्

गुरू च ते मन्त्रणया गुरूपमौ सुधांशुनैवात्रिरनेन सूनुना[३]।
असौ भरद्वाजसुतो यमुत्तमो धनुष्मतां वेदवतां च गौतमः।।८।।

अयं स ते मित्रममित्रकर्षणं तृणीकृताशेषधनुर्धरो वृषः।
अमी च भूमीधरसारबाहवो महाहवोदारबलाः सहोदराः[४]।।९।।

कथं न तानेव जयाम तद्वयं न वाच्यमेवं कुरुनन्दन त्वया।
हरेस्सखा यो द्रुपदस्य बान्धवाः न पाण्डवाः शक्यजयाः सुरैरपि।।१०।।

अभि त्रिलोकीवनमालिलालिताननन्तरां संयति लंघितुं न तान्।
निवेद्य पित्रे कुरु तद्दुरोदरं पुरो जयेयं भवतो युधिष्ठिरम्।।११।।

तथेति तेनैव सहाम्बिकासुतं समेत्य दुर्योधनइत्यभाषत।
वयं महाराज तवाऽपि सूनवो विलम्बितं जीवनमुद्रहामहे।।१२।।

बलीनहं पूर्विकयापि दित्सवः प्रबोधयन्तः प्रतिहारिणस्स्वयम्।
युधिष्ठिरद्वारि मया विलोकिताः सहस्रशः साहसिका[५] महीभुजः।।१३।।

युधिष्ठिरोऽधिष्ठित यज्ञविष्टरो यदृच्छया यत्र विलोचनं ददौ।
व्यलोकि तत्रैव नरेन्द्रमण्डली किरीटिकोटिद्युतिदन्तुरामही।।१४।।

तुरङ्गवक्त्रास्सह तत्र किन्नरै-र्नेकपादैकपदास्सहस्रशः।
अनुत्तमोपायनरत्नपाणयो मया बलीनाददतावलोकिता।।१५।।

वयं रणे जेतुमलं न पाण्डवान् दुरोदरं ते नरदेव रोचिताम्[६]।
न केवलं बाहुबलेन पार्थिवे रिपुर्विजीयेत यथाकथञ्चन।।१६।।

---

३. सनुना
४. सहोदराः
५. साहसिका ः
६. रोचताम् इति प्रतिभाति।

तथेत्यनिच्छन्नपि पुत्रवत्सलः ततः समानाय्य स पाण्डुनन्दनम्।
अकारयद् द्यूतमजातशत्रुणा विनाशहेतौ स्वकुलस्य सौबलम्।।१७।।

जितं मयेति ब्रुवता प्रतिक्षणं विजित्य राज्यं कपटाक्षदेविना।
असत्यभाषाविमुखस्य भूभुजः क्रमेण तस्यावरजा विजह्रिरे।।१८।।

पणीकृतात्मानमथापराङ्मुखं जगाद गान्धारसुतो युधिष्ठिरम्।
तवास्ति यावद् द्रुपदस्य नन्दिनी न तावदात्मा भवति ग्लहोचितः।।१९।।

पणीचकाराकृपणस्तपः सुतः सतामपि प्राणसमामथ प्रियाम्।
*समुत्सृजन्ते तरमप्यसूनहो न धर्मनिष्ठा विरमन्ति वर्त्मनः।।२०।।

करेण बिभ्रत्कचभारशैवले बलेन पाञ्चालसुतां सरोजिनीम्।
सुयोधनाधारणचालितस्तदा चकर्ष दुःशासनदृष्टरावणः[७]।।२१।।

अथाहृतां संसदमेकवाससं रजस्वलां तामवलोक्य भूभुजः।
न केवलं ते कुरुवंश-पांशुलं सभासदो हन्त निनिन्दुरात्मनः।।२२।।

मरुत्कुमारो रुदतीमितस्ततः निरीक्षमाणामवलोक्य मानिनीम्।
जगाद धर्मात्मज नापि पापिभिः पणीक्रियन्ते गणिका अपि स्त्रियः।।२३।।

चतुः समुद्रावधिरर्जुनार्जिता पणीकताभूरिह न व्यथा मम।
शुनाऽमुनास्पर्शि यदध्वरस्थली प्रियेति जीवन्नहमुत्सहे कथम्।।२४।।

तमाबभाषे विजयो वृकोदर त्वयापि यद्येवमावादि पार्थिवः।
न कौरवादुद्विजमानमाश्रयेत् तपस्तदानीमपि नः क्वचिद्भवेत्।।२५।।

---

*. त्यजन्त्यसूनशर्म चमानिनोवरं त्यजन्ति न त्वेक मयाचितव्रतम्।
नै.म. १.५०

७. ऐरावताभ्रमातङ्गगरावणाभ्रमबल्लभाः ।इत्यमरः।

विपद्यमुष्यामपि धर्ममात्मनो जहाति न क्षात्रमयं युधिष्ठिरः[८]।
सुभद्र -[९] यच्चैनमनुव्रतावयं तदेतदस्माकमतीव[१०] कीर्त्तये।।२६।।

उवाच भीमो न तवापि सम्मतः[११] कियेत[१२] दुश्शासननिग्रहो यदि।
निवेदय ज्यायसि दुर्बलस्तदा जुहोमि बाहूज्वलिते हुताशने।।२७।।

तदा विकर्णो निजगाद किं ह्रिया महीभृतो मौनिन एव तिष्ठत।
नृपात्मजां पञ्चसमानधर्मिणीं न हि ग्लहीकर्त्तुमलं युधिष्ठिरः।।२८।।

अवादि कर्णेन विकर्ण किं वृथा विकत्थसे धर्मपथं न बुध्यसे।
अकारि सर्वस्वमनेन चेत्पणः तदैव कृष्णा वद किं न हारिता।।२६।।

कुलाङ्गनायाः पतिरेक एव हि श्रिता पुनः पञ्चपतीनमूनियम्।
असावतो वारविलासिनी सा-[१३]सभामुपानायि किमत्र दूषणम्।।३०।।

असौ विवासाः क्रियतां गिरा मम प्रसह्य दुश्शासनदुष्टदासिका।
हठादमीषामपि पाण्डुजन्मनां गृहाण दासानुचितं परिच्छदम्।।३१।।

इतीरिते सूतसुतेन पाण्डवाः समं समस्ताभरणानि तत्यजुः।
परैः परि[१४] क्लेशमवश्य भाविनं मनस्विनो हि स्वयमेव कुर्वते।।३२।।

सुयोधनस्यावरजो बलेन यदा यदा तत्परिधानमाकृषत्।
नवं नवं[१५] प्रादुरभूत् तदा तदा न धार्मिका धृष्यतमा हि पाप्मभिः।।३३।।

---

८. युधिष्ठिरः?
९. नृसिंह?
१०. अस्माकमतीव
११. तवापि सम्मतः
१२. प्रवीर
१३. समा
१४. परैः परि
१५. नवम्

पुरो गुरूणामसकृत् तदम्बरं बभूव तस्याकृषतः परिश्रमः।
पतिव्रतायाः परिधानवाससो बभूव न ग्रन्थिरनीदृशी[१६] पुनः।।३४।।

पतिं वृषस्यन्ति वृणु[१७] त्वमन्यतो न पञ्चगावो यदमी तवोचिताः।
पितैव ते शल्यमुपादधे हृदि स्वयंवरे शुल्कमयञ्चकार यत्।।३५।।

न काकतालीयवदेषु पौरुषं व्यचारि पित्रा तव यत्स्वयंवरे।
श्वसन्त्यमी वाससि कृष्यसे मया तदेतदालोकय पंचभर्तृके।।३६।।

अनेन दुश्शासन-वाक्छरेण न पाण्डवा हि व्यथयाम्बभूविरे।
अहो न येषां समरेऽमरेश्वर-प्रकोपवज्रैरपि नो विकल्पः।।३७।।

स याज्ञिसेनी[१८] मभिदक्षिणेतरा-दुदक्षिपन्नम्बरमूरुमण्डलात्।
कटाक्षयन् पाण्डुसूतान् सुयोधनो निजस्य मृत्योरुदघाटयन् मुखम्।।३८।।

सकोप-निश्श्वास-विकीर्णवाचिकं जहास गौर्गौरिति यद्वृकोदरम्।
रणक्रतौ तत् किल कौरवाहुतीरुपादिशन्म[१९] न्त्रमुखेन होष्यतः।।३९।।

निपतिदुःशासनशोणितो रणे न चूर्णसिष्ये गदयोरुमस्य चेत्।
तथा पितृणां यदमर्प्यये शिरः स्विति प्रतिज्ञामकरोद्वृकोदरः।।४०।।

निशम्य गान्धारिकया निवेदितं स भारतानामसमञ्जसं महत्।
रवेण कृष्णामनुरुध्य पाण्डवा न दासयामास तदतिएत्वम्बिकासुत ।।४१।।

निमज्जतामद्य बभूव नौरियं नरेन्द्रकन्या व्यसनार्णवेषु वः।
इतीरयन्तो जहसुः परस्परम् स्वनेन दुर्योधन-कर्ण-सौबलाः।।४२।।

---

१६. अनीदृशी
१७. याज्ञसेनीम्
१८. वृणु
१९. मन्त्रम्

अभाणि भीमेन गभीरगर्देमदं सुधर्मणीयं ध्रुवमुज्जहार सः।
ह्रिये पुनः क्षत्रियमानिनोऽपि यज्-जयन्त्यजेयान् कपटाक्षवर्त्मना।।४३।।

निहन्मि सर्व्वानहमेव वः शुनः प्रसह्य शार्दूल इवाद्य लीलया।
न किन्तु युष्मभ्यमसावसूयति क्षमाधनो धर्मसुतः करोमि किम्।।४४।।

न भीम जल्पन्ति कदापि कद्वदं वदन्ति तेजः क्रिययैव भारताः।
विजानतोऽमी गुरुरवो यथा वयं निवर्त्तयामास तमित्थमर्जुनः।।४५।।

युधिष्ठिरोऽपृच्छदथाम्बिकासुतं प्रशाधि राजन् करवाम किं वयम्।
द्विषन्तु पुत्रास्तव न द्विषन्तु वा शिरस्त्वदाज्ञां[२०] हरते सदैव नः।।४६।।

ब्रुवाणमेवं तमुवाच कौरवो भवान् सदैवाभ[२१] युदयाय कल्पते।
तथापि धर्म्मस्त्वयि धैर्य्यमर्जुने बलानि भीमे यमयोः सदानतिः।।४७।।

स खाण्डवप्रस्थमथ प्रहृत्यतान् निवाययं दुर्योधनकाकुभिः पुनः।
सुहृद्गिरोऽनादरयन् दुराशया दुरोदरं तु त्वदकारयत् तयोः।।४८।।

वने वसन् द्वादश निर्जितः समाः सबान्धवोगुप्तमथैकवत्सरम्।
ततैव भूयाद्विदितो जनैः पुनः प्रमाणमास्तामयमावयोः पुनः।।४६।।

इतीरयन् द्यूतरणानिवर्त्तिना स्वभङ्गमालोकयतापि सौबलः।
तथेति तेनानुमतो युधिष्ठिरं जिगाय भूयः कपटाक्षदेवनः।।५०।।

---

२०. शिरस्वराज्ञाम्?
२१. भवान् सदैवाभ्युदयाय?

युग्मकम्ः –

कदूक्तयो वाचिकवि[२२] भ्रस्पृशां भवन्तु शल्यानि न कर्णयोः पुनः।
इतीव राजानुगतः सहानुजः प्रचक्रमे गन्तुमपक्रमेण सः।।५१।।

जगाद गर्ज्जद्धनवद् वृकोदरो विधाय दुःशासन-शोणितासवैः।
अरण्यवासव्रतपारणामदात् विदारयिष्ये गदया सुयोधनम्।।५२।।

जगद्भुजामण्डलकुण्डलीकृतप्रचण्डगाण्डीवरवेण कम्पयन्।
स एष कर्णं समरे धनञ्जयः कृतान्तकारानियतं करिष्यति।।५३।।

अयं च गान्धारतनूजरावणं[२३] प्रसह्य पद्म्यामवस्ह्य मूर्द्धनि।
भुजाग्रजाग्रन्नखराशिधारया द्विधा विदध्यात् सहदेव केसरी।।५४।।

उवाच बीभत्सुरनर्हमुच्यते प्रमाणमस्मिन् मम भीमशासनम्।
असावनङ्गो ध्रुवरङ्गनायकः क्रियेत गाण्डीवशिलीमुखे रणे।।५५।।

असंशयं मागधहन्तुराज्ञया क्रियेत किं खड्गभुजङ्गमेन मे।
न सौबल-प्राणसमीर-पारणा कनीयसा पाण्डुभुवेति भाषितम्।।५६।।

समस्तमेतत् कुलवर्त्म वृत्तये जनैस्तु[२४] सम्भावितमेव मारताः।
अयं क्षमायाः समयो विरम्यतामिति क्रुधास्ते गुरुभिर्न्निमन्त्रिताः।।५७।।

तपः सुतेनाविकृतेन सर्व्वतो यतावदापृच्छ्य गुरूंश्च बान्धवान्।
अवारि चीरेण ततः कलेवरं न विक्रियन्ते हि कदापि साधवः।।५८।।

---

२२. विभ्रम?
२३. ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः (इत्यमरः)
२४. वृत्तये

उदस्समुत्थाप्य यदानतामथ स्वसङ्गमानीय जलाविलेक्षणा।
शिरस्युणाघ्राय[२५] जगाद गद्गदं स्वरेण कुन्ती द्रुपदस्य नन्दिनीम्।।५९।।

शिवोऽस्तु पन्थाः कुलवैजयन्ति ते प्रियेषु शुश्रूषणमुद्दिशामि किम्।
परन्तु सत्येन तवैव ते पती नलं भवेयुर्विपदो न लङ्घितुम्।।६०।।

त्वमेव कल्याणि पतिव्रताग्रणी : प्रणीयतां कस्त्वयि धर्म्मविस्तरः।
अरुन्तुदेऽपि व्यसने निराकुलं कुलस्त्रि[२६] या विक्रियते न मानसम्।।६१।।

तथाद्रियेथाः सहदेवमन्वहं स्मरन्नसावुद्विजते यथा न माम्।
तथेति सा मुक्तकचैव शोभितारुणैकवासाः स्खलदङ्घ्रिनिर्ययौ।।६२।।

अनुव्रजन्ती रुदतीस्नुषां पृथा सुतानथालोक्य परीतचर्मणः।
अवाङ् मुखांस्तानुपसृत्य कातरा चिरव्यवस्थापितवागभाषत।।६३।।

सुताः कथम्मे गुरुदेवतापराः परापवादेऽपि परं पराङ्मुखाः।
भवन्ति भूयो व्यसनस्य भागिनो विपर्ययः सम्प्रति किंम्विधेरपि।।६४।।

★ममैव विस्फूर्ज्जधुरेष कर्म्मणामजीजनं यद् भवतोऽनमायिनः।
नताः सतामात्मकुलान्निवृत्तया विना[२७]हि मायां बहुशोऽवशीदथ।।६५।।

यदीदमज्ञास्यमहन्तदा कथं समागमिष्यं बत हस्तिनापुरम्।
पुरन्दरादप्यधिका विकारिणः कथं कठोरेषु वनेषु वत्स्यथ।।६६।।

---

२५. शिरस्युपाघ्राय

२६. कुलस्त्रिया

★ कालिदासेन प्रभाविता भाषा -
ममैवजन्मान्तरपातकानां, विपाकविस्फूर्ज्जधुरप्रसह्य।
कालिदासरघुवंशम्।

२७. विना

इमामवस्थां भवतो विलोक्य मां जहाति नायुर्बहुदुःखभागिनीम्।
तपःकृतं मद्रपतेस्तनूजया यया न युष्माकमलोकि दुर्दशा।।६७।।

मयापि गन्तव्यमरण्यमावृता पुरन्ध्रिवर्गैः रुदतीति रोदिभिः।
उदस्त्रया सान्त्वगिरा कथंचन प्रवेशिता सा विदुरेण मन्दिरम्।।६८।।

यमावृदसु[28]विजयो रजोकिरन् - नवाङ्मुखो भूपतिरुत्कचावधूः।
स्पृशन् भुजौ मारुतिरित्यमी ततो मृगेन्द्रलीलागतयः प्रतस्थिरे।।६९।।

निवर्त्य कौरव्यपराङ्मुखीप्रजाः सजायया चावरजैरनुव्रतः।
प्रयागमासाद्य महावटध्वजं निशामनैषीदुदकाशनो नृपः।।७०।।

निवर्त्तनायापि निकामर्थिता धरामरा हन्त जहत्यमी न भाम्।
भवेदमीषां भरणं वने कथं -[29] चिराय चिन्ता नृपतेरभूदियम्।।७१।।

असौ ततः शौनकसूनृतोक्तिभिः प्रबोधितो धौम्य निवेदितौजसः।
प्रसाधिताद्वासरभर्त्तुरक्षयान् महानसे सर्वरसानविन्दत्।।७२।।

अथाम्बिकेयेन विधेयमन्त्रणेविगीत कौरव्यसुगीतपाण्डवाः।
ब्रवीषि पक्षाश्रितमित्यनादृतं तमातिथेयं विदुरः समाययौ।।७३।।

स सञ्जयाहूतमनुप्रहत्य तं कुरुप्रणेता कुरुजाङ्गलोषितः।
मृकण्डसूनोः श्रुतविप्रवैभवो वनं वनेनैव दिने-दिने ययौ।।७४।।

भयार्त्तकृष्णाकृपणेक्षितो मरुत्-सुतः स किर्म्मीरिमुदास्यकन्दरम्।
परापतन्तं गि[30] रिवद् बकानुजं भुजाशनिभ्यामचिरादचूर्णयत्।।७५।।

---

२८. उदसु?
२९. कतम्
३०. गिरिवद्

अथैष शृण्व[31]न्नितिहासमावृतः तपोधनेभ्योऽवरजैरनुव्रतः।
ह्रिया प्रियाशङ्कथनेन कातरो ययावुपद्वैतवनं युधिष्ठिरः।।७६।।

हरिं पुरस्कृत्य विषण्णमानसो विलोकयन्तःपुरतः कुरुक्षयम्।
कुटुम्बिनस्तत्र समेत्य पाण्डवैः परस्परालिङ्गनपूर्वमारुदन्।।७७।।

वासो विधाय पुरतः ससुतां सुभद्रां[32] पाञ्चालराजतनयावथ भागिनेयान्।
आपृच्छ्य पाण्डुतनयैः सह याज्ञसेनीं सन्धाय कौरववधञ्च पुरं ययुस्ते।।७८।।

रणभुवि सहसोभैः कामरूपैश्चरन्तं मुरजिति बहुमायं ध्वस्तवत्येवशाल्वम्।
कुरु जयकृतसन्धे प्रस्थिते ते ननन्दुः विरमति न कदाचित् मङ्गलं धार्मिकेभ्यः।।७९।।

इति श्री लक्ष्मीनाथरचिते पाण्डवचरिते महाकाव्ये द्यूतक्रीडानाम नवमः सर्गः ।

---

३१. श्रृण्वन्?
३२. पाञ्चालराज

दशमः सर्गः

ब्रह्मघोष महनीयमृषीणामुज्ज्वलैः सुरभितं मखधूपैः।
वीजितं सुरधुनीप[1]वमानैः पुण्यमेव परिणाममुपेतम्।।१।।

निःसपत्नविचन्मृगयूथं निर्विशङ्कविहरन्मुनिकन्यम्।
सामरस्यमपि नाम तपस्यत् सानुसूयहृतकर्म्मकलापम्।।२।।

कामचारमधिरूढ़विहङ्गैः सर्वदाफलितपुष्पितशाखैः।
पादपैः फलभरेण विनम्रैरुद्दिदशद् विनतिमुन्नतिबीजम्।।३।।

द्वैत्यनाम वनमेत्य विनीताः पाण्डवाः तदवदीर्घतपोभिः।
★जामदग्न्या[2]बकदाल्भ्यपुरोगैः पूजिताः कतिचिदूषुरहानि।।४।।

ब्रह्मधामनि समेत्य विराज़ामुत्तमामुदहरन् मुदभोजः।
हव्यवाहमरुतोरिव सन्धिस्तत् ततापं कुरुचित्तवनानि।।५।।

मारुतिद्रुपदराजसुताभ्यां सर्व्वदा नयकवायवचोभिः।
अर्थितः कुरुवधं प्रतिधीरो धर्मसुनुरिति वाचमुवाच।।६।।

रक्त एव नृपनीतिकलापः पापमत्र न भवेदिति जानन्[3]।
यदहं समयमद्य विलङ्घे कस्तदा तमिव मां न विगायेत्।।७।।

---

१. सुरधुनी
★ परिशिष्टभागे दर्शनीयम्
२. यामदग्न्य
३. जानन्

विध्यती कुरुकुलापमदेभ्यः शांतिरद्य ननु मामधिशेते।
स्यादहं यदि विलङ्घितसत्यः कैं तदा बत भजेत् वराकी।।८।।

अस्तु वा समयमद्य विलङ्घे दुर्ज्जयस्तदपि कौरवराजः।
द्रोणभीष्मककर्णपुरोगैः रक्षितो युधि महारथयूथैः।।९।।

उत्तरं प्रतिविधात्स्यति भीमे धर्मराज कृपया समुपेतः।
पूजितः सपदि पाण्डुतनूजैरित्यभाषत पराशरसूनुः।।१०।।

सम्पदो न खलु पापरतानामापदः सुकृतिनामिव नित्या।
★सा[४]हिरण्यकशिप्वङ्कगताश्रीरागता ननु कुतः पुनरिन्द्रम्।।११।।

रक्षितो यदभिरक्षति धर्म्मं तत् कदापि न मृषा कलनीयम्।
किन्तु वीक्ष्य स गुरुव्यसनोऽपि प्रकृतं हृदयमभ्युदयाय।।१२।।

मा दुनोतु भवतामिति चेतः तामवाप्स्यथ पुनः कुरुलक्ष्मीम्।
किन्तु सत्यनिरताः कुरुतामी प्राणवत् समयपालनमेव।।१३।।

सन्धिवाक्यमवधीर्य स मित्रानन्दनेन विहसन्नमिशाप्तः।
सोऽपि वृकोदरगदागलितोरुर्भेत्स्यते यदि चतुर्दशवर्षे।।१४।।

द्रोणशान्तनवकर्ण कृपाद्याः सम्यगस्त्रकुशला कुलभर्तुः।
दुर्मतैरपि कृते यतमानाः सन्त्यजेयुरपि जीवितमाजौ।।१५।।

दैवमस्त्रमपहाय न तेषां निग्रहः समरसीमनि शक्यः।
धर्मराज तदिमां मम विद्यामाददस्व विजयाय जयीथाः।।१६।।

---

४. सा

★ हिरण्यकशिपोः कीर्त्तिमन्द्रहस्तगतामिव रा.सु. क २०.२८

धर्मभूरथ तथेति सहर्षं सम्यगाचरितशौचकलापः।
वादरायणमुखादिवसिद्धिं स प्रतिद्युतिमाविन्दत् विद्याम्।।१७।।

पार्थिवोऽपि मुनिनैव नियुक्तः काम्यकं तदुपगम्य वनं सः।
पूर्वजन्मतपसामिव सिद्धिं फाल्गुनाय मुदितोदितविद्याम्।।१८।।

गाण्डिवं स च विधाय सहायं खड्गमुग्र समरक्षय तूणः[५]।
भ्रातृभिर्वनितया च कृताशीः कञ्चुकीदिशमगच्छन्नुदीचीम्[६]।।१९।।

श्यामलानि स निरैक्षत दूरादन्तिके कुसुमितानि विचित्रम्।
पक्षिवार[७] मुसवारिनिकुञ्जादुत्थितार्द्रपवनानि वनानि।।२०।।

उल्लसत्कमलकोषपरागा धातुधारनवमालपरागाः।
प्रेक्षताद्रिसरितोऽयमबाला रिङ्गदुन्मदरथाङ्गमरालाः।।२१।।

कापिशोऽरुणमिलत् परभागान् रत्नचित्रशिखरापरभागान्।
हारिकिन्नरबधूनवगीता नैक्षत क्षितिभृतो नवगीतान्।।२२।।

वीजितो मधुर निर्झरवाले रम्बुदैरुपरि वारितघर्म्मः।
कम्बुदुन्दुभिरवैरुपहूतः पारिजातकुसुमैरवकीर्णः।।२३।।

जन्म यापयति यस्य दिदृक्षा तत् तदेव परितः परिपश्यन्।
देवदारुमृगनाभिसुगन्धिं गन्धमादनमतीत्य किरीटी।।२४।।

---

५. तूणोपासङ्ग तूणीरनिषङ्गाइषुधिर्द्वयोः (इत्यमरः)
६. गच्छदुदीचीम्
७. वारोवन्दः (विश्वः)

इन्द्रकीलगिरिमूर्द्धनि गच्चन् तिष्ठ तिष्ठ गिरिमत्यवकर्ण्य।
निर्भयः सपदि विस्मयचेता लोचने स परितः प्रजिधाय।।२५।।

आवृतं कनकपिङ्ग-जटाभि वींतिहोत्रमिव[८] हेतिपरीतम्।
भानुभास्वरमनोकहमूले स व्यलोकत तपस्विनमेकम्।।२६।।

अस्तभीरिह तपस्तपतेऽसौ स्यादवश्यमवदातचरित्रः।
तं प्रणम्य मनसेति यियासुं सव्यसाचिनमुवाच तपस्वी।।२७।।

प्राणिनां[९] हृदपि नेह विरुद्धं युद्धनाम न पुनः श्रवणेऽपि।
मुञ्च कार्मुकमिदं यदिदानीं कर्म्मणासि परमा गतिमाप्तः।।२८।।

क्वायुधानि परजीवहराणि प्राणरक्षणविधिः क्व तपस्या।
अप्रतीतविषयं ववसि त्वं नाकिनामलभतो धनुषा ते।।२९।।

प्रेरितोऽपि हसितेति किरीटी ब्राह्मणेन विजहौ न च धैर्यम्।
लोडितोऽपि बहुधाहृदनीभिः वारिधिर्नहि विलङ्घति वेलाम्।।३०।।

उन्मिमील सपदि त्रिदशानां रक्षिणो युगपदक्षिसहस्त्रम्।
अक्रमोपगतं वारिद वल्या? निर्गतं वनमिवाम्बुरुहाणाम्।।३१।।

वासवोऽयमिति सम्भ्रमनम्रं व्याजहार तनयं पुरुहूतः।
तां धृतिं वहसि पार्थ कृतार्थः स्याः प्रकाममचिरेण ययुः त्वम्।।३२।।

किञ्च निश्चलमना कुरुभक्तिं भर्त्तरि क्षितिनरेन्द्रसुतायाः।
स प्रसादमुपयाति यदीशो हन्त तुष्यति तदा जगदेवः।।३३।।

---

८. वीतिहोत्रम्
९. प्राणिनाम्

इत्युदीर्य गतवत्यमरेशे तप्तुमारभत पाण्डुकुमारः।
सानुरागमिव स पुरसिद्ध्यै पूर्वजन्म तपसैष सिषेवे।।३४।।

मानसे वसदुमापतिचूडा चन्द्रचञ्चदमृतैरिव तृप्तः।
स त्रिरात्रनियमं दधदेकं मासि मासि पतितैकपलाशी।।३५।।

पार्वतीपतिमहः परिचिन्ता पूरितः स षड्डुपोषणपूर्वम्।
मासमन्यमनयदिपदधानः पारणां स्वयमुपस्थितपर्णैः।।३६।।

अन्यमास्युपवसन्नथ पक्षं वन्यवृक्षकुसुमादुपजातैः।
पावनैः पवनदत्तरजोभिः पारणामकृत पाण्डुतनूजः।।३७।।

अन्वरन्ध्रि वदनोदरयातं वायुमेव पिबता विजयेन।
नासिकाशिखरनिश्चलदृष्टिः स्वस्तिकासनकृताथ समाधिः।।३८।।

★पार्थिवं पयसि पायसिमोजस्योजसं मरुतिमारुतमङ्गम्।
सैहरन् नभसि नाभसमात्मन् युत्क्रमेण पुनरेष ससर्ज।।३९।।

शोधयन्[10] मरुति देहमथाग्नौ प्लोषयन् विहरन्नमृताब्धौ।
नाडिकात्रितयसूत्रनियोगादैन्द्रजालिकवदासकृदासः ।।४०।।

आविरासनवकोमलमेरुः पारिजातकुसुमेनकठोरा।
सुन्दरामृतनदीहृदिजिष्णोरिन्द्रनीलमधुराथ धरित्री।।४१।।

---

१०. शोषयन्?

★ अत्र भूतशुद्धिप्रक्रिया विवेचितास्ति –
व्रतसमये भूतिशुद्धिविधानं कृतम् । यस्य द्वौ भेदौ स्तः ।
(क) संहार : – संहारेऽस्मिन् व्रती (१) पृथिवी (२) अप (३) तेजस् (४) मसत् (५) आकाशशक्रचेति, एतेषां पञ्चभूतानां यथाक्रमं एकस्यापरस्मिन् विलयन् संहरति। (स) सृष्टिक्रमः – सृष्टिक्रमेऽस्मिन् व्रती विलयितेषु पंचभूतेषु विपरीत क्रमेण प्रत्येकं पुनः प्रकटयति। इयं समग्राप्रक्रिया भूतशुद्धिरिति कथ्यते। यया मानसीशुद्धिस्यजायते।

तत्र कोकनदशोणसुधाब्दौ पद्मरागपुलिने रमणीयम्।
मुग्धकोकिलमधुव्रतजल्पं कल्पपादपवनं स ददर्श।।४२।।

पञ्चशासतरुपञ्चकमध्ये कृङ्कुमार्द्रकुरु विन्दनिकेतम्।
देहलीतलविलीनमहेन्द्र ब्रह्ममुख्यसुरमेष ददर्श।।४३।।

तत्र धामपरिमाणविहीनं रामणीयकरिरेक दवीयः।
ज्ञानगोचरमगोचरम् क्षणे रोचमानमवलोक्य ननाम।।४४।।

चिन्तयन्निति चिरन्तनमीशं स्यामलाचल इवायमथान्यः।
आतपैर्नवतमाल इवोच्चैरर्जुनोऽभवदनर्जुन[11]कीर्त्तिः।।४५।।

कान्तिविन्दवः प्रथमवारिधराणा युत्रेये? ऋषि तस्य निपेतुः।
दुर्मतारिव सतामुपकारास्तत्र ते सपदि शोषमवापुः।।४६।।

जातरुपलतिकाभिरिवोच्चै इन्द्रनीलशिखरादिव तस्मात्।
नीरदातुरिवधीरताडिदिभिः पिङ्गलाभिरुदभावि जटाभिः।।४७।।

जैष्णवे वपुषि नन्दुकलानां कन्दलीन[12] च रवेः करधारा।
शैत्यमातपमथ प्रतिपत्तुं[13] चक्षमे परमतेजसि मग्ने।।४८।।

सङ्गरादिव पुरा स तपस्यन्नर्जुनो न विरराम समाधेः।
निर्भरञ्चिरवियोगविषण्णा धारणैव विजयं परिरेभे।।४९।।

भास्करादिव निदाधकरालात् कल्पशेषगहनादिव बह्नेः।
दुस्सहानि नरदेवमुनीनामर्जुनादथ महांसि निनीयुः।।५०।।

---

११. बलक्षो धवलाऽर्जुनः (इत्यमरः)
१२. मेघसञ्छन्नस्य (इत्यर्थः)
१३. न?

वीक्ष्य दुःप्रसह[१४]मर्जुनतेजः कम्पमान मनसोऽथ मुनीन्द्राः।
तत् समस्तमवनम्य शिराध्या-माशशंसुरदितस्तुतिवाचः।।५१।।

तानुवाच विहसन्नथ चञ्चल मौलिचन्द्रकलयेव विसृष्टम्।
जाह्नवीजलभरादिव जातं तापहारि वचनामृतमीशः।।५२।।

मा विधत्त मुनयो हृदि खेदं वेद मानसमहं नृपसूनोः।
नैषवोऽभिलषति[१५] ध्रुवमोकः पाकशासन पदेऽपि विरक्तः।।५३।।

यात तिष्ठत[१६] सुखं वरदानै रभ्युपेत्य शमयेयमहान्तम्।
घर्मभानुकिरणावलितप्तं भूरुहं जलभरैरिवमेघः।।५४।।

प्रस्थितेषु मुनिषु त्रिपुरारिः पार्वतीसहित एव सहर्षम्।
लीलया कृतकिरातशरीरः पाण्डुनन्दन तपोवनमगात्।।५५।।

पक्षिणो विचलिता मृगयूथैः प्रस्थितं परित एव भयार्तैः।
शूलपाणि-मृगयामवलोक्य त्यक्तवानथ वनं पवनोऽपि।।५६।।

किन्नरीभिरभितः परिवीतः स्फारयन्धनुरधिज्यमगात्।
अन्वितः शरवरेण भवान्या शम्बरारिविजयी विजहार।।५७।।

★तत्र मूक इति शूकरवेषो राक्षसो ऽधिज्यमैक्षत हन्तुम्।
अर्जुनोऽपि सवितर्कमधिज्यं चापमाशु विचकर्ष कराभ्याम्।।५८।।

---

१४. दुष्प्रसह्य?

१५. जात तिष्ठत्?

★ स सन्निकर्षमागम्य पार्थस्याक्लिष्टकर्मणः।
मूकं नाम दिते पुत्रं ददर्शाद्भुत दर्शनम् ।। (म.व.पं. ३९ ७)
वाराहं रुपमास्थायतर्जयन्तमिवार्जुनम्।
हन्तुं परमदुष्टात्मा तमुवाचाथ फाल्गुनः ।।८।।

किन्नरेशविजयावध साहं-कार-लङ्कथनजातविवादम्।
शूकरं युगपदेव कराभ्यां जघ्नतुः कुलिशबुद्धिकराभ्याम्।।५९।।

मच्छरेण निहितोऽ[17]यमिति द्वावाततज्य धनुषावतिकोपम्।
ज्यावरोपहसिताम्बुदगर्जा वृच्चकैश्चकरतुः शरवर्षम्।।६०।।

क्षीणबाणविचयोऽथ किरीटी चिन्तया चिरमदह्यत चित्ते।
बाणवर्षणमृते वृषकेतोः कः सहेत मम नाम जगत्याम्।।६१।।

सत्वरं परिहताक्षयतूणः खड्गपाणिरभिशम्भुमधारवत्।
प्रेर्यमाण इव शौर्यभरणाकृष्यमाण इव किन्नरहासैः।।६२।।

किन्नरेण गलितासि रथायं पात्यमान कृत गाण्डिवचापः।
त्र्यम्बकं रणमहैक धुरीणः फाल्गुनो हृदि जघान भुजाभ्याम्।।६३।।

ताडितोऽयमुरसा वृषकेतो - रप्रकम्प शतकोटिनिभेन।
छिन्नपक्ष इव कज्जलशैलो मूर्च्छितः क्षितितले निपपात।।६४।।

अर्जुनः सपदिसम्भ्रमबुद्धश्चिन्तयंस्तमकिरातमरातिम्।
अक्षयन्नुपहरन् कुसुमानि व्याकृतिस्तुतिरपूजयदीशम्।।६५।।

स स्वदत्त कुसुमानि किरातस्योत्तमाङ्गपतितानि विलोक्य।
सन्निपत्य भुवि पश्यति यावत् तावदाशु गिरिशः[18] प्रचकाशे।।६६।।

ॐ नमस्तुहिनशैलतनूजा बाहुबन्धनपराय हराय।
वर्षतेऽमृतरसैरिव शम्पा शोभिताय शरदम्बुधराय।।६७।।

---

१६. निहतो?
१७. भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः (इत्यमरः)
१८. मेशदर्शित?

दत्तवामतनवे गिरिजायै दग्धकामवपुषे[19] शशिमौले।
जाह्नवीजलमिलन्नयनाग्ने भोगयोगरसिकाय नमस्ते।।६८।।

स्पन्दमुद्रित जगत्त्रितयायो - मैषदर्शितभवप्रभवाय।
ॐ नमः परमकारुणिकाय ब्यालभूषणधराय हराय।।६९।।

भेदवाद - कलहाकुलचित्तैः कोविदैरपरिचेय महिम्ने।
तुभ्यमेव[20] करवैपुरैरिन् ? पर्युदासित तमांसि नभांसि।।७०।।

त्वं विरंचरसि विष्णुरसि त्वं कस्त्रपेत वदन्निति शम्भो।
त्वत्कटाक्षकृपयैव यदेता - वात्मनि प्रणयतो बहुमानम्।।७१।।

इत्युदीर्य पुलकांचितदेहो दण्डपातमवनौ स पपात।
पूरयन्निव दृशोऽमृतपूरैः पार्वतीपतिरवोचदथैनम्।।७२।।

कुलकम :–

पाण्डुनन्दन वरं वृणु तुष्टः शौर्यधैर्यविभवेन तवावहम्।
तेजसा ननु ममासि समानः त्वत् समाः समिति सन्ति न वीराः।।७३।।

दुःसहेन तपसा सहसा च प्रीणितोऽस्मि भवता कपिकेतो।
निर्जरांस्तवमसि संयति जेता क्षत्रियस्तव सहेत बलं कः।।७४।।

त्वं नरो वदरिकाश्रमवासी तप्तवानसि बहूनि तपांसि।
त्वय्युदेति परमं परमोजस् - तावके सहचरे च मुरारौ।।७५।।

तेजसैव भवतोर्जगदेतद् धार्यते द्विषद्वार्य्यते रणे।
हन्त वामुपरिदत्तभरोऽहं निर्भरं गिरिगुहा विहरामि।।७६।।

---

१९. तुभ्यमेव?
२०. दिशोऽमृतपूरैः ?

आयुधानि गिलितानि मया ते तान्यमूनि पुनरेव गृहाण।
अत्र पाशुपतमस्त्रमुदारं दक्षिणान्तरकरे करवाणि।।७७।।

शुलशायक-गदाः शतमाजा-वृद्धमन्त अचिरादिदमस्त्रात्।
दुर्लभं सुरगणैरपि नैतन् - मानवे क्वचिदपि प्रतिपन्नम्।।७८।।

इत्युदीर्य विजयाय दयालुः स्वीयमस्त्रमददात् त्रिपुरारिः।
द्योतयन् वनमहीमुपतस्थे मुर्त्तिमस्तदथ पाण्डुतनूजम्।।७९।।

तत् क्षणे निपतितं सुरपुष्पैः कम्बुदुन्दुभिरवेण बभूवे।
हव्यवाह इव गन्धवहं तत् प्राप्य पाण्डुतनयोऽपि दिदीपे।।८०।।

नाकमाव्रज पिनाकभृदेवं पाकशासनकुमारमुदीर्य।
साकमेष तुहिनाद्रिदुहित्र्या राकया विधुरिवान्तरं धत्त।।८१।।

अथ बरुणकुबेरधर्मराज प्रभृतिसुरैरुपगम्य दत्तविद्यः।
सुरपुरगमनाय सव्यसाची स्वयममरेश निमन्त्रितो ननन्द।।८२।।

तत्रायययावयुतवाजिभिरुह्यमानम्
उद्गीयमान-कलमङ्गलमप्सरोभिः ।
इन्दीवरद्युति महोज्ज्वलवैजयन्त-
मारूढमातलिकिरीटिपुरोद्विमानम् ।।८३।।

इतिश्री लक्ष्मीनारायण कविडिण्डिमराजपण्डितश्रीलक्ष्मीदत्त विरचिते
पाण्डवचरित्रे महाकाव्ये अर्जुन-विद्यालाभो नाम दशमः सर्गः ।

एकादशः सर्गः

[1]यथावदाचम्य पृथात्मजेन प्रदक्षिणीकृत्य कृताधिरोहः।
नभस्तलं मातलिमुक्तरश्मि - रतो रथो वायुरिवाजगाहे।।१।।

वेगी नभस्वानि वारुणेयः शरद्विवस्वानिव दीप्यमानः।
स्वप्नायमानो जनलोचनानां रथोऽचिरादम्बरमारुरोह।।२।।

श्रियं स पुष्यन्नचिरप्रभाणामुल्लरेलभासामतिलोलवेगः।
पथि ज्वलत् कांचनकूटकान्तिः पयोधराणां विचरन् विरेजे।।३।।

स्फुरत् तरक्रूरकरप्रतानं स पुण्यकर्मा समयापि सूरः।
न तापमाप त्रिपथाकणार्द्रैरूद्वीजितः स्यन्दनवेगवातैः।।४।।

रत्नासनासीनपुमङ्गनानि विलोक्य हर्म्याणि हिरण्मयानि।
नक्षत्रवीथीमतिवर्तमानो विसिस्मये पाण्डुकुलावतंसः।।५।।

अनुष्ठानशीतानिल-वीजितानि हिरण्मयोद्यान-सरांसि पश्यन्।
प्रत्येकतारागृहसन्निधाने स कामपि प्रीतिमवाप पार्थः।।६।।

स चन्द्रकान्तैरचितोपकार्य्यं पीयूष-धारा न महौषधीकम्।
उद्यानमिन्दोः कुमुदाभिरामैः सुधासरोभिः सुभगं ददर्श।।७।।

---

१. ॐ इति विलिख्य सर्गः प्रारभ्यते।

नभस्सदां सदनविलोकनोत्सुकं
स विस्मयस्तिमितविलोललोचनम्।
प्रदर्शयन्नमर-निकेतन-श्रियं
शतक्रतोस्तनयमुवाच मातलिः ।।८।।

भूमिष्ठो विजयपरस्परावसक्ताः
ताराः याः कलयति दीपिकानुकाराः।
एतास्तास्तनुमनुकुर्व्वते बधूना-
मेकैकं कनक-निकेतन-वेदिकासु।।९।।

नभो नद्याःकूले सुरविटपिमूले मणिमयी -
रूपासीना वेदीरपि तपति नैदीयसि रवौ।
अतप्ताः सुत्रामीफणितमपि चामीकरवृषी
नियन्ताः श्रेयस्यं तप इति तपस्यन्ति मुनयः ।।१०।।

गङ्गेयं निपतति वामनाङ्घ्रिभिन्ना वल्गन्ती कनकधराधरस्यमध्ये।
एतस्याः प्रतिदिशमुत्थिता गरिष्ठ-प्रोष्ठीनां[२] द्युतिमुदविन्दवो वहन्ति।।११।।

पश्याऽत्र श्रुतिरिव वेधश्चतुर्द्धां निर्याति त्रिदिवतरङ्गिणी सुमेरोः।
एतस्या निपतति यत्र-यत्र धारा सन्यस्तं मुनिमिव पर्वतं पुनीते ।।१२।।

पुरो मेरोः कन्दादियमलकनन्दा विलसता
गिरि-श्रेणीफेणीकृत-सलिलपर्वा प्रभवति।
धनाली-रोलम्बाकुल-तरलकल्लोलदलवा-
न सावस्यां लग्नः शतदलतुलामेति जलधिः ।।१३।।

---

२. प्रोष्ठी तु शफरीद्वयोः (इत्यमरः)

अत्र ध्याननिविष्टधूर्जटिज[3]टाजूटेषु क्षात्कारवत्
पातोत्थायमुदंचदिन्दुदिनकृत् संपृक्तकान्तेस्समम्।
ज्वालापिङ्गलमूषिका सुदहनैऐरावती रौप्यच्छटा
रोचिस्संचयचातुरी तिरयति स्वर्गापगायाः पयः।।१४।।

जम्बूतरुस्तिष्ठति सोऽयमाद्यं जम्बूपदं द्वीपमलम्भयत् यः।
जम्बूनदी यस्य रसैरसारि जाम्बूनदीयन्ति व बल्कलानि।।१५।।

इन्द्रानन्दन सन्ति नन्दनसदः सङ्गीतभङ्गीरणद्-
भृङ्गीनामिह कोमलाग्रविटपैः कण्ठस्पृशां वीरुधाम्।
कुंजे कुंजदुदारकोकिलकुहूकारानुकार-स्वनान्
गायन्तीः परिचिन्वतां यत् कथं कारं कुरङ्गीदृशः।।१६।।

मृदुसुरभिहिमानीगन्धवाहे यदृच्छा
परिपतति[4]निदाघश्लाघनीयाम्बुवर्षे।
सरभसपरिरम्भारम्भसंरम्भलीला
परिगणति कदापि स्पर्धयानेह यूनोः।।१७।।

लवमपि लविताभ्यः नापगन्तावसन्तः
पदमपि न निदाधो गन्तुकामः स्थलीभ्यः।
निमिषमपि तुषारे नेह वापीं जिहासु-
र्विरमति न कदापि स्वर्वधूनां विहारः।।१८।।

भूषणं प्रतिनवं वितन्वते वीजयन्ति ललितेन वायुना।
अत्र कल्पलतिकानतभ्रुवा वालिकर्म्मं दधते यदृच्छया।।१९।।

---

३. कृशानुरेता : सर्वश्रो धूर्जटिर्नीललोहितः (इत्यमरः)
४. परिपतति?

अत्र कल्पलतिकैव कल्पते सम्विधातुमभिलाषमंजसा।
मन्त्रणाय सुहृदां बधूजनः केवलं सहचरीमपेक्षते।।२०।।

चुम्बकम्★ :–

कौशेयं हरति हठेन कौतुकिन्यो
यादृच्छन्नव-नवमम्बरं दधत्यः।
कामिन्यः प्रणयिनि नोद्यसाहसेऽस्मिन्
उत्कण्ठामुषितहृदो भवन्ति दिष्ट्या।।२१।।

विचिन्वतीनामिह-पुष्पवाटी - मुरष्कलाचीनदृशामचोलम्।
यदृच्छया लभ्यपरिच्छमाणां पश्यन्ति शासान्तरिता युवानः।।२२।।

प्रसूनमवचिन्वती विगलितांचलाऽस्मिन् प्रिये
पराचि सकचग्रहं वदनचन्द्रमा चुम्बति।
मनागचिररोचिषो रुचिरतामयन्ती रता-
वतारयति कातरावरतनूरलूनं तमः ।।२३।।

बदूटिकाभिर्विटपाग्रपुष्पम् - अभ्यर्थिता एव नमन्ति वृक्षाः।
वोढानवोढामिति लोभयिष्यन्नस्मिन्रति-व्याकुलतामुपैति।।२४।।

यादृच्छास्तनयित्लवो गमयितुं न त्रासमत्रासते
सङ्कल्पोपगतः स्पृहापदमलङ्कारोऽपि नारोहति।
कम्पन्ते कुपितानि केवलमयाकर्त्तु कुरङ्गीदृशां
कर्णालङ्करणीकृताः सुरगणैः साकूतकाकूक्तयः ।।२५।।

★ युग्मकम् इति प्रतिभाति

मेदिन्याः कलयति गन्धमादनोऽयं
काश्मीरारुणित नितम्बजबिम्बलक्ष्मीम्।
कैलासो हिमगिरिरप्यमूविधत्तः
पाटीरद्रवधवलस्थलाभिराम्यम् ।।२६।।

तटभरमभितः परीत्यजम्बू-सरिदिह चुम्बितरत्नसानुपत्रा।
कलयति कनकाचलस्य लक्ष्मीं मणिपटलीव महासरोरुहस्य।।२७।।

हेमपङ्कजपरागमंजरी - पिंजरीकृततरङ्गदोलया।
रिङ्गदुन्मत्तमरालमण्डलं मानसं हरति मानसं पुरः।।२८।।

अस्मिन् वारिविहारे विचरन्त्यः कनकपद्मिनीविपिने।
वृन्दारकैः कथंचन परिचीयन्ते कुरङ्गदृश?।।२९।।

परिपतति पयोधौ पश्चिमे पश्य यक्षः प्रतितटमुटजानामन्तरा कांचनानाम्।
स्फटिकसरणिवट्टे रत्नबद्धैस्सुमेरो-रधिजलधि विहर्तुं गन्तुकामस्य मन्ये।।३०।।

उद्यानं पुरतो सितोदसरसीमन्दानिलान्दोलित-
प्रेङ्खा'लस्तव कावनप्रलतिकं? बैभ्राजमुद्भ्राजते।
विन्यस्य श्रियमग्रतः षड्ऋतवः सर्वामहंपूर्विका-
पूर्वं बिभ्रति बीरुधामिह परीरम्भाय सम्भावनाम् ।।३१।।

विपुलाचले चलदलस्यतले दयितानिहाङ्क शयितानबलाः।
उपवीजयन्ति चरितैः शिरयो? रति वारुणीमदवर्षीदवशाः।।३२।।

---

५. शिविका याप्ययानं स्यात् दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम् (इत्यमरः)

अङ्के सुप्तैराननपङ्केरुहशोभा-

लोभादत्र स्वामिभिरेताः स्तुतगीताः।

गायं-गायं पीतयदृच्छा मधुराः

कुंजे-कुंजे कोमलवीणाः कलयन्ति ।।३३।।

अयं निषदपर्वतोऽयमपि पारियात्रोगिरिः

प्रतीतिरिति सर्वतः स्फुरति वस्तुतस्तूच्यते।

अदस्थल? युगं मुवो ज्यति सीम्नि वङ्क्षु[६]रसा–

वमुष्य कथमन्यथा तरलतावहारायते? ।।३४।।

कलयति विपुलाद्रेरिन्द्रनीलातपत्र -

द्युतिमति निरवीषच्छायमश्वत्थवृक्षः।

उपचरति पताकाचातुरीमत्र वङ्क्षु -

रियमुपरि शिलानामुच्छलन्ती समन्तात् ।।३५।।

सुरतरुकुसुमाधिवासवेणिः प्रतिपद सत्वरमुत्थिता स्खलन्ती।

अभिसरति सहेलम्बुराशिं कनकगिरेरियमुत्तरेण भद्रा।।३६।।

सावित्रवनमिदमत्र नाम पुंसा - मुत्रासं जनयति मानिनीदृगन्तः।

विभ्राणादृष्टमुपनीविमुष्टिबन्धं सन्तापं वितरति केवलं नवोढा।।३७।।

अरुणकिरणमंजरी पिंजरीभूतभित्तिः क्वचित्

विधुकरधवलैक पार्श्वः सुपार्श्वः पुरस्तादयम्।

क्वचिदुपचितकुङ्कुमक्वापिकर्पूरपुरोज्वलो

नयनसुभगसा - -र्द्ध[७]नारीश्वरीयां श्रियं पुष्यति।।३८।।

---

६. वङ्क्षु – आकाशगङ्गेत्यर्थः।

७. सुभगसार्द्ध?

त्वचोदुकूलं कुसुमानि भूषां दलानिशय्याममृतं फलानि।
तरोःपरागाः सुरतेऽङ्गरागं केलिक्रियाकेवलमत्र यूनोः।।३९।।

बन्धः केशकलापपर्व नियतं व प्रान्त[८] मालोकिते
कामं भङ्गुरता - रोद्धृतपदा मन्दा गतिः पादयोः।
एतत्र स्तनयोः परं मृगदृशामन्योऽन्यमुत्पीडनं
बक्रे केवलमुष्णता विकृतयो भावे स्थिताः सात्त्विके ।।४०।।

बटोऽयं सौरभ्यैः सुरविटपिवाटीवनभुवो
बधूटीराकर्षन्नपि कुसुमघाटी कुतुकिनीः।
तलस्निग्धच्छायास्वपदमरजायामुखविधोः
सुधावीचीनीचीकृतहिममरीचीरमयति।।४१।।

उत्फुल्लहेमससीरुहभद्रसीमा
वीचीमरुद्भिरूपवीजयतोऽलसाङ्गीः।
केलीकलाभिरिह यारुधिभङ्गवन्तो?
मन्दारमूलशयिता दयिताः सुराणाम् ।।४२।।

भद्रं सरस्तदिदमत्र मुदा तरुण्यो
विद्याधरप्रियतमास्तरलोर्म्मिमाले।
शैवालकोमल-विसंष्ठुलकेशपाशां
लीलां बहन्ति नव विद्रुमकन्दलीलाम् ।।४३।।

द्रुतमन्थरं सरलसाचिसंचारिणी
कलहंसकलकूलितमानमन्ती मुहुः।

---

८. प्रान्त?

गुरुसद्मनो नववधूरिव प्रागसौ
कनकाचलात् प्रियमुपैति शीतार्णवम् ।।४४।।

चैत्ररथं वनमेतद् - सं[९] केलिकृतामिह सिद्धवधूनाम्।
वल्गुविलासविलोकनलुब्धा नैव मनागृतवो निरयन्ति।।४५।।

राजत जातरूपरुचिभिः प्रतिमिलित-
वलब्चन्द्रदिवाकरांशुरुविरासु विहृतः।
उत्फुल्लकुमद्वतीकमलिनी मधुरमधु पिबन्
मन्दरकन्दरासु विहरन्निह सुरतिजनः ।।४६।।

उपरमभूदजस्त्रं वारिक्रीडाविलोलवधूजनः
तरलितमसम्पद्ये पद्मे विलम्बिमधुव्रतः।
अरुणकिरणश्रेणीशोणीकृतां वियतः श्रियं
सरसलहरिः कासारोऽसौ वहत्यरुणोदकः ।।४७।।

इह पतति ध्रुवं भ्रमणखिन्नतुरङ्गमण्डली जवात्
पुनररुणप्रतोददलित सपदि क्रमते यदा तदा।
कमलवनप्रबोधिकिरणः कुरुते कुरुविन्दकन्दली-
परिचितरोधसः सुपर्थं परिपतन्तिनवाम्बुधिश्रियः?।।४८।।

सुवर्णकलशाभिराममुकुलो [१०]कूलकमनीयपल्लवमयः।
अयं विजयते कदम्बविटपी महाध्वज इव मन्दरगिरेः।।४९।।

---

९. दजस्त्रम
१०. दुकूल

इह सम्मील दर्पाङ्गआ बाल-कदम्बं पिबन्ति सिद्धयुवानः।
पुलकांचिताः कपोला वेपथु- भाजां भवन्ति हरिणार्थिनाम्।।५०।।

आश्लेषेऽपि[11] स्तबकितलतिकाः कुंजलीनाः कुवलयनयनाः।
नूनं न स्युः परिचयविषया नो रोमांचः प्रथयति यापिताः।।५१।।

स्वपल्लवश्रीरतिपल्लवोऽपि पूर्वस्सुमेरोरयमव्यपूर्वक।
शैले नवोढापरिधानबद्धं कठोरमेकं जठरे[12]बिभर्त्ति।।५२।।

पायं-पायं तदिहमधुस्वच्छन्दं
गायं-गायं विचरति रामायूथे।
मन्दं-मन्दं बहति कदम्बामोदे
गन्धर्वाणां फलति तपः सौभाग्यम्।।५३।।

देवकूटोगिरिः पारिजाताटवीं
पर्यटन्ती सुरबधूटीरयम् ।
शीकरैः सिंचति प्रस्फुरत्कांचना-
धित्यका पातिनोनिर्झरादुत्थितैः ।।५४।।

प्रत्यन्तक्षितिभृच्छन्द्रः पुटदलीनिस्यन्दिमन्दाकिनी-
माध्वीकेन चतुर्दिशं कुलगिरीनपत्राणि सन्नार्द्रयन्।
मध्ये कामपि कर्णिकारुचिमयं पुष्णाति हेमाचलो
यामासाद्य वसुन्धराकमलिनीसौभाग्यमाविन्दति ।।५५।।

---

११. आश्लेषे
१२. पिचण्डकक्षी जठरोदरं तुन्दम् (इत्यमरः)

गङ्गाप्रसूतिजगदेक[१३] परायणस्य
नारायणस्य पबमेतदिह ध्रुवाख्यम्।
कल्पावसानरजनीशतजागरूको
यत्र ध्रुवो यतमना यजते मुकुन्दम्।।५६।।

प्रविशति समण्डलमसावुद्धिं
बिबुधनदी भगीरथहूतेव पुरः।
किमपि कपर्दसङ्गमललामतरा
भवति मयूख[१४]मालिमिलिता पुनः ।।५७।

आवासोऽयं धर्म्मराजस्य पापै-रस्मिन् नैवोपद्रवाः सन्ति जन्तोः।
साचाराणामत्र पीयूषधारा-साराकाराः सङ्घटन्ते विहाराः।।५८।।

नैर्ऋतं नगरमेतदीक्ष्यतामत्र निर्ज्जरसमानधर्म्मिणः।
शान्तिधर्मनिरता निशाचरा यागभागमुपभुंजते मुदा।।५९।।

वारुणी विजयते च पूरियं चारुणीह सरसि प्लुताचिरम्।
वारुणीभरइवारुणीकृता दारुणीयति न चारुणीरुचिः।।६०।।

क्रीडाशैलादुपरि परितो दोलतां पादपानां
पत्रे पात्रे विमृरसुधा? वायवीया पुरीयम्।
धृत्वा धृत्वा जहति कतिधा बालवापी विहारे
सीमन्तिन्यो हिमकरमहं पूर्व्विकापूर्वमस्मिन्।।६१।।

अलकाफलकायमानशोभा नगरीणामभितो गरीयसीनाम्।
अबला नवलास्यविह्वलाङ्गीः सरलाः काननवायुभिः करोति।।६२।।

---

१३. जगदेक

१४. मयूख

इदं नगरमग्रतो नगनरेन्द्रकन्यापतेः
किरीटनवचन्द्रमा किरणकुट्टकुट्टालकम्।
इहैव गृहदेहलीषु बहलचण्डदण्डाहति-
त्रुटन् मुकुटकोटिभिर्मधवदादिभिर्भूयते? ।।६३।।

पुरमिदममललस्य पल्लवशुचि[१५] मकरन्द-हवींषि जुहोति।
इह तरुपटली पठन्त्यसौ मधुकरवाचऋचः तपस्यति।।६४।।

इति ब्रुवाणे पुरहूतसुते कुन्तीसुतं विस्मयफुल्लनेत्रम्।
रथः प्रभामण्डलपूरिताशोऽ मरावतीगोपुरमारुरोह।।६५।।

तस्मिन् ददर्श भ्रमरावलिभिः कादम्बिनीभिः परिवीतगण्डम्।
दन्तैश्चतुर्भिश्शिखरैरुपेतुं कैलासमैरावतमिन्द्रसुनुः।।६६।।

सुवर्णसोन्धिकगन्धवाहैरुद्वैजयन्तीमथ मन्दशीतैः।
आपृच्छ्यमानं सहकारवाटी कुंजेषु कूजत् कलकण्ठनादैः।।६७।।

दिशः परागैः सुरपादपानां सिन्दूरपुरैरिव पूरयन्तीम्।
आचारलाजानिव पुण्यगन्धीं मन्दाकिनीं वारिलवान् किरन्तीम्[१६]।।६८।।

विसृण्वतीं वर्त्मनि कोमलानि कल्पद्रुमाणां कुसुमानि पार्थः।
विवेश नारीविधिमातियेय – मुदाहरन्तीममरावतीं सः।।६९।।

---

१५. तरुपल्लवेन रचितमेकः पात्रविशेषः, लोके चम्मच इति ख्यातम्।
यनाहुति काले अग्नौ धृतं निक्षिप्यते।

१६. किरन्तीम्।

मणिकनकदुकूलालङ्कृतोपान्तवृक्षा
दधिमधुघृतकुल्याः पायसीः पीनवापीम्।
दिशिविदिशि विमानैरन्विताः कामचौर -
रयमथ सुरवीथी : प्रेक्षमाणोननन्द[17]।।७०।।

सिक्तामस्परसा[18] मुखामृतरसैर्मङ्गल्यगा[19] थां पिबन्
नृत्ये कन्दलकोमलस्य वपुषो लावण्यमास्वादयन्।
गन्धर्व्वैः सहसापुरन्दरगिरा प्रत्युपगतः सादरं
प्रत्यीभूय रथादवातरदथ द्वारे बलारेरयम् ।।७१।।

इति श्री लक्ष्मीनारायणराम कविडिण्डिम राज पण्डित श्री लक्ष्मीदत्त विरचिते पाण्डवचरिते महाकाव्ये स्वर्गवर्णनोनाम एकादशस्सर्गः

---

१७. नन्द?
१८. अप्सरसाम्
१९. माङ्गल्य

द्वादशः सर्गः

पशुपतिभुजपीडयाकठोर कुलिश[1]विधारण कर्कशेन शुक्रः।
प्रगतमथ किरीटिनं करेण स्वयमुपवेशितमासने ममर्श।।१।।

स्फुरदधरपुटेन मूर्ध्नि चुम्बन् वलयितवारिभिराननने च नेत्रैः।
प्रतिलवसा (?) वन भ्रमेनमिन्द्रः पुलकभृताद्दृढमालिलिङ्ग दोष्णा।।२।।

दशनयन-हुती शतक्रतोस्तं विनयविनम्रतया विराजमानम्।
जलधरमधुराकृतिं पिबन्ती कुलमणिमेष परिश्रमस्य लेभे।।३।।

अथ बलमथनस्य[2] शासनेन त्रिदशगणैः उपढोकनैः किरीटी।
उपचितरतिभिः प्रकीर्णकल्प-द्रुम-कुसुमांजलि पूजयाम्बभूवे।।४।।

क्षणरुच इव चारिका विलोलाः स्तनभरभङ्गुरकोमलोक्तिलेशाः।
विचकरु रम्भतानि तस्य नेत्रे मधुभरमप्सरसः श्रुतावधासुः(?)।।५।।

चिरमिति सुकृतानि दर्शयित्वा तममरनायक ता श्रियो मघोना।
परिणतमिव विश्वकर्मशिल्पं भवनमसावधिवासयाम्बभूवे।।६।।

सुरपतिचरणोपसर्पणेन प्रतिपदमध्यवसन्नमोधमस्त्रम्।
क्षणमिव दिवसावसानसारणैवी द्रुपदसुतामुखचन्द्रिकाचकोरः।।७।।

---

१. ह्रादनी वज्रमस्त्री स्यात् कुल्लिं भिदुरं पविः (इत्यमरः)
२. इन्द्रस्य इत्यर्थः

गुरुमथ सुरवारसुन्दरीणां प्रतिनवपंचमवेदसंहितासु[३]।
अधिगतकुलिशासनं विडौजाः सहचरमस्य चकार चित्रसेनम्।।८।।

गतिलितमवेक्ष्यनासिकानां भ्रमरकपल्लवकापि पाणिपादं।
गतिवति[४] विजये[५] कदाचिदंको-बलविजयीति जगाद चित्रसेनम्।।९।।

नयनकुमुदमद्य फाल्गुनीयं बहुतरमाश्रय उर्व्वशीमुखे त्वम्।
कुरु मम वचसा तथा यथेयं सहचर पुण्यलता भवेदमुष्य।।१०।।

[६]सुरपतिवचसेति चित्रसेनः सपदि समुल्लसदाननः प्रतस्थे।
त्वरयतिगुणदूतिका विनीतं नवमनुरञ्जयितुं न कस्य चेतः।।११।।

अयमथ समुपेत्य तामवोचत् वदति दृशा न वयं च सुन्दरि त्वाम्।
अनुसर कुरुवंशबालचन्द्रं तव नवयोवनं कैरवानुरूपम्।।१२।।

अयमिह समुदात एव चन्द्रो ननु युवयोः प्रणयं दिदृक्षमाणः।
उपवनमपि बालचूतवल्ली-मदकलकूजितकोकिलाभिरामम्।।१३।।

विचरति मुनिभिः प्रदत्तसत्त्वा नव-कुसुमांजलि-सौरभाधिवासः।
हिमकरकरपिंजराधुनानः सुरसरितो लहरीरयं समीरः।।१४।।

इति गुरुवचनादकम्पयत् सा - सकृदवर्तंसकमेकमुत्सुकापि।
प्रकृतिरियमबाललोचनानां प्रियमुररीकुकुते न जातवाचा।।१५।।

गतवति निजवृन्दनायके सा वपुरुदवर्त्तयदाशु कुङ्कुमेन।
अमृतसरसि मज्जानावसाने यश इव मन्मथमाददे दुकूलम्।।१६।।

---

३. सङ्गीत विद्यासु इत्यर्थः

४. गतवति

५. अर्जुने इत्यर्थः

६. गतवति?

कुवलय-कुलदैवतेक्षणायाः कुचभुवि कुङ्कुमकुंजरा विरेजुः।
कथमपि परिधाय ते परीयुः कुसुमशरासनकेलिहेमशैलम्।।१७।।

मृगमदमकराङ्कुरः कुरङ्गीरुचिरदृशः व्यरुचत् कपोलदेशे।
ध्वज इव मकरध्वजेन जेतुं भुवनमधारि सुवर्णवेदिकायाम्।।१८।।

मृगमदनलिनीदलं लिपित्वा विरचितचन्दनचारुपुण्डरीके।
अलकमणिमिवालयः कपोले हरि हरि भङ्गुरयाम्बभूवुरस्याः।।१९।।

स्मरजयमिव[७] यक्षकर्दमेन[८] भ्रमरविलङ्घितबालमंजरीकम्।
द्रुमलिखदपाङ्गसीम्नि तस्याः स्वयमिव जातमशक्यलेखमालिः।।२०।।

कुवलयललिते कुरङ्गलोले नयनयुगे नचिर प्रसाधिकापि।
कृतमिह नवकज्जलं नवेति क्षणमवधारयितुं शशाक तस्याः।।२१।।

तडित इव पयोधरेषु धीराः सुललितभक्तिसखीजनेन बद्धाः।
सुरतरुकुसुमस्त्रजो विरेजुः कुटिलदृशो नियतेषु कुन्तलेषु[९]।।२२।।

शिरसि तरुणताम्रचूतचूडा - रुचि रुरुचे कुरुविन्दपुष्पमस्याः।
तदलिक विलसत् पटीरधारा किसलयकोमलदाडिमीप्रसूनम्।।२३।।

उपहसदतनोः प्रवाददूनत् वयवदनाहितकर्णिकारलीलाम्।
श्रवणयुगमबालकुन्तलाया निहितहिरण्यमकर्णिकं विरेजे।।२४।।

---

७. समरजयमिव?

★ अत्र कविना हरिशब्दस्य वादद्वयः प्रयोगः आश्चर्य प्रकटयितुमिव कृतः इति प्रतिभाति। यथा शिवशिव इति प्रयोगः ''भामिनीविलासे'' पण्डितराजेन जगन्नाथेन कृतः - हरेरद्य द्वारे शिव शिव शिवानां कलकलः।

८. कर्पूरागुरुकस्तूरी कवकोलैर्यक्षकर्दमः ।। अमरकोष ।।
कुङ्कुमागुरकस्तूरी कर्पूरं चन्दनं तथा।
महासुगंधमित्युक्तु नामतो यक्षकर्दमः ।।आप्टे)

९. चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः (इत्यमरः)

ग[१०] मनकनककन्दलीवतंसा वुतवहता[११]मभिरामतां सुदत्याः।
तदलिमपरयोरपाङ्गभासौ वहति गतागतवर्त्मनी किमस्याः।।२५।।

नयनधवलिमाङ्कुरं कृशाया यश इव [१२]पंचशरस्यतूणबद्धम्।
अमृतलवाननस्य कुसुमो गजमौक्तिकं विरेजे।।२६।।

कुवलयदलनामकोमलः धीः किमपि ललाम लसन्तिका लसन्ती।
सुरमधुलिहतीव कण्ठकम्बा-वलिपटली रुरुचे शुचिस्मितायाम्।।२७।।

अलभत परमागमानताभ्यां स्तनयुगलीमवलम्ब्यमौक्तिकाली।
यदियमुपजहास जह्नुकल्यां[१३] कनकगिरेः पतयालुमुल्लसन्ती।।२८।।

उपहितकनकाङ्गदे निकामं★ भुजरति रभतुः प्रियम्बदायाः।
न खलु पुनरसूतिरोदधाता? मिति तलितादिवमन्मथेन बद्ध्वै?।।२९।।

तडिदतितरला तथैव लक्ष्मी-भवतु न तद्वदसावपि न्यधामि।
इति वपुषि दिवः प्रसाधनस्यात् गुरुमाभरणं प्रसाधिकाभिः।।३०।।

अथमणिमुकुरे विलोक्य शोभां विजयमुपैतुपैतु तं वरे सा।
अपि नियतमलङ्करोति भूषामभिमतसङ्गम एव सुन्दरीणाम्।।३१।।

अथ गमनकृदागृहीतहाला परिमलभाविक जम्भमणि[१४]वक्ता।
कलरवरमणीय-पूर्ण-लीला मदकलपाटलपूर्णमान[१५]नेत्रा।।३२।।

---

१०. ग ११. उदवहता
१२. कन्दपोदर्पकोनङ्गः कामः पंचशरः स्मरः (इत्यमर)
१३. जाह्नवीम् इत्यर्थः
★ भुजावति बभतुः इतिप्रतिभाति।
१४. जम्भमाण
१५. घूर्णमान

मदकलकलहंसपादलीला-गतिपवननुपुरनादसावधानम् ।
मुखरितमणिमेषलानुकूजन्[१६] मृदुरसनागुणदोलितावतंसा।।३३।।

रतिरमणमहीपतेः पताका मुनि-जनमोहनचापसम्पदो वा।
अपि रणकुचशैलमेषलायाः[१७] सुभृतमनोहरसत्वरानदी वा।।३४।।

हिमकरकरजालवारिराशे - लंहरिषु लोलपदाभिरामलक्ष्मीः।
सुरपथसुकृतस्य चारुचंचत् किसलयवर्षणशालिनी तडिद्वा।।३५।।

हरितनयमनोमृगस्य शाङ्ग - पदमिव मन्मथसिंजिता पतंजी।
भवनमुपजगाम कातराक्षी सभयसम्भ्रममुत्थितस्य जिष्णोः।।३६।।

कुलकम् :-

सविनयवरिवस्यया गृहीता स्वरितमना इव तेन विस्मितेन?
उपरमति रथाङ्गनाम बद्धौ प्रतिनवाम्बुजमण्डलीव मल्लौ।।३७।।

अथ सभयमुवाच सव्यसाची किमिव तवागतिरित्यसाविदानीम्[१८]।
अपि कथय शचीपतेररातिः क इव कृतान्तरसः पुरीमरौत्सीत्।।३८।।

स परिकरनिस्त्रौदितेन्द्रवाचः पुनरिदमाप्सरसो जगाद जिष्णुः।
त्वमसि यदवलोकिताद्य भूयः शृणु कथयामि तदायुषः सवित्रि[१९]।।३९।।

गुरुरसि पुरुहूतमानिनीये महिषि पुरुरवसो बुधात्मजस्य।
इति दृढ़मपि न कर्तृत्वमासीत्? कथमपि चेतसि विस्मयो ममाऽभूत्।।४०।।

---

१६. मेखला
१७. मेखलाया
१८. विदानीम्
१९. हेमातः इत्यर्तः

तव चरणयुगे पतामि मूर्ध्ना विरमतु पौरववंश-कल्पवल्ली।
न च खलु भवती विधातुमर्हत् - यतिगहनेन यथा शिशोः परीक्षाम्[२०]।।४१।।

नृपतनयमथोर्व्वसी बभाषे[२१] नहुषमरुत्तपुरःसरा नरेन्द्राः।
सुकृत [२२]णतीरुपासते नः किमपि न दूषणमित्थमाप्तवाचः।।४२।।

इति शतमपि बोधितो मम त्वं नियतिनियोजितमन्मथव्यथायाः।
चटुगिरमपि[२३] ना ददासि तस्माद् भव नटवृन्दपतिनपुंसकर्नवम्।।४३।।

अयि जननि कुरुष्वमामजस्त्रं धृतचरणा ब्रुवतेति फाल्गुनेन।
अवनतमभिशप्य तं स्फुरन्ती तडिदिव सा नभसा[२४]तिरोबभूव।।४४।।

तदुषसि विजयादितात्मशापा-न्त्रिशिचरितं विनिशम्य चित्रसेनात्।
अनुरहसमुवाच धर्म्मराजा - दवरजमित्यनुगृह्य देवराजः।।४५।।

न खलु तव समत्वमाप्त वीर अपि मुनयः किमु संयमे नरेन्द्राः।
अपि वदति महांसि पंचधा ते रणभुवि पंचदशस्युरायुधानि।।४६।।

अपि यदशपदुर्व्वसी निशि त्वा - मनुगुणमेव कृतं तदप्यवेहि।
यदपरिचितवासवत्सरे स्याः तव नरसिंह परं नपुंसकत्वम्।।४७।।

शतमखवचनामृतैरमीभिर्विजयहृदो निरवापि शापतापः।
अहितमपि हितायते हि जन्तो - र्भवति स चेदनुकूलदृग्वि[२५]धाता।।४८।।

---

२०. परीक्षाम्
२१. बभाषे
२२. सुकृत परिणतीः
२३. गिरमपि
२४. नभसा
२५. वृद्ध

सुरसदसि किरीटिनो निरीक्ष्य श्रियमुपविष्टवतस्तदर्धपीठे[२६]।
उपचितबहुविस्मयं कदाचित् मुनिमथ लोमशमित्यवोचदिन्द्रः।।४९।।

ऋषिरपि न पुराण एष नारायण सखा[२७] परिचीयते नरः किम्।
अयमजनि ममौजसैव कुन्त्यां भवभरतारयितुं बसुन्धरायाः।।५०।।

अयमिह मदधीतशस्त्रविद्यां-भुवमभियास्यति पंचवत्सरेण।
विरहविमनसः सुजन्मनोऽस्य द्विजवर कारय सर्वतीर्थयात्राम्।।५१।।

चलितवति तथेति लोमशर्षा-वमरपतिविजयं मिथो बभाषे।
भवदनधिगतं न तावदस्त्रं जगति न कोऽपि भवत्समानधन्वा।।५२।।

जलधिमधि वसन्त्यहो निवातो-त्तरकवचा वरदर्पिताः सुराणाम्।
असमसमरसामरस्य धोरा[२८] दनुतनुजाधिकृतास्त्रिकोटयस्ते।।५३।।

जलनिधितलमध्य[२९]-दानवाना-महमपि नाध्यवसामि तत् जेतुम्।
कुरुकमलरवे कृतान्तराकार-निगण[३०]जुषः कुरुषे यदि त्वमेतान्।।५४।।

सुरहृदयविदूरमेघनादः कुरुकुलजो नमुचेरथारिमूचे।
मयि चलतिरणे[३१] तव प्रसादा[३२] नहि नहि कश्चिद्दृते पिनाकपाणेः।।५५।।

भृतकमनुगहाण वज्रपाणे परिजनमादिश निर्ज्जरादिराज।
ननु भवतु निवात[३३] वर्म्मनारीनयनजलैरमरावतीतुषारा।।५६।।

---

२६. तदर्धपीठे
२७. सखायः
२८. धोराः
२९. मध्य
३०. निगड
३१. चलतिरणे
३२. प्रसादात ३३. निवात

यदि वदसि तदानिवातवर्म्मा सुरतृणराजमहाटवीमकाण्डे।
विदधतु शतकोटयशोरिस्त्रा-मति धनगाण्डिव उवेगबाणाः।।५७।।

प्रमुदितमनसा पुरन्दरेण त्रिदशगणैः[३४] सह संशितप्रशस्तिः।
सुरमुनिभिरुदीर्णवीर्यऋभी रथमथमातलियुक्तमारुरोह।।५८।।

जलनिधिमथनञ्चक्रमन्तश-चरमिव पर्वतमण्डलंदधानम्।
मुखरितमतिवेगमुन्नमद्भिः सलिलधरैरिव पर्वत तरङ्गैः।।५९।।

सलिलमुपरि वाडवाग्निधूमे - मुकुरमिव प्रतिबिम्बित त्रिलोकम्।
वियति स मुहुरुतिक्षपन्तम्मूर्मीन् - नमरनदीं परिबिम्बमानलोके।।६०।।

युग्मकम् –

ज्वलदिव वडवानलस्य कीला - पटलमनेन निवालकंचुकानाम्।
पुरमतिरुचिरं पयोधिमध्य-भ्रमितलवृत्तिविलोकयाम्बभूवे।।६१।।

पवनजवनमिङ्गितेन जिष्णोः रथमथमातलिरन्तराभ्रमीणाम्।
नगरमभिसुरद्विषां प्रहृष्यन्[३५] मन इव साहसि पातयांचकार।।६२।।

श्रवणकटुरथाङ्गनेमिनादाः सपदि शतक्रतुसङ्गिगरो सुरेन्द्राः।
रणरभस सहोढकंचुकास्ते धृतधनुषः पुरगोपराणिवत् (?)।।६३।।

सरधनुः -[३६] करवालकुन्तकोण द्रवणपरशुधसर्व्वणासिपुत्री।
अपिमृगपरिधेलिका दधानाः निरगुरतिक्रमदंशिता रथैस्ते।।६४।।

---

३४. त्रिदगणैः
३५. प्रहृष्यन्
३६. शरधनु

नर इति कुपितोत्तराः किमन्तो विपुलशिलाशकलानि गर्जमानाः।
अहमहमिकया कपीन्द्रकेतुं गिरिमिव नीरधराः परीयुरेते।।६५।।

दुरधिगमरयप्रचक्र मे तत्[३७] स्खलित रणोद्धतदैत्यचक्रवालम्।
सपदि सभयनुन्नपारसीको रथमुदचालयतामरेन्द्रसुतः।।६६।।

द्रुतमिति वदतां गणो सुराणां गहनमवादयदक्रमेण वाद्यम्।
प्रलयधनघटा[३८] भ्रमेणसिन्धा - वचलनिभा जलजन्तवो ववल्गुः।।६७।।

दिशिदिशि चलतोऽचलानिवाथ त्रिदशरिपूनुपलोत्किरः किरीटी।
स्फुरदिषुकुलयत्रविद्युदुच्चै-रविरलया शरधारया ववर्ष।।६८।।

युगपदमरवैरिणोऽतिदृप्ता विचक्रुरर्जुनमायुधैरशेषैः।
अगणितशितबाणवर्षणस्तात् स च दशभिर्दशभिः शरैरविद्ध्यत्।।६९।।

विजयविशिखवृष्टिभिः[३९] कृतार्त्वीं दनुतनुजानवलोक्य तद्रथाश्वाः।
हयहृदयविदा महेन्द्रयन्त्रा विदधुरमीषु सुराहतिं प्रयुक्ताः।।७०।।

चलति रथतुरङ्गचक्रवाले प्रबलजवेन जलं लजाविलाक्षः।
समरभुवि विलोक्य मातलिस्तं गतिभिरचालयद् बद्धतानथाश्वान्।।७१।।

अपरिहरिहयात्मजस्य दैत्याः कृतशरतोमरशक्तिवृष्टयस्ते।
ज्वलदनलसमानशस्त्रतेजो धनतमसं तमसं वितन्यनेदुः।।७२।।

अथ सविधि धनंजयप्रयुक्तं सुरेन्द्रपति श्रियमाधराख्यमस्त्रम्।
अगिलदविकलं समग्रमेषां पितुरिव नाम कुपुत्रकः शरोधम्।।७३।।

---

३७. प्रचक्रमे तत्

३८. घटा

३९. विशिख

गिरिभिरुदकिरन्नकाण्डमाया समरसमुल्लसिताः समन्ततोऽमी।
प्रलयघनघटाऽवट्टशार-ध्वनिभिरयं भिद्धरैश्चकर्त्त शैलान्।।७४।।

विचक्कुरसुराः शिलानुकारा विजयरथो परिधीव नीरवराः।
अथ सरभस गाण्डिव[४०] विप्रयुक्तैरुपशमिता विशिखैर्विशोधनैस्ताः।।७५।।

अयमुपरतवारिवृष्टिमायां द्रुमवनजानिलवर्षिणःसुरेन्द्रान्।
जलधरधरणीधरायुधाभ्या - मलमभवत् प्रतिकर्त्तुमेव दिव्यम्।।७६।।

अथ युवकादिसर्वमाया? समरमहारसिक्कैः सुरद्विषदि्भः।
मरुदनलशिलामयीषु वृष्टिः क्षरिवत[४१] माविरभूत्तमः प्रतानम्।।७७।।

करगलितहिरण्मयः प्रतोदो विमुखतुरङ्गनिवर्त्तनासमर्थः।
सभयमद्य परामृशन् कराभ्यां तमसि धनंजयमामिलीनयन्ता।।७८।।

स्मयमुखितमेकमिन्द्रपुत्रं? पुनरिति जागरितो जगाद सूतः।
अगममहमहो न जातु मूर्च्छा-मपि बलिसम्बरवृत्तसङ्गरेषु।।७९।।

हरितनयहयाः स्वयं निवृत्ताः किमिह वरैक रणेषु पौरुषेण।
समरभुवि निवातकंचुकाना-मिह मघवा न पलायितः कदा वा।।८०।।

नृवर तत्र गृहाय गन्तुमर्हन् तमिति वदन्तमुवाच सव्यसाची।
क्षणमिह पुरुहूतसुत पश्य त्रिदशविरोधिषु मद्भुजावदानम्।।८१।।

पार्थो जल्पन्नेवमेवैनमुच्चैः कोपाविष्टोऽवादयद् देवदत्तम्।
यैनाकाण्डे मातलेभींरुदस्थाद् वृद्धिं नीता दानवानां मनःसु।।८२।।

---

४०. गाण्डिव
४१. क्षारिन् वर्षतुः इत्यर्थः

कृष्णः[42]कर्णोपान्तमाकृष्य मौर्वीं-मैनद्रीमौज-[43]सम्मोहनीमस्त्रविधाम्।
सद्यो व्यद्योतिष्ट यस्याः त्रिलोकी सादध्वंसे दानवध्वान्तमाया।।८३।

द्रागुद्योतः सद्य एवान्धकारा पारावाराः सर्व्वतो जातवेदाः।
एतन्माया दानवैस्तन्यमाना मोहिन्येका मोहयामास तास्ताः।।८४।।

तिस्त्रः कोट्यो दानवा नष्टमायाः कुर्व्वाणास्ते बाणवर्ष रथस्थाः।
पर्याबभ्रुः पाण्डुपुत्रं पयोदा यद्वद्वातोन्दोलिताः शारदार्कम्।।८५।।

कौन्तेयास्त्रज्वालया [44]दह्यमाना युद्धयत् प्रायाजग्मुरन्तर्द्धिमेते।
तत्रापश्यद्धवंसिनीतस्य विद्यां बाणैर्दैत्यध्वंसिनी नाम जज्ञे।।८६।।

गम्भीरध्वनिविजयोग्रवाणवृष्टि-कृत्तानाममरविरोधिनां शिरोभिः।
तस्तार? क्षितिमभितस्तथा यथाऽभूत् प्रस्थातुं पदमपि तत्र नावकाशः।।८७।।

धावन्तः समरपराङ्मुखाः नगर्य्या - निर्यान्ति स्वपरिकैः समेत्य यावत्।
बीभत्सोर्विशिखशिखी जवेन तावत् भस्मान्तं पुरममरद्विषां चकार।।८८।।

तेषां सर्वत एव पर्वतरवामावृण्णुतामायुध-
श्रेणीमध्यमहान्धकारगहने मग्नोमनाङ्मीलितः।
सद्यस्तत्र विहस्तमातलिगिरा स्वरूपमारोपितः
शम्बैरेष सहस्त्रशः समिदलङ्कृत्त्तचकर्त्तासुरान्।।८९।।

नीत्वा संयतिनिर्निवातकवचामूर्व्वीमपूर्वप्रथां।
मा भूयासुरलं विलापविकला विद्वेषिबाला इति।

---

४२. द्रुमजवनानिल?
४३. अर्जुनः इत्यर्थः
४४. मौजस्

गच्छन् वर्त्मनि कालकंजनगरीं दृष्ट्वावियच्चारिणीं
तच्छायानगरं पुरन्दरपुरं प्रत्याकलयय् स्थितः ।।६०।।

सूतात् स्वः प्रथमं तदेव तदसुरैरस्मद्गृहीतस्वना-
दित्याकर्ण्य रणेजगत्त्रयचमत्कर्मण्यमुत्थापयन्।
पौलोमैरपि मोहितः क्रतुभुजां भाग्येन सम्बोधितः
पार्थोधत्त युगान्त पावक इव ज्वालाकरालं वपुः ।।६१।।

दृप्तोऽयमाशु तव पाशुपतेन धोरं-धोरं जगद्विदधता पुनरन्यदेव।
हित्वा हिरण्यकशिपोः पुरि काल कंजान् संजातशान्तिमभवत् सुरमङ्गलेन।।६२।।

आगत्य सत्यतनयावरजः सुधर्म्मा जिष्णुर्जयन्त निकटो[45]पतरं ववन्दे।
आकर्ण्य मातलिमवातरितं तदीयं देवैरशक्यमति विस्मयमाप शक्रः।।६३।।

इति श्री लक्ष्मीनारायण कवि डिण्डिमराजपण्डितकृते पाण्डवचरिते
महाकाव्ये निवातकवचदवद्यो नाम द्वादशः सर्गः समाप्तः ।।

---

४५. निकटो

तीर्थपर्यटनंनाम त्रयोदशस्सर्गः

पाण्डवास्तद्युमस्त्राय गते गाण्डीवधन्विनि।
न दधुः हारमणयश्छिन्नसूत्रा इव श्रियम्।।१।।

तथापि स्नानकाले ते सहस्त्रमयुतं यतीन्।
पुलिन्दवृत्त्या पुपुषुः प्राणानिव दिने-दिने।।२।।

बीभत्सुविरहज्वालां हृदयादिव निर्य्यतीम्।
कदाचिद्वाचमाचष्ट धर्मराजं वृकोदरः।।३।।

अर्जुनेनार्जुनस्तुल्यो द्विबाहुबहुबाहुना।
न यस्य समराय निसमरा अपि के नराः।।४।।

अस्माकमसवो यस्मिन् जयाशावदुपाश्रिताः।
निर्जितानेव जानीमोऽयमाश्रित्य रिपून् वयम्।।५।।

वयं विरहितास्तेन शोच्यास्तावद्बभूविम।
कृतार्थाः सुखिनस्तावत् तव द्यूतेन कौरवाः।।६।।

कुलकम् :–

द्रौपदीं परिभूयापि धृयन्ते धृतराष्ट्रजाः।
मम मर्मव्यथा[1]मेतां धर्मराज निवर्त्तय।।७।।

---

१. व्यया

कुरु बाधाङ्कुशं दूरे दारयामि सुयोधनम्।
गदया कलदीकाण्डं वैतण्ड इव शुण्डया।।८।।

शाधि मां शातये शत्रून् शतकोटि[२]रिव द्रुमान्।
त्रयोदश समाः सन्तु वरमेकदिनाधिकाः।।९।।

क्वदेशास्तादृशो यत्र स नो गुप्तान्नवेत्स्यति।
जाता वसतिरस्माकं नूनमाजीवनं वनम्।।१०।।

अस्तु वा स यदि द्यूते भवन्तं पुनराक्षिपेत्।
किं कुर्याम[३] तदा हन्त वयं जाता वनेचराः।।११।।

प्रियपरि भवारण्य-वासबेलादुदन्वतः।
किरीटि विरहावर्त्तादस्मानुद्धर्त्तुमर्हसि।।१२।।

निवर्त्तय गुडाकेशं केशवं वयमाश्रिताः।
धरणीमरुणीकुर्म्मः शत्रुशोणितधारया।।१३।।

यथारण्यानि शुष्काणि दहत्यनिल-सारथिः[४]।
तथा शातयिता शत्रून् नारायणसमो नरः।।१४।।

धर्मराज वयं कुर्म्मः पुरो जगदकौरवम्।
यजेमहि मरवैः पश्चाद् वसेम वन एव वा।।१५।।

इत्थमुच्छृङ्खलं राजा तमुपाघ्राय मूर्द्धनि।
सान्त्वयामास विनयैराधोरण इव द्विपम्।।१६।।

---

२. शतकोटिः स्वरः शंवोदम्भोलिरशनिर्द्वयोः (इत्यमरः)

३. कुर्याम्

४. अनिलः सारथिः यस्य सः अग्निरित्यर्थः।

अधीरो धीर मा भूयाः स्वल्प मेवानुवर्त्तते।
ग्रहीष्यसि महीमेतां निहन्तासि सुयोधनम्।।१७।।

न वक्तुमुत्सहे सत्यं मर्षयत्स्वतिवादिनम्।
जरस्वनिरजातारिं बृहदश्वः समाययौ।।१८।।

राद्धं वन्यसपर्याभिः कृतासनपरिग्रहम्।
जगाद निजदुःखानि स राजन्यो मुनेर्मणिम्।।१९।।

धूर्तैरहारयल्लक्ष्मीं द्यूते दारानधर्षयत्।
अपातयदरण्ये च किं मे दैवमरुन्तुदम्।।२०।।

द्यूते सराज्यपरित्यागः प्रियाधर्षणमग्रतः।
किरीटिविरहोऽरण्ये हन्त निष्करुणो विधिः।।२१।।

युग्मकम्[५] :–

यमादुद्विजते कर्णो यस्मिन् प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
योस्ति विजयस्तेन विना जीवन् मृता वयम्।।२२।।

तमुवाच मुनिः किं स्विद् धर्म्मराज प्रमाद्यसि।
उदारचरिते पुंसि पापमायाति को ज्वरः।।२३।।

यतो धर्मस्ततः कृष्णो यतः कृष्णस्ततो जयः।
तन्मा वृथा कृथाश्चिन्तामंजसा धर्ममर्जय।।२४।।

---

५. युग्मकम्?

अक्षवत्यां हृतश्रीकः पुष्करेण पुरा नलः।
दमयन्त्या सहायासीदेकवासा महावनम्।।२५।।

वनेऽपि विहगव्याजे रक्षैरेष हृताम्बरः।
उपवास कृतास्तस्याः पर्युक्षादर्द्धमम्बरम्।।२६।।

आक्षिप्तः कलिना चुम्बन् श्रमसुप्तप्रियामुखम्।
न स्थातुमशकन्नाथ प्रस्थातुमपि सक्षणम्।।२७।।

लोकपालानपि त्यक्त्वा तं वृता या स्वयंवरे।
विहाय गहने सुप्तां तामप्येष पलायितः।।२८।।

दावादप्युद्धृतेनापि कर्कोटिन[६] निरूपितः।
पुनः स प्राप तपसा दमयन्तीमिवश्रियम्।।२९।।

विधेयाः पुनरेवैते भ्रातरोऽकातरोद्यमाः।
साक्षाल्लक्ष्मीरियं कृष्णा चीयते च तपः सदा।।३०।।

रिपूनाजौ विजेतासे पुनस्साम्राज्यमाप्स्यसि।
आयव्ययमयं विश्वं समाश्वसिहि मा शुच।।३१।।

पौरुषे विफलप्राये दैवे विषममास्थिते।
उदयेऽनुदये वापि न मुह्यन्ति मनीषिणः।।३२।।

नित्या नियतिनायिन्यो न सन्ति सुखसम्पदः।
मन्यन्ते पुरुषार्थत्वमतस्तासां न गौतमाः।।३३।।

---

६. एको नागः नारदस्य शापवशात् यदायं दावाग्नावपतत् तदा स राज्ञा नलेन बहिर्कृतः अनेनोपकारेण नलं दंशयित्वा एवं कृतं यस्माद् कलिना पीडा न भवे। (प्रा.च. कोशे पृ. ११७)

देवनैः स पुनर्ज्जीयाद् भयालुरिति चेतसि।
अहं ददेऽक्षहृदयं गृहाण कुशली भव।।३४।।

तथेति सहसोत्थाय शुचये धर्म्मसूनवे।
दत्त्वाक्षहृदयं दान्तः पुनरन्तर्दधे मुनिः।।३५।।

अर्जुनस्य तपः श्रुत्वा यात्रिकेभ्यो यतःस्ततः[७]।
पाण्डवा जग्मुरुद्योतं तमिस्त्रमथ कौरवाः।।३६।।

पादाङ्गुष्ठचरः पर्णभोजी पवनपावनः।
श्वेतवाह[८] इति श्रुत्वा बभुस्ते स्मितरोदिनः।।३७।।

कदाचिदागतो राज्ञा पृष्टस्तीर्थानि नारदः।
क्रमेणावेद्य सर्व्वाणि कोन्तेयमुदकण्ठयत्।।३८।।

गते सुरमुनौ धौम्यमाबभाषे युधिष्ठिरः।
प्रसादात्तव तीर्थानि द्रष्टुमुत्कण्ठते मनः।।३९।।

अवश्यं वयमभ्यस्तदिव्यशस्त्रं धनंजयम्।
द्रक्ष्यामो भावमुत्थाप्य नोपेक्षेत कदापि सः।।४०।।

रणे कर्णहविष्मन्तमस्त्रजालं वनानिलम्।
शमयिष्यन्ति[९] नाराच-धाराः कृष्णपयोमुचः।।४१।।

कर्णभीष्मकृपद्रोणाः सन्तु दुर्योधनादृताः।
महारथान् बहुतृणं गणयामि किरीटिनः।।४२।।

---

७. यतः ततः।
८. अर्जुनस्य विशेषणम् (आप्टे)
९. शमयिष्यन्ति?

नावलम्बामहे शान्तिमिह तस्मादृते वयम्।
तीर्थ-पर्यटनोत्कण्ठा ततः संजायतेतराम्।।४३।।

तमुवाच ततो धौम्यः कथं ताम्यसि धार्मिक।
द्रष्टासि ननुतीर्थानि लब्ध्वासि बसुधामिमाम्।।४४।।

आजगाम तयोरेवमेव सम्भाषमाणयोः।
दिवाव्योमतले सोमशङ्कामुत्थाप्य लोमशः।।४५।।

तं देवतमिवाभ्यर्च्च्य धर्मराज सहानुजैः।
ऋषिपादाम्बुना चान्तः कृतांजलिरभाषत।।४६।।

अद्य सुप्रातमस्माकं युष्मच्चरणरेणुभिः।
तीर्थदर्शनसोत्कण्ठ्या हन्त तनूकृता? क्ता वयम्।।४७।।

जानीमस्सत्यमस्मासु कृपया यूयमागताः।
तथापि मादृशो धृष्टानाशया कर्त्तुमर्हथ।।४८।।

उदवोचदर्षि पार्थ दृष्टे भवति भावये।
कृताहरिकिरीटिभ्यामथ नेयमनुग्रहः।।४९।।

अधीताशेषदिव्यास्त्रः कृतकर्म्मादिनौकसाम्।
सङ्गीतमदुनाधीते चित्रसेनाद् धनंजयः।।५०।।

एकदैकासनासीनाविन्द्रकृष्णा[१०]वुदीक्ष्य माम्।
ऊचतुः पाण्डवानेत्य ब्रह्मन् तीर्थानि दर्शय।।५१।।

---

१०. अर्जुनस्य पितृकृतन्नाम यथाविदधे कृष्ण इति प्रथां पिता। अस्यैव १७.२६

तदुत्तिष्ठ तपः सूनो महिष्या च सहानुजैः।
अद्य मे नैमिषारण्ये वसतिस्तव रोचते।।५२।।

नत्वाथलोमशव्यास धौम्यनारदपर्वतान्[११]।
पाण्डवाः सह पांचाल्या ते तथेतिप्रतिस्थिरे[१२]।।५३।।

अथामी गौतमीस्नाता नैमिषारण्यवासिनः।
पथि प्रयागमासाद्य वेदमीयुः प्रजापतेः।।५४।।

कथयन् तीर्थमहात्म्यं[१३] दर्शयन् पुण्यमाश्रमम्।
लोमशश्चारयामास पृथिव्यां पृथिवीपतिम्।।५५।।

त्रासयन्ती रयरवैः पापानि स्मरतामसौ।
हसन्ती फेनपटलैः कर्मकाराणिमज्जताम्[१४]।।५६।।

दशन्ती नाकनिश्रेणी श्रियमुत्तुङ्गभङ्गिभिः।
विशन्ती सिन्धुमंहांसि[१५] हन्तुं गुप्तानिरहंसा।।५७।।

पातालसौधपटली या नभो मल्लिमालिका।
भुवो मुक्तावली सेयं भाति भागीरथी पुरः।।५८।।

शृणु नदन्ति गिरस्तस्य[१६] दक्षिणोदधिवेलया।
पश्यन्नगर हर्म्याणि प्रभासमगमन्नृपः[१७]।।५९।।

---

११. एको महर्षिः यस्योल्लेखः महाभारताभिधाने ग्रन्थे एकत्र एवमस्तित्वति। लोमशस्योपसंगृह्य पादौद्वैपायनस्य च। नारदस्य च राजेन्द्र देवर्षः पर्वतस्य च ।।म.भा. व.प. ६१.२४

१२. प्रतस्थिरे।
१३. माहात्म्यम्
१४. निमज्जताम्
१५. महांसि
१६. तस्या
१७. मगमन्नृपः

परस्परपरीरम्भ सहर्षस्त्रवदस्त्रवः।
राम[18]कृष्णपुरोगास्तं वृष्णयोऽपि समाययुः।।६०।

पाण्डुपुत्रैस्सपर्यासु कृतासु वनचर्य्यया।
जगाद लाङ्गलधरो धीरगम्भीरया गिरा।।६१।।

अहो दुर्योधनो भाति सीदतेषु युधिष्ठिरः।
धर्माधर्मविधेयत्वे हन्त संशेरते बुधाः।।६२।।

न कृष्ण भूतये धर्मो न चाधर्मो क्षिपत्तये।
पश्य दुर्योधनो राजा धर्मराजोऽजिनौम्बरः।।६३।।

युग्मकम्[19] (?)

कथं जीवन्ति भरताःकथं भीष्मो न कुप्यति।
कथं वा स्तः कृपद्रोणावाजातारौ वनस्थिते।।६४।।

चक्षुषैव न हीनोऽयं प्रज्ञयापि दुराशयः।
पुत्रो विचित्रवीर्यस्य प्रव्राजयति पाण्डवान्।।६५।।

एतावति परिक्लेशे कुप्यन्नेष वृकोदरः।
निर्जेष्यति कौरव्यानवश्यमिति मे मतिः।।६६।।

अथ सात्यकिरित्यूचे सन्तु सत्येन पाण्डवाः।
अस्माभिर्हतकौरव्यैः सौभद्रः क्रियतां नृपः।।६७।।

---

१८. रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः (इत्यमरः)
१९. अजिनं चर्मं कृत्तिः (इत्यमरः)

नीलाम्बरे चमूपाले चक्रपाणौ च नेतरि।
सुरानपि जिगीषामः[२०] किं पुनः कुरुपांशुलान्: ।।६८।।

शैनेयस्यापि वासाद्य साध्वसाधुविवादिनः[२१]।
यादवानुद्धतारम्भानभाषत गदाधरः ।।६९।।

युष्माकं यादवा नेदं दुष्करं किन्तु पाण्डवाः।
अन्यबाहुजितां भूमीं[२२] न भोक्ष्यन्ति कदाचन।।७०।।

गदा भैमी शरा [२३]जिष्णोःसुमत्याः कुन्तमप्यसिः।
यत्र धर्ममयो राजा जयः तत्रैव निश्चितः।।७१।।

नहि खद्योतविद्योत[२४] सुदर्शानि सुखानि ते।
प्रभवेद्धनुः स्थिरीकर्त्तुं रताः पापेषु कौरवाः।।७२।।

दुर्योधनो दुरन्तेन कुलस्यान्तो न केवलम्।
प्रायो निक्षत्रियप्राया क्षितिरेव भविष्यति।।७३।।

इदानीं कर्त्तुमाहमिमो[२५] वयमापृच्छ्य पाण्डवान्।
सहायाः समये स्याम बहु सम्प्रत्यसाम्प्रतम्।।७४।।

यादवेषु प्रयातेषु पश्यन् तीर्थानि पार्थिवः।
समीपेन सरस्वत्या[२६] ययावुद्दालकाश्रमम्।।७५।।

---

२०. जिगीषामः?
२१. साध्वीतिवादिनः
२२. भूमिम्?
२३. सद्योत
२४. अजिनं चर्म कृत्तिः (इत्यमरः)
२५. मर्हामः
२६. पयोष्णी एका नदीति लोके विश्रुता।

प्रदक्षिणमिति क्षोणीं [२७]कृतवन्तं युधिष्ठिरम्।
जगाद लोमशः सोऽयं पुरतो गन्धमादनः।।७६।।

गन्तव्या बदरी तावन्नरनारायणाश्रमः।
दुर्गमाशिवयोर्मार्गे कथं राजन् गमिष्यसि।।७७।।

पार्थिवे गमनोपायं चिन्तयत्यथ वर्त्मनि।
समोह-द्रौपदीं दृष्ट्वा वातवृष्टिमर्यंभसः।।७८।।

अवालम्बत पांचालीमथ दोर्भ्यां बृकोदरः।
तरूणां मूलमालम्ब्य तस्थुरन्ये निमीलिताः।।७६।।

रक्षोघ्नीभिरुदीर्णाभिः सह धौम्येन लोमशः।
ऋग्भिः प्रशमयामास तमो भाभिरिवारुणः।।८०।।

एत्य भीमसुतोनाथ हिडिम्बीं तनयेन ते।
स्वैरमैरावतेनेव निर्ज्जरा नभसोहिरे।।८१।।

गङ्गाम्बुसिक्ततुलसीविपिनालवालं
बालाभिरामहरिताहरितावलीकम्।
आचारवन्त इव मङ्गलमापुरेतो
गीतं द्विजैर्बदरिकाश्रममश्रमेण।।८२।।

इति श्री लक्ष्मीनाथ कृते पाण्डव चरिते महाकाव्ये तीर्थ पर्यटनं नाम त्रयोदशः सर्गः।

---

२७. गन्तव्यः

★ ते समाश्वासयामासुराशीर्भिश्चाप्यपूजयन्।
रक्षोघ्नाश्च तथा मन्त्रांजपुश्चक्रुश्च ते क्रियाः
।।म.भा.व.प. १४४.१६

अथ चतुर्दशः सर्गः

वदान्यशीला बदरीवनस्थे मंनस्विनस्ते मुनिभिः समेत्य।
चिरं चकोरा इव फाल्गुनेन्दा-रनुस्मरन्तः समयं विनिन्युः।।१।।

शतैर्दलानां दशभिः स्फुरद्भिः सहस्रभानोर्वहदाभिराम्यम्।
सुधाकणोत्थत्रसरेणु-रेणु-प्रणीत सम्पद्गुणकेसरौघम्।।२।।

नभस्वतानीतमुदारगन्धि सुवर्णसौगन्धिकमाप्तवत्या।
तथान्यदाप्तुं प्रिययोपरुढ़ः कदाचिदीशानदिशा प्रयातः।।३।।

गदां भुजेनोद्भ्रमितां दधानः सुर्णदण्डातपवारणाभाम्।
भ्रमत् समूलद्रुमपातजातैः विरोरुवातैरभिनुद्यमानः।।४।।

अरण्यवासव्रतदुःस्थितायाश्चिरं प्रियायाः प्रियदोहदार्थी।
तदा तदासाद्य मदाविलानि वपूंषि पुष्यन्निव सम्मदेन।।५।।

गिरो न शृण्वन् मधुराः पिकानां स्पृशन् नवान् निर्झरिणी समीरान्।
सहैव संचारकृतौ वनान्ते दृशौ च पादौ च हृदा प्रविष्टः।।६।।

विलोचनान्तैर्वनदेवतानां वनस्थलीनामिव लोमहर्षैः।
भयानभिज्ञैर्हरिणैस्समन्तात् कुतूहलादुत्परिवृत्य दृष्टः।।७।।

---

१. मनस्विनीम्

सभासु कौरव्यकृतावमानां मनस्विनीं[1] तामनुरंजयिष्यन्।
किमर्ज्जुनं मांच विना नृपः स्या-दिति त्वरा निर्ज्जित वातरंहाः ।।८।।

सरोज याञ्चाकपटेनकृष्णा[2] प्रदत्तपाथेन रसेन दृप्तः।
करेणुकान्वेषणमत्तनागक्रमेण पुष्यन्नकुतोभयत्वम्।।९।।

लता विकर्षन् कति बाहुलग्ना विहंगयूथानि नयन् दिगन्तान्।
गुहाशयान् जागरयन् मृगेन्द्रा-नसत्त्वचाराणि वनानि कुर्वन्।।१०।।

महोद्धतानापतितो मृगेन्द्रां - स्तृणावधूयं गदयाधुनानः।
करान् गृहीत्वा करिणो विदुरे क्षिपन् भुजङ्गानिव पन्नगारिः।।११।।

तृषैव दुश्शासनशोणितानां उरःस्थली शुष्कतया लधीयान्?।
ततोऽन्वधावत्[3] पवमानसूनुः समानचारो विषमाद्रिभूमीः।।१२।।

कुलकम् –

अतीत्य भूमीः शतयोजनानि सुरवेन[4] पित्रा ह्रियमाण रवेदः[5]।
गभीरनिर्हाद द्वाम्बुवाहो विवेश रम्भावनमेकवीरः।।१३।।

क्षिपन् विदूरं कदलीरुहस्य प्रसह्यधावन्नपयातशङ्कः।
करीव मत्तस्तरसा वनं तत् प्रभंजनस्यात्मभुवो बभञ्ज।।१४।।

विहायसा वारि विहङ्गमानां कदम्बमुड्डीनमुदीक्ष्य भीमः।
जवात् तदेवानुसरस्तरस्वी सरोवरं वीक्ष्य पुरो ममज्ज।।१५।।

---

२. द्रोपदी इत्यर्थः
३. ततोऽन्वधावत?
४. सुखेन?
५. खेदः

विगाह्य कासारमगाधसारः स बाहुतालैरिव संखनादैः।
विसर्पिते पर्वतकन्दरासु जगत्त्रयीमुत्तरलीचकार।।१६।।

निशम्य निर्घात[६]मजातशङ्क-श्चचाल भीमः कदलीवनेषु।
उदात्तवीरोद्धतचेष्टितानां न जातु चेतांस्यवलम्बिते भीः।।१७।।

सुषुप्तिनिश्वासविशालशब्दं ज्वलत् प्रभामण्डलदुर्निरीक्षम्।
बलाहकायामशिलातलस्थं शतह्रदानामिव राशिमुच्चैः।।१८।।

परागभुजस्वस्तिकदत्तमस्त मुदस्तलाङ्गूलकृतोपधानम्।
उदुम्बराडम्बरताम्रगण्डं चलद्भ्रुवं पल्लवचारुवर्णम्।।१९।।

मनागिवाभुग्न शिरः कपोलं कृशोदरं मांसलमंसकूटे।
वलक्षदंष्ट्रां विकरालवक्त्र-मशोकशोभाकरकेशरौघम्।।२०।।

निरुद्ध्यपन्थानमथो शयान-मुदीक्ष्य शाखामृगमेकमग्रे।
भीयादवी विद्रुतसिंहयूथैः स सिंहनादैः ककुभो बिभेदे।।२१।।

स किंचदक्षणा[७] मधुपिङ्गलेन प्लवङ्गमः पाण्डुसुतं निरीक्ष्य[८]।
गिरा हसन्त्यारसितिं घनानां दरस्मितो विस्मितमेनमूचे।।२२।।

६. निर्ह्राद
तुलीनीयानि एतानि पद्यानि -
विद्युत्सम्पातदुष्प्रेक्षं विद्युतसम्पातपिङ्गलम्।
विद्युतसम्पातनिनदं विद्युत्सम्पात चंचलम्।।
बाहुस्वरतिकविन्यस्तपीनवृत्तशिरोधरम्।
स्कन्धभूयिष्ठकायत्त्वात्तमुमध्यकटीतटम् ।।म.व.प. १४८.८१,८२
किंचिच्चाभुग्नशीर्षेण दीधरोमांचितेन च।
ह्रस्वोष्ठं ताम्रजिह्वास्यं रक्तवर्ण चलदभ्रुवम्।
अपश्यद्वदनं तस्य रश्मिवन्तमिवोउपम् ।।म.वन पर्व। १४८.८३,८४
७. किंचिदक्षणा
८. निरीक्ष्य

किमित्र मे विघ्नतरानसि त्वं? नरेन्द्रनिद्रासुखमातुरस्य।
उपासिताः किं भवता न[९]वृद्धा मनुष्यजन्मापि न वेत्सि धर्मम्।।२३।।

नरा जघन्या हि वदन्ति हिंसा-मुपद्रवं त्वं कुरुषे मृगाणाम्।
वयं वनेऽस्मिन् पशवोऽपि शान्ता नृणामहो वाचिक एव धर्मः।।२४।।

सः को भवान् धावति कस्य हेतोरितस्ततो वा गहने वनेऽस्मिन्।
अतः परं पर्वत एष यागं विना न शक्येत नरेण गन्तुम्।।२५।।

फलानि तस्मादमृतोपमानि समीपनीतानि सुखेन[१०]भुक्त्वा।
गृहं निवर्तस्व न यक्ष रक्षः - पिशाचभेक्षः पुरतो भव त्वम्।।२६।।

कपिं ततो वायुसुतो बभाषे सुधांशुवंशे जगति प्रसिद्धे।
स भीमसेनः पवनेन पाण्डो-रहं महिष्यां जनितः पृथायाम्।।२७।।

अतः परं गन्तुमशक्यमेव जहीहि मार्गं तदपि प्लवङ्ग।
हठेन कृष्णा[११] हृदयङ्गमं तत् सुवर्णसोगन्धिकमाहरिष्ये।।२८।।

अभाणि भीमः प्लवगेन भूयो न तावदुत्थातुमहं समर्थः।
यदि प्रतिष्ठा सुरसिद्धमद्धा विलङ्घ्य मां गच्छ तदा सुखेन।।२९।।

तमाह भीमो यदि न त्वदीयं शरीरमात्मा परमोऽधिशेते।
तदा विलङ्घ्ये भवता सहैतं गिरि हनूमानिव सोऽहमब्धिम्।।३०।।

---

९. न
१०. सुखेन
११. कृष्णा

विलङ्घिताब्धिं हनुमन्तमेकं विहाय को मे भविता समानः।
भवद्विधं तावदहं निहन्मि परन्तु दीनोऽसि कथं करिष्ये।।३१।।

पुनस्स कौन्तेय[१२]मिदं जगाद बलीयसस्ते किसाध्यमस्ति।
परन्तु न व्याधिभिराकुलेषु जरन्तरेषु प्रहरन्ति वीराः।।३२।।

मदीयमुत्थापय पुच्छमर्द्धं यदृच्छया गच्छ नरेन्द्र सूनो।
न धेहि मे दुर्विनयं तिरश्चः कृपा न केषामथ राजवत्सु।।३३।।

तथेति वामेन भुजेन भीमः सहेलमुद्धर्त्तुमनास्तमेव।
जवेन जग्राह स तस्य पुच्छं शरासनं राम इवेश्वरस्य।।३४।।

मुहुस्तधोदस्तमपि प्रयत्ना-दकम्पनैव स्थितमद्रिसारम्।
तदीयलाङ्गूलमयं कराभ्यां दधच्चिरायेव द्रुणाययेते।।३५।।

महीभृतः पादमिवास्य पुच्छं सयत्नमुत्सारयितुं प्रवृत्तः।
बभार धर्म्मव्रततीः स भीमो मदाम्बुधारा इव वारणैन्द्रः।।३६।।

ततस्तमुत्सृज्य निमीलिताक्षः क्षणं स विश्रम्य विनीतवेषः।
उदंचदाश्चर्य भरावसन्नां बली मुखं वाचमुदाजहार।।३७।।

पतिस्सुराणामथ किं गिरीशो निवेदयाथो हनुमानसि त्वम्।
अनेन किं वाथ गवेषितेन नमोऽस्तु तुभ्यं भगवन् प्रसीद।।३८।।

---

१२. कुन्तीपुत्रः भीमः इत्यर्थः।

वचो निशम्येति[13] वृकोदरस्य क्षणादिवायं परिवृत्तकायः।
मुखं परिष्वज्य तमाबभाषे निवेदय स्वागतमस्ति वत्स।।३९।

वृकोदर ! भ्रातरवेहि सत्यं श्रुतो हनूमानहमांजनेयः।
समीरसूनो भवतेऽनुजाय पथश्शिवान् वक्तुमुपागतोऽस्मि।।४०।।

वसामि गन्धोत्तरमादनेऽस्मिन् गिरौ महर्षि-प्रवराधिवासे।
वरेण दृप्तो जनकात्मजायाः पिबन् सदा रामकथामृतानि।।४१।।

तदध्वनानेन कुरु प्रयाणं सुखेन सौगन्धिकमाहरश्च।
अयं तु पन्थाः सुरसुन्दरीणां विहारभूमिर्नविलङ्घनीयः।।४२।।

प्रणम्य भीमस्तमथाबभाषे शशाम सोऽयं वनवासखेदः।
यदद्य युष्मच्चरणारविन्द-परागपूतानि ममाङ्गकानि।।४३।।

परन्तु यद्रामयशोऽभिरामं वपुस्तवाम्भोनिधि लङ्गनेऽभूत्।
चिरं तदालोकनलोलुपत्वं हरीन्द्र धत्ते हृदयं मदीयम्।।४४।।

न वीक्षितुं शक्यमदस्त्वयेति निषिद्धमप्यर्थय मानमेनम्।
विलोकयेति ब्रुवता हठेन हनूमता संववृधे तदानीम्।।४५।।

तदङ्घ्रिभारावनमत् फणीन्द्र-प्रयास-निःश्वास विलोलितस्य।
समूदमुद्यन्निव वाडवाग्नेः शिषा[14]समूहः · स नभो जगाहे।।४६।।

---

१३. लङ्घने?
१४. शिखा?

अमुष्य यावद्दिवमुत्पतिष्णोः विभाव्य ते केसरवद्विवस्वान्।
बभूव तावत् पतदङ्घ्रिपद्म-पतत्-पराग-प्रकराभिरामः।।४७।।

निरीक्ष्य सम्वर्त्तहुताशराशि-प्रकाशमाकाशतले कपीन्द्रम्।
महातवक्लान्त इव द्विपेन्द्रः पपात भूमौ सहसा स भीमः।।४८।।

प्रबोधितस्तत् क्षणमेव पित्रा ब्रवीति सौम्यो भव यावदित्थम्।
स तावदर्धोदितभानुरन्यो वृकोदरस्याग्रगतो जगाद।।४९।।

यथा मया रामयशोऽर्थमग्रे हतो न लङ्का दहतो दशास्यः।
तथा भवन्तोऽपि यशो लभन्तां-यतो न कौरव्यमृगान् निहन्मि।।५०।।

यथामुना पङ्कजमाहरेति तिरोहितोऽस्मिन् पुनरेष गच्छन्।
ददर्श वापीमलकासमीपे प्रफुल्लकार्त्तस्वरपुण्डरीकाम्।।५१।।

स्फुरत् तरङ्गावलि कौमुदीकं चरत् तुषारद्युति राजहंसम्।
सरस्स हेमाम्बुजतारकाढ्यं शरन्नभः सुन्दरमभ्यनन्दत्।।५२।।

निशाचरान् क्रोघवशाभिधानान्[१५] सरोजपालान् स परापतिष्ठन्
करीवविद्राव्य शुनो मदिष्णु-र्विवेश वल्लीमिव देववापीम्।।५३।।

ततो गदातोमरबाणवर्षैरभिद्रुतास्तस्य विचेष्टितानि।
निवेद्य तस्मै पुरतः स्थितास्ते बभूविरे किन्नरनायकेन।।५४।।

अरण्यवासव्रतकर्षिताया मनः प्रियायाः परितोषयिष्यन्।
करोतु भीमः कमलावचायं न वारणीयोऽयमपारसारः।।५५।।

---

१५. क्रोधवशाभिधानान्?

वचः कुबेरस्य कुतूहलैस्ते समेत्य यावत् कथयन्ति तावत्।
अनातपत्रामिव शत्रुसेना - मफुल्लपद्मामकरोत् स वापीम्।।५६।।

निपीय पीयूषसमानमम्भो विभूयदम्भोलिभुजः स दृप्तः।
विसप्रसूने[१६] विरचय्यभारं बृकोदरः कन्धमधिन्यधत्त।।५७।।

बहूनि पार्थः प्रथमोद्भुतानि विलोक्य कृष्णा कथितः प्रवृत्तिः।
समं यमाभ्यामनुसन्दधाने बकारिमूहे स घटोत्कचेन।।५८।।

सुवर्णसोगन्धिकभारिकं तं विलोक्य राज्ञापथिशङ्कितेन।
वृकोदरोऽसौ निरचायि पश्चा-दिदं पुरस्तादयमाजगाम।।५९।।

युधिष्ठिरो लोमशधौम्यवाचा ततस्सतामेव समेत्य वापीम्।
उपास्यमानो धनदाविशेषं निशाचरैस्तत् तटमध्विरासे।।६०।।

अथाजगाम द्विजवेषधारी जटासुरो धर्मसुतं दुराशः।
वृकोदरेणावगतोऽपि कृष्णा वरान्नभोजीति न वारितोऽभूत्।।६१।।

कदाचनासन्निहिते बकारो स पाण्डवानात्म समाचतुर्थान्।
विधाय पृच्छेय जहार युक्त्या सहैव कामार्थ तपांसि पापी।।६२।।

सरोषमुत्प्लुत्य ततोऽवतीर्णः कृपाणपाणिर्नुकोऽनुजन्मा।
वनानि दूरात् मुखराणि कुर्वं-न्नितस्ततो मारुतिमाजुहाव।।६३।।

समेत्य भीमः सहदेववाचः प्रति प्रणादस्वपशान्त एव।
जटासुरं तत्क्षणमस्थिपेषं पिपेष जम्बूकमिव द्विपेन्द्रम्।।६४।।

---

१६. विस प्रसूनाराजीवपुष्कराम्भोरुहाणि च (इत्यमरः)

विलोकयद्भिर्हदनीवनाली रथप्रयातैः पुनरुत्तराशाम्।
गृहेषु राज्ञो वृष-पर्वणस्थैः कथाप्रसङ्गेन निशैव नीता।।६५।।

अमी तमापृच्छ्य तमोविरामे समीरवेगेन घटोत्कचेन।
वनेऽथ गन्धोत्तरमादने तं समायुयुः पार्थिवमार्ष्टिषेयम्[१७]।।६६।।

वने तदीये सुकृतैकभोग्य[१८] तमेव राजर्षिमुपाचरद्भ्यः।
धनंजयालोकन लोलुपेभ्य न्यबाधतेभ्यो? रुरुवे निवासः।।६७।।

प्रसूनमालामथ[१९] पंचवर्णां विलोक्य भूमौ पतितां नभस्तः।
स्त्रजःशतं तादृशमेवा कृष्णा वृकोदरं सप्रणयं ययाचे।।६८।।

धनुस्समादाय स हेमपृष्ठं गदां च गुर्वीमथ जातहर्षः।
विङ्गमाधीश-समानवेग-सुमेरुतुङ्गं नगमारुरोह।।६९।।

श्रियालतालिङ्गितपादपद्मा-मुदारमुद्यानमुदीक्ष्य भीमः।
मनोहरं तत्र च हेमहर्म्यं विलोकमानो नितरां ननन्द।।७०।।

करालरूपा वनपालकांस्तं विलोक्य रोषारुणघूर्णदक्षाः।
सहस्त्रलक्षाः परिवब्रुरेकं शरत्-पयोदा इव भानुमन्तम्।।७१।।

चिरादुपध्माय च शङ्खमुच्चै-र्विधाय वास्फोटनमंशकूटे।
सहेलमाकृष्य च कार्मुकज्यां जगन्मयूरीं मुखरीचकार।।७२।।

---

१७. आर्ष्टिषेण्
१८. भोग्ये
१९. मथ

क्षणेन विक्षिप्य स यक्षसेनां ननाद भिन्नद्विपसिंहनादम्।
मृगा इवाद्रीरिक योक्षमाणा? प्रदुद्रुवुर्दूरमरण्यपालाः।।७३।।

भ्रमत् गदामर्दितवीरवेर्गं वृकोदरे विक्रममाण आजौ।
सदाकुलीनामिव जम्मुरर्था-स्तदा क्व यक्षा[२०] इति वेद को वा।।७४।।

क्रुधाभिदुद्राव निवृत्य सेन्याच् -चमूपतिर्विद्रुतकिन्नराणाम्।
करेण यूथादिव मत्तनागो मृगेन्द्रशावं मणिमान्नथैनम्।।७५।

चिरादनूनानतिविक्रमेण गदाप्रवाहव्यवसायभाजौ।
नवोकभाजो? नरकिन्नरेन्द्रौ तदा लभेतामितरेतस्य।।७६।।

चिरादनूनानतिरिक्तशिक्ष्यौ परस्परस्पर्द्धनवर्द्धमानौ।
न शेकतुस्तौ युधि निग्रहीतुं बुधौ कथायामिव गाढतर्कौ।।७७।।

सुरासुरैः सादरवीक्ष्यमाणो-महामदामन्दरमुदभ्रमय्य।
मरतकुमारो मुरजिद् गभीरं ममन्थ दोर्भ्यां मणिमेन्तमब्धिम्।।७८।।

प्रयात यक्षा युधि पातयध्वं वृकोदरं नाद्य सहे परार्द्धम्।
हठादधिष्ठाय तदेति यानं मनुष्यधर्मा तमुपाजगाम।।७६।।

विलोक्य कुन्तीतनयं कुबेरः स्मरन्नगस्थस्य वचस्तमूचे।
वृकोदरो यं व्यरमत् सुखा मे क्रुधाति मैत्रावरुणे सहर्षम्।।८०।।

अतो न कुप्यामि कुमार तुभ्यं न जातु भूयाः पुनरेवमग्रेः।
गृहाण पुष्पाणि गृहानुपेहि पुरीमया सीदति गुह्यकेन्द्रः।।८१।।

---

२०. ज इति अधिकः पाठः

नव प्रसूनैरथ पंचवर्णै-र्मनोहराणामवनीरुहाणाम्।
सहेलमुत्पाट्य शर्तं सबिभ्रत् चचाल साक्षादिव[२१] रत्नसानुः।।८२।।

महान्धकारग्लपितनिवेन्दुः निदाघतप्तानिव वारिवाहः।
द्रुमाणि वत् मानववावसन्तः समाजगामाथ धनंजयस्तान्।।८३।।

जयाङ्कुरस्याम्बुधरस्सकालो वपुः कदम्बस्य नवोऽम्बुवर्षः।
सुधाकरो लोचनकैरवाणां मनः सुधांशो शरदा सतेषाम्।।८४।।

विनीतकान्तं विनमन्तमेनं नृपो भुजाभ्यां दृढमालिलिङ्ग।
हिडिम्बहन्तापि जलाविलाक्षः करेण पस्पर्श तमंसकूटे।।८५।

शिरसल्युपाघ्राय करे दधानो यमो नमस्तावदुतोलयत् सः।
विभाव्यमानानन मानताया विलोकयामास न बल्लभायाः।।८६।।

सुरकुसुमसुगन्धौ सर्वतोदिग्विभागे भुवि च परिचितायां कोमलैरम्बुलेशैः।
अथ नभसि निनादैः पूरिते दुन्दुभीनां सुरपतिरपि तेषां मङ्गलायाजगाम।।८७।।

ॐ इति श्री लक्ष्मीनाथ विरचिते पाण्डवचरित्रे चतुर्दशः सर्गः ।

---

२१. इत्यधिकः पाठः।

अथ पंचदशः सर्गः

आलोक्य शस्त्राणि कपीन्द्रकेतोराखण्डलस्याथ गिरा नरेन्द्रः।
आपृच्छ्य सानुग्रहमार्ष्टिषेण[1]मानन्दवान् द्वैतवनं प्रतस्थे।।१।।

आयुस्सुतो यः किल कुम्भयोनेः शापेन कुन्ती न सतामुपेतः।
ध्वान्तं वनोदन्वति कुम्भिराजं जग्राह कुम्भीव सरोषभीमम्।।२।।

धौम्येन सार्द्धं सहसा निवृत्य धर्मोपदेशैरथ धर्मराजः।
आह्वेयरूपान्नहुषं[2] नरेन्द्रं तस्मादिव भ्रातरमुज्जहार।।३।।

द्यां लोमशे यातवति क्षितीशः स्थित्वैकरात्रं विपिनेवराहो?।
आसादयद्[3] द्वैतवनं प्रदोषे व्योमेव शुक्लप्रतिपत्सुधांशुः।।४।।

प्राप्तेन सत्या[4] सहितेन तस्मिन् कंसद्विषा पाण्डुसुताः समेत्य।
धर्म्यान्निषिध्यः सदसीतिहासानाकर्णयन्तो गणरात्रमूषुः।।५।।

राज्यं प्रतिज्ञाय युधिष्ठिराय दामोदरे द्वारवतीं प्रयाते।
पस्पर्शवेणीमथ याज्ञसेनी भीमो गदां गाण्डिवमिन्द्रसूनुः।।६।।

आप्रस्थिते वा विनिवृत्तिवार्तामाकर्ण्य तेषामनवद्यरम्याम्।
आशा समक्षीयत कौरवाणामानन्दलक्ष्मीरिव मन्दमन्दम्।।७।।

---

१. परिशिष्ट भागे दर्शनीयम्

२. आसादयद्

३. परिशिष्ट भागे दर्शनीयम्

४. अन्तरीक्षमेवान्तरिक्षम् इति।

राधेय-गान्धारसुतोपदिष्टो दुर्योधनः पाण्डुभुवः प्रतप्तुम्।
द्वैतं वनं सर्वलेन घोषयात्राच्छलेन त्वरयाजगाम।।८।।

तस्योपकण्ठे सरसि प्रसह्य क्रीडन्ति यावद् धृतराष्ट्रपुत्राः।
गन्धर्वयूथेन परीत्य तावदारेभिरे वारिमुदा विहाराः।।९।।

धृष्टानि गन्धर्वलानि नालं वाचायदा सेद्धममी बभूवुः।
ऐतैरयुध्यन् कुरुराजवीराः कोपेनदेवैरिव पूर्वदेवाः।।१०।।

विद्याधरे वायुभिरुद्धतासु कौख्व्यसेनाधनमण्डलीषु।
कर्णो विवस्वानुदितः सहस्त्रं नाराचरश्मीनभितस्ततान।।११।।

सज्चूर्णित स्यन्दनमद्रिबाणे-गन्धर्ववीरैरुपनीतमार्त्तिम्।
कर्णं विकर्णः स्वरथे निधाय दुद्राव दुःशासनपृष्ठलग्नः।।१२।।

दुर्योधनस्तत् क्षणमन्तरीक्ष[५]माच्छादयन् बाणपरम्पराभिः।
अम्भोधरध्वानगभीरनादः पक्षस्तु काण्डे विमुखीचकार।।१३।।

आतन्य मायामथ चित्रसेन[६] स्सम्मोहमानीय कुरुप्रवीरम्।
बद्धूवाम्बरेणापजहार याव[७] द् युता परार्द्धं नृपकोष्ठपालः।।१४।।

आकर्ण्य रक्षेति तदार्त्तनादं धर्मात्मजे किं किमितिब्रुवाणे।
दुर्योधनस्यानुचराः समेत्य व्यस्तास्तदस्मै कथयाम्बभूवुः।।१५।।

---

५. परिशिष्ट भागे दर्शनीयम्
६. यावद्
७. परिशिष्ट भागे दर्शनीयम्

आज्ञामजातद्विषतो निशम्य चत्वार एवावरजास्ततज्याः।
वैयाघ्रमारुह्य हठेन कृष्टाः काष्ठाः करालैर्ववृधुः शरौघैः।।१६।।

अह्नाय लब्धप्रसरैः कुरूणां युद्धेषु विद्याधरनायकैस्ते।
आकीर्यमाणा विशिखोपलौघैः मैघेर्व्यराजन्निव मेरुपादाः।।१७।।

गन्धर्वसेनाशरगर्भशय्या रह्नाय नीता हसतार्जुनेन।
नोर्ध्वं न चाऽधो न च पार्श्व वासासा सम्भ्रमन्ती लभतेऽवकाशम्।।१८।।

वैमानिकान् व्योमनि धावमानान् कीलालधातुच्छुरितान् किरीटी।
निष्पालयामास शरैः पृथिव्यां दम्भोलिभि र्भूमिधरानिवेन्द्रः।।१९।।

इन्द्रात्मजे निघ्नति कान्दिशीका-मालोक्य सेनामथ चित्रसेनः।
तूर्णं रथेन ध्वजदण्डबद्धदुर्योधनेनावततार भूमौ।।२०।।

तं वीक्ष्य संङ्गीतगुरुं निवात-वर्म्मद्विषस्यन्दनतोऽवतीर्णे।
भीमादयोऽपि त्वरयावतेरुः प्रज्ञापराधो न सतां कदाचित्।।२१।।

तूर्णं तमावेद्य सहोदरेभ्यो गन्धर्वराजं विजयो ववन्दे।
आश्लिष्य दोर्भ्यामथ कालकंज[८] द्वेष्टारमाभाषत चित्रसेनः।।२२।।

सोऽयं शठो मातुलमित्रवाचा युष्मान्वनस्थान् हसितुं प्रयातः।
इत्यप्सरोभ्यः श्रुतवान् महेन्द्रो मामादिदेशास्य विनिग्रहाय।।२३।।

युद्धेमया एष स एव नीतो यत्नाद् रिपुं मोचयितुं क एषः।
तत्राप्यसौ धर्षितवान् सभायां द्यूतेन जित्वा द्रुपदस्य कन्याम्।।२४।।

---

८. भाषत्?

कृष्णस्तमाभाषित[9] धर्मराज त्वं मा विनन्दीः कुरुराजमेतम्।
एवं विधानेव गुरुः सुराणां यद्राज्यलाभाय जगावुपायान्।।२५।।

अस्माकमारण्यकमेव भावि दैवात् तदेतद् वनवासदुःखम्।
किन्त्वेष न स्याद्यदि भारतानां राज्यं भवेदन्यगतं तदानीम्।।२६।।

तस्मादिमं मोचय चित्रसेन क्षोणीमयं रक्षतु धार्त्तराष्ट्रः।
छायामुपाश्रित्य यदास्य बाह्वोर्धिन्वन्ति यज्ञैरमरान् मनुष्याः।।२७।।

प्रीतेन तेनाथ तथेति मुक्त्वा दुर्योधनं पाण्डुसुतान् विनीतान्।
आपृच्छ्य पीयूषरसावसेकैः स्वं वर्गमुज्जीवयिता प्रतस्थे।।२८।।

राजोपचारैरथ पूजयित्वा दुर्योधनं धर्मसुतो बभाषे।
दुर्नीतिमुत्सृज्य कुलक्रमेण त्वं पाहि पृथ्वीं भरतः पितेव।।२९।।

त्वं देवताभिस्सह मा विरौत्सीः ता माननीयाः किलमानवानाम्।
नह्यात्मनीना विकृताः कदाचित् सम्पत्तिमूलं[10] जनतानुरागः।।३०।।

स धर्मजेनेति कृतोपदेशो दुर्योधनः काननमन्यजित्वा।
प्रायोपविष्टः स पुरोपकण्ठे निन्ये कथंचिन्नगरं सुहृद्भिः।।३१।।

राजन् वयं दीर्घमुपद्रुताः स्तदन्यदेवा[11]त्र तवाधुनार्हम्।
स्वपनं निशम्येति गिरोमृगाणा धर्मात्मजः काम्पकमाजगाम्।।३२।।

---

९. हि
१०. तदन्यदेवात्र
★ जयद्रथः
११. गान्धारश्शकुनिरिति।

तस्मिन् कदाचिद् तृणविन्दुकन्या केली सतृष्णांमवलोक्य कृष्णाम्।
आखेटकायावरजैः प्रतस्थे साकं तुषारातिव लोकपालैः।।३३।।

सक्रीडमाणे विपिने त्रिगर्त्त-काशीवराभ्यां सहितः ससैन्यः।
पांचालपुत्रीमथ सिन्धुराजः★ सीतां दशग्रीव इवाजहार।।३४।।

दृष्टवा रजोधूसरितान् दिगन्तान् पश्चात्तथा दत्तदृशस्तुरङ्गान्।
सद्यो निवृत्तः सह सोदरीयैः दध्योतरामध्वनि धर्मराजः।।३५।।

[१२]राधेयगान्धारसुयोधनानां चेतः कदाचिन्न जहाति वैरम्।
एकाकिनी च द्रुपदस्य कन्या वामं वपुःसंस्फुरणाः[१३] किमेतत्।।३६।।

कृष्णा हृता हन्त जयद्रथेन छात्र्या रुदत्या कथिते सतीति।
वीरा रथै रेणुकरम्बितायां दृग्भिः समं प्रापु[१४] रमी दिशायाम्।।३७।।

श्रुत्वा नभस्वत्सुतसिंहनादं सूत्रामसूनो[१५] गुणघोषणां च।
कृष्णां रथात् सैन्धव-चक्रवर्त्ती मूर्च्छामवातीतवदात्मकीर्त्तिम्।।३८।।

काशीपतेः पश्यत एव भीमः सामन्तयूथं गदया ममन्थ।
त्रैगर्त्तमुत्थाय च सिन्धुनाथं तं चौरबन्धं विजयो बबन्ध।।३९।।

---

१२. वपुस्संस्फुरणाः?

१३. प्रायु

१४. इन्द्रपुत्रस्येति।

१५. सुखेन?

★ द्रौपदी चाब्रवीद् भीममभिप्रेक्ष्य युधिष्ठिरम्।
दासोऽयं मुच्यतां राज्ञस्त्वया पंचसटः कृतः ।।म.व.प. २५६/१८

दासोऽहमस्मीति कृतप्रणामं तं पंचधा कृप्तशिखं सखेन[16]।
आनीय कृष्णापुरतः किरीटी मा दुःशला[17] भूद्विधवेत्यमुंचत्।।४०।।

आरादुपस्थाय -विक्त वासे[18] दुःखानि संचिन्त्य सहोदराणाम्।
सन्तप्यमानं मनसा [19]नरेन्द्र-मागत्यकश्चिन्मुनिरित्युवाच।।४१।।

त्रायस्व सर्वस्वमयं मृगो मे वेगेन कर्षत्यरणीं चमन्यम्।
एतौ विना ब्राह्मणकर्मपातो युक्तो न धर्मात्मज पश्यतस्ते।।४२।।

चापे गुणारोपणतुल्यकालमेवोत्थितो धर्मसुतस्तदानीम्।
धावन्तमग्रे परिवृत्तकण्ठ - मेनं सह भ्रातृभिरन्वधावत्।।४३।।

धावन् महाध्वनि सोऽधिगन्तुं तस्मिन् यदापारि न पाण्डुपुत्रैः।
अग्रे कुरङ्गस्य तदा शरैस्ते प्राचीरमुच्चै रचयाम्बभूवुः।।४४।।

तेषामनासादयतामथैनं तस्मिन् मरावेव कृतात्मगुप्तिम्।
मध्ये ललाटं तपमाचराणां चिन्तेव कामं ववृधे पिपासा।।४५।।

वैक्लव्यमाप्तो नकुलस्तदानीं राजानमम्भोहरणाय याचन्।
आज्ञापितस्तेन च वर्त्मवृक्षमारुह्य काशैरिमसावपश्यत्।।४६।।

ज्यानम्रधन्वाथ कृपाणपाणिः पार्थासि ह्रदं विजयानुजन्मा।
उत्तिष्ठमानेन पुरः पुरस्थात् वेगेन पद्माकरमाजगाम।।४७।।

---

१६. धृतराष्ट्रगान्धार्योः पुत्री यस्याः परिणयः जयद्रथेनाऽभूत।
१७. आरादुपस्थाय विविचितवासे?
१८. इमे द्वे काष्ठविशेषेययोः परस्पराधर्षणेन होतारः यज्ञाय अग्निं प्रज्वलन्ति।
१९. पौरुषार्थान्

तस्मिन् प्रवृत्ते सरसि प्रवेष्टुं वैहायसीवागियमाविरासीत्।
प्रश्ने विधायोत्तरमस्मदीये पश्चात् पयः पातुमिहार्हसि त्वम्।।४८।।

आकाशवाणीमधीर्यय शुष्यत् - कण्ठस्सरस्यान्नकुलो निमज्य।
पानीयमानीय पिबन् कराभ्या - मह्नाय मोहेन तृषोनिरासि।।४९।।

तस्मिन्ननागच्छति शङ्कितेन राज्ञा नियुक्तो नकुलोऽनुजन्मा।
गत्वा सरोहन्त तृषाय लोलृपं नीतः शुचेरागजमन्वगच्छत्।।५०।।

प्राप्तौ तथैवार्जुनभीमसेनौ शोच्यामवस्थामथ धर्मराजः।
विघ्नो विलम्बेन सहोदराणां तीरं प्रतीयाय सरोवरस्य।।५१।।

भ्रष्टानिवालोक्य स लोकपालान् क्षोणीशयानक्षतसर्वगात्रान्।
भ्रातृनवन्या इव पौरुषार्थान्[२०]? सेहे न सत्यं सहजात[२१]हारि।।५२।।

★नाद्यापि रोलर्नियता[२२] प्रियायाः नाद्यापि ते पापरताः निरस्ताः।
प्राणानकाण्डे चतुरोऽहरन्मे हा धिक् कृपायाः कृपणो विधाता।।५३।।

तेरेव पापैरथवा कृतोऽयं कृत्याभिचारो दुरुमायदक्षैः।
नीचैः यथा संचरमानमत्तः प्रायो न विश्राम्यतिदुर्जनानाम्।।५४।।

अद्यास्तु राधातनयस्य कीर्त्ति-र्निद्रालु मान्धारसुतं सुखेन।
किंच श्रियः नीचतराः स एष स्थैर्यं प्रवादो भजतामिदानीम्।।५५।।

---

२०. सहजात?

२१. नियतः

★ यदा द्यूते धर्मराजेन द्रोपदी ग्लहीकृताहारितेति तथा दुर्योधनः दुश्शासनं समादिशति। यत् गौरियं अतः निर्वसनोयं मम जङ्घोपरि स्थातव्या। ततः भीमेन प्रतिज्ञा अकारि यत् पाण्स्य दुर्योधनस्य जङ्घामिममां चूर्णीकृत्य तच्छोणितेः ते वेणीसन्धानं करिष्यामिः इति।

२२. सुखम्

उत्तिष्ठ भीमानुमतोऽसि तावद् दुर्योधनं यापय पापलोकम्।
सिक्त्वा च दुश्शासनशोणितेन वेणीं भदानद्रुपदात्मजायाः ।।५६।।

एकाकिनी राजसुता विदूरे क्व वा मतिः कौरवपांशुलानाम्।
गाण्डीवधन्वा नवनीरलब्ध्वा निद्रासुखं[२३] सम्प्रति साम्प्रतन्ते।।५७।।

धृष्टं प्रियाधर्षणमभ्युपेतं दास्यं वनं यस्य धृतेऽनुविष्टम्।
आकस्मिकं हन्तु[२४] यमो युवाभ्यां सह्यो न सोऽहं गहने विहातुम्।।५८।।

शान्ता न कृष्णा शमितो न शत्रुः प्राप्तं न राज्यं मुदितो न बन्धुः।
धर्मस्य किं तु फलमेतदेव दुष्यानि जन्मावधि यद् भवन्ति।।५९।।

इत्थं विलप्यावहिते स राजा नेत्रे समन्तादथ सन्दधानः।
ऊचेऽनुजास्ते निहता सहेति मध्ये सरस्या[२५]श्चरता बकेन।।६०।।

न त्वं बकः किन्तु सुरोऽसि कश्चिन् नैतान् परे बाधितुमीशितारः।
उक्ते नृपेणेति खगे निलीने यक्षोऽथ वृक्षान्[२६] नृपमाचचक्षे।।६१।।

किन्नाम पान्थस्य किमातुरस्या[२७] किं प्रायतः किं गृहिण[२८]स्सुहृद्वा।
द्यौः किम्महत् किंचभुवो गरीयः किम्मास्तादाशु तृणात् किमल्यम्।।६२।।

---

२३. सरस्याः
२४. हन्त
२५. वृक्षान्?
२६. तुलनीयानि इमानिपद्यानि (महाभारतवनपर्वतः)
किं स्वित्प्रवसतो मित्रं किं स्विन्मित्रं गृहेसतः।
आतुरस्य च किं मित्रं किं स्विन्मित्रं मरिष्यतः ।।२६७.४५।।
किं स्विद्गुरुतरं भूमेः किं स्विदुच्चतरं च खात्।
किं स्विच्छीघ्रतरं वायोः किं स्विद्बहुतरं नृणाम्।।२६७-४०।।
२७. आतुरस्य?
२८. गृहिणः

दानं वृथाकिं विफलो मषः[२९] को[३०] देशात् कुतः साधु वनं मृतः किम्।
किं प्राश्य तृप्तः किमुदस्यकान्तो जिह्वा सुखीकिं किमपास्य विद्वान्।।६३।।

[२९]किं वा विषं केन भवेन् महत्त्वं[३१] किंच प्रियं ब्रूहि तपः किमेकम्।
प्रश्ने विधायोत्तरमित्यमुष्मिन् कौन्तेय यद् वांछसि तद्ददामि।।६४।।

तत्रोत्तरं दत्तमथास्य राजा★पान्थस्यसार्थो भिषगातुरस्य।
दानं भविष्यद्व्यसनस्य पुंसः पत्नी गृहस्थस्य च मित्रमेकम्।।६५।।

एको महीयान् वियतोऽपि तातो माता गरीयस्यपि पूत धात्र्याः।
चेतो जवीयः पवमानतोऽपि सस्पादणीयस्यपि? नाम चिन्ता।।६६।।

अश्रोत्रियं दानमनर्थबीजं वैरी मखो दक्षिणया विहीनः।
★★राष्ट्रादराज्ञो वरमप्यरण्यं जीवन् मृतो हन्त पुमान् दरिद्रः।।६७।।

तृप्तो भवत्येव - विजित्य[३२]कामं? प्रीणाति विश्वं विनिहत्यमानम्।
निर्जित्य लौभं लभते सुखानि पुष्णाति वैदुष्यमुदस्य कोपम्।।६८।।

याच्ञाविषं स्यात् तपसा महत्त्वं साको प्रियो भूतदया तपस्या।
एतावदेवाकलयामि सोऽहं किंम्वामतं यक्ष वद त्वदीयम्।।६९।।

---

२९. मृतः कतं स्यात् पुरुषः कथं राष्ट्र मृत भवेत ।।२९७.४८।।
३०. कादिविकमुदकं किमन्नं पार्थ किं विषम्।।२९७.५७।।
केन स्विच्छौत्रियो भवति केन स्विन्विन्दते महत् ।।२९७.२८।।
३१. तपः किं लक्षणं प्रोक्तम् (एपेन्डिक्स १/३२)
★ किं सार्थप्रवसतो मित्रं भार्यामित्रं गृहेसतः।
आतुरस्य भिषङ्गमित्रंदानं मित्रं मरिष्यतः।।२९७/४५
मातागुरुतरा बूमे पिता उच्चतरश्च खात्।
मनः शीघ्रतरं वायोश्चिन्ताबहुतरी नृणाम्।।२९७/४१
★★ मृतोदरिद्रः पुरुषः मृतं राष्ट्रमराजकम्।।२९७/५९
३२. विजित्य

राजानमित्थं पुनराह-यक्षो[33] दत्तानि सम्यक् गुरवोत्तराणि।
त्वां प्राप्तवानस्मि परीक्षमाणो धर्मो धराधीश भवत्पिताऽहम्।।७०।।

त्वद् भ्रातरोऽमी पुनरुच्छ्वसन्तु विप्रस्य चैतामरणीं गृहाण।
कंवा वरं वांछसि तं वृणुष्व[34] पुत्रेण पुत्री भवताहमेकः।।७१।।

निद्रामथोत्सृज्य समुत्थितास्ता-नालोक्य सम्राडरणीं च बद्ध्वा।
अष्टाङ्गपातं प्रणिपत्य भूमौ बद्धांजलिं धर्ममिदं बभाषे।।७२।।

देवेन्द्र युष्मच्चरणारविन्दसन्दर्शनंचिदपि नाम कामम्।
एकं वरं देहि पितस्तथापि गुप्तान् यथा वेत्स्यति कोऽपि नास्मान्।।७३।।

गुप्ता विराटस्य पुरे चरन्तो यूयन्न भूयास्थ परस्य लक्षाः।
राज्यं पुनः प्राप्स्यथ वत्सरान्ते धर्माभियायेति[35] तिरो बभूव।।७४।।

धर्मेण साक्षादिति स प्रभावं विस्मारितास्ते वनवासदुःखम्।
आनन्दसन्दोहतरङ्गमध्ये मग्ना इवासन्नमृताम्बुराशौ।।७५।।

विप्रेण लब्ध्वारणिमन्तकेन दत्ताशिषः पाण्डुसुताः समेत्य।
उत्फुल्लगण्डास्तपसः प्रसादं धौम्याय सम्यक् कथयाम्बभूवुः।।७६।।

अथ रथसहितान् प्रहित्य भृत्यान् यदुपतिपत्तनमिन्द्रसेनमुख्यान्।
अपि कुलगुरुमग्निहोत्रहेतो - द्रुपदपुरं प्रजिधाय धर्मराजः।।७७।।

---

३३. यक्षः
३४. वृणुष्व?
३५. धर्माभिधायेति

ततो विजयमङ्गले मुनिगणेन गीते सति श्रियं सहचरीमिव द्रुपदनन्दिनीमुद्वहन्।
चतुर्भिरनुजन्मभिः सुदृढभङ्गिभिः सम्भृतो विराटनगरीमगान्नृपतिवेषमूर्त्तो वृष।।७८।।

इति श्री लक्ष्मीनारायणपण्डितराजपण्डितकविडिण्डिम श्री लक्ष्मीदत्त
विरचिते (महाकाव्ये पाण्डवचरिते) द्वैतवनवासो नाम पंचदशस्सर्गः।

विराटनगरावासो नाम षोडशस्सर्गः

शमीतरुस्थापित तत्तदायुधाः कलत्रषष्ठाः परिवृत्तमूर्त्तयः।
इति क्रमेण क्षितिलोकनायका विराटमेकैकमथोपतस्थिरे।।१।।

द्विजाति रक्षे निपुणः सखा तपः सुतस्य कङ्कोऽस्मि भवन्तमाश्रितः।
इतीरियन्[1] धर्मसुतः प्रपूजितः स मत्स्यराजेन कृतः सभापतिः।।२।।

भुजामिवः पाण्डुभुवो महानसी महाबलो[2] बल्लवमल्ल इत्यहम्।
वृकोदरं भाषितवन्तमित्यसौ मुदाऽकरोत् सूपकृतामधीश्वरम्।।३।।

प्रसाविका पाण्डवधर्मयोषिता मधिश्रये त्वामहमीश मानिनी।
इतीरयन्तीं नृपतिः सगौरवं दधौ सुदेष्णा सविधे तपः स्नुषाम्।।४।

नरेन्द्रशुद्धान्तचरी तपोभुवो बृहन्नलाहं भरतागमस्थितिः।
इतीरयन्तं स्मितमर्जुनं नृपो मुदावरोधेऽकृत रङ्गनायकम्।।५।

अरिष्टनेमिः[3] कुशलो गवां विधा-वसावहं वाजिषु तन्त्रपालकः।
समाश्रितौ त्वामिति वादिनौ यमौ स तत्र तत्राधिचकार सत्कृतौ।।६।।

ततो निजे कर्मणि पारितोषिकं नृपादवाप्तं ददतः परस्परम्।
अमी न तस्योदरि जन्तसे वने? स्खलन्ति ना यत्र कृतं कदाचन।।७।।

---

१. इतीरयन्

२. महारणो इति पाठान्तरम्।

३. अरिष्टे तु शुभाशुभे (इत्यमरः)

अथागतं दिग्विजयीति विश्रुतं जयाय जीमूतममुष्य संसदम्।
गिरा विराटस्य ममन्थ मारुतिः समेत्य मल्लं मुरमच्युतौ यथा।।८।।

निषेवणामैरिति मत्स्यनाकं यदा यदारम्भि नरेन्द्रसूनुभिः।
अलम्भि तत्रैव तदावदानकं कृतात्मभिः कुत्र यशो न लभ्यते।।९।।

चमूपतिः कीचकइत्यथैकदा गतः सुदेष्णामनुजामुदीक्षितुम्।
विलोक्य पांचाल[४]पतेः सुतां त्रपा मदूरमृत्युः प्रकृतिं जहाविव ।।१०।।

ततः स्वसारं स जगाद गद्गदं त्वमर्हसि क्लेशयितुं न मानिनीम्।
अतस्तथा देवि यतस्व मां यथा भजेत लावण्यविलासभूरसौ ।।११।।

त्वमेव याचस्व चमूपते स्वयं न वक्तुमेतामहमेतदुत्सहे।
इतीरितः प्रस्थितया सुदेष्णया मिथः स पांचालसुतामथावदत्।।१२।।

कथं कलानाथमुखि त्वमीदृशे चिरं परिक्लाम्यसि भृत्यकर्मणि।
युवा स को वा विधिनाथ वांछितो दधाति चेतो भवतीमुपेक्ष्य यः।।१३।।

तदेव सद्म त्वमलङ्करोषि यत् स एव जीवत्यथ यं विलोकसे।
अय तपः किंच त एव तप्यते त्वदङ्घ्रिपातोऽपि यदीयमूर्द्धनि।।१४।।

अमूः सदा मे हृदि जाग्रति व्यथास्त्वया सुदेष्णा ननु यत्[५] प्रसाध्यते।
अयि स्वयं पार्श्वमलङ्करोषि चेत् तदा किमन्याभरणप्रयोजनम्।।१५।।

---

४. पांचाल?

५. यत्

प्रसीद सन्नोदविताद्विषीद मा जहीहि केशग्रथनापरिश्रमम्।
त्वमिन्दिरा[६] दुग्धसमुद्रसुन्दरं मदीयमद्यानुगृहाण मन्दिरम्।।१६।।

अहं तु सेनापतिरस्य भूपते - र्न केवलं किन्त्वखिलं[७] प्रजापतिः।
तथा विराटस्य न किंच शासनं यथा मदाज्ञामनुवर्तते जनः।।१७।।

मया बलेनापि विधीयतेऽथ यत् तदन्यथा कर्तुमलं न पार्थिवः।
करोषि यद्येष मदप्रियं पुनः तदप्यपाकर्तुमहं समुत्सहे।।१८।।

अथ क्रुधा कोकनदप्रभानना चतुर्दिर्श[८]वीक्ष्य जगाद कातरम्।
करोषि जन्मां[९]प्रति चित्तमन्यथा फणीन्द्र चूडामणिमेतदिच्छसि।।१९।।

जयन्ति गन्धर्वनरेन्द्रसूनवो निगूढवेषो मम पंचनायकाः।
जगत्सु मां कामयते हृदाऽपि यः समूलमेते विनिमूलयन्ति तम्।।२०।।

इतीरयन्त्यां निभृतक्रमं भिया पराचि तस्यां तरसाभिसंसदः।
पुनः स गत्वावरजां ययाचो तत् खले न लज्जा विफलेऽपि साहसे।।२१।।

कृपावती कीचकनीचकाकुभि-र्जगाद सा कैकय राजकन्यका।
मया प्रहेया मधुना तवालयं प्रसाधिकेयं न तु दौत्य[१०]माश्रये।।२२।।

तथेति तस्मिन्नथ मन्दिरं गते सुदेष्णया द्वित्रिदिनादनन्तरम्।
अनुत्सुकापि प्रहिता तपःस्नुषज्ञ मधूनि साहर्तुममुष्य मन्दिरम्।।२३।।

---

६. इन्दिरा
७. अखिल
८. चतुर्दिर्दशनम्
९. यन्माम्?
१०. दौत्य

स वर्त्मनि प्रेषित चक्षुरायतीमुदीक्ष्य पांचालसुतां चमूपतिः।
उपेत्य सिंहीमिव दुष्टरावणः[११] प्रवेश्य चान्तः पुरमित्यभाषत।।२४।।

सुकेशि कच्चित् कुशलादलङ्कृतं त्वदङ्घ्रिपद्मद्वितयेन सद्म नः।
अपि त्वदीयाननपङ्कजश्रियः कलावति व्याकुलिता न भास्वता।।२५।

वरोरु तल्पं[१२] तदलङ्कुरुष्व नो भवाम युष्मत्परिचारका वयम्।
त्वदीयमद्यावधि पादपङ्कजं भजन्तु दारा मम राजकन्यकाः ।।२६।।

इति ब्रुवाणं तमुवाच मानिनी जिजीविषा कीचक ते न विद्यते।
न माममर्त्या अपि वीक्षितुंमा भवांस्तु को जम्बुकशावकोपमः।।२७।।

अरे निवर्तस्व पताकिनीपते पतङ्गवत् पावकमाशुमाविशः।
इति बुवाणेव सरोपगद्गदं जवेन कृष्णा निरियाय तद् गृहात्।।२८।।

पपात तस्याः प्रथमं स पादयोः करं बलात् हृत्य ततः परं दधौ।
तथापि यान्त्या धृतवाससः क्रुधा कृतान्तशस्त्रीमिव वेणिमस्पृशत्।।२९।।

अनर्हमित्युक्तवता विवस्वता नियोजितः[१३] तत्क्षणमेव राक्षसः।
प्रचण्डवात्या कपटेन कीचकं जवादयोवाह तदा स दूरतः।।३०।।

सभागताऽनाकलितेव भूभृता निवारिता दीनदृशा तपोभुवः[१४]।
सरोवगाढ़[१५] समुदीक्ष्य भास्करं जगाम धाम द्रुपदस्य नन्दिनी।।३१।।

---

११. गजरित्यर्थः
१२. तल्पम्
१३. नियोजितः
१४. तपोभुवा?
१५. सरोवगाढम्?

तदेतदस्या हृदि पल्लवायतां न शल्यमित्थं सवितेव सत्वरः।
पपात पाथोदिमुपानयन्नसुं वृकोदरालोकनदीपकं तमः।।३२।।

अथार्द्धरात्रे मनसेव कर्षिता समेत्य भीमस्य गृहं मनस्विनी।
अनुक्तिना जागरयत् क्रमेण तं मृगेन्द्रमुत्त्रासवतीव सिंहिका।।३३।।

तया निहत्या वदने मुहुर्मुहुः करे दधत्या कतिधा वृकोदरम्।
परामृशन्त्या हृदिकापि कातरा दशाभितः प्रेरितनेत्रया दधे।।३४।।

ततश्चमत्कृत्य जवात् समुत्थितः समीरजन्मा सहसाधिगम्यताम्।
किमायताक्षि त्वमुपागतेति मां किमीप्सितं वा कथयेत्यभाषत।।३५।।

नृपोऽयमक्षेण करोति जीविकां धनंजयः नर्त्तयतेऽथ भोगिनीः[१६]।
भवानहो मत्स्यगृहेषु सूपकृत् तथा यमौ[१७] वेतनमध्यवस्यतः।।३६।।

अतः परं वीर किमीप्सितं[१८] मम व्रजन्त्यमी किन्त्वसवो न दारुणाः।
अधास्ति वा पूर्णमनोरथैव सा स एष यस्याः पतिरग्रजस्तव।।३७।।

स नीचकर्मा व्यवहृत्य कीचकः तथाविधं जीवति जीवति त्वयि।
नरेन्द्र साहं न तदेतदुत्सहे त्वयीति दुःखं विपरीतमागता।।३८।।

स कृष्णया मारुतिरित्युदीरितो जगाद मा निन्द युधिष्ठिरं प्रिये।
प्रयाहि तावत् प्रहिणुच्छलेन तं सहेलमेनं करवै बकानुगम्[१९]।।३९।।

---

१६. भोगन्योऽन्या नृपस्त्रियः (इत्यमरः)
१७. यमजौ नकुलसहदेवाविति?
१८. किमीप्सितम्?
१९. बकनाम्नः रक्षसः अनुचरं करिष्यामि अर्थात् विगतप्राणः करिष्यामिति।

तथेति पांचालभुवः स्वमालयं समेत्य विश्वस्तहृदो बृकोदरे।
प्रतिक्षणं कीचकपातकांक्षया कृशापि साऽधत्त निशाविशालताम्।।४०।।

ततो दिनं प्राप्य कृतप्रसाधना जगाद गत्वा तमसौ मनस्विनी।
वृथा मया राजभियासिवंचितः प्रभुस्त्वमेवासि यदत्र पत्तने।।४१।।

तदद्य सङ्गीतगृहं चमूपते भवान् निशायामुपगन्तुमर्हति।
तथेति सा तेन कृतानुमोदना समेत्य भीमं तदबोधयत् पुनः।।४२।।

अथ प्रविष्टे निशि नृत्यमन्दिरं वृकोदरे केसरिणीव कन्दरम्।
मृगेन्द्रकन्यामिव पाण्डवप्रिया-मभिप्रतस्थे स करीव कीचकः।।४३।।

प्रभंजनोत्पाटितपर्वतद्वयो-र्वद- -[२०]ट्टनध्वान नदद् भुजार्गलम्।
बभूव सङ्गीतगृहे महाहवः समीरपुत्रेण समं चमूपतेः।।४४।।

निगृह्य तं भीमविङ्गनायको भुजङ्गभर्त्तारमपारपौरुषः।
सहाय कृष्णाममुना दिधक्षतो जघान धावन्नुपकीचकानहीन्।।४५।।

स मानिनीं यच्चक्रमे चमूपतिः जधान तत् तं सुरइत्युपश्रुतिः।
पुरे पुरस्तात् प्रचचाल सर्वतः पराचि तत्रागमदग्निसम्भवा।।४६।।

सचेल[२१]मेषा सरिति प्लुतातः पथि व्रजन्ती स गया बृकोदरम्।
विलोक्य तां नृत्यगृहोपसङ्गतां धनंजये पुष्टवतीत्युवाच सा।।४७।।

सुखेन सन्नर्तय राजकन्यकाः वृहन्नले पृच्छसि किं विहस्य माम्।
न विक्लवः क्लीबजनस्य गोचरः कथं ततो वेत्स्यति मानिनीव्यथाग्।।४८।।

---

२०. वघट्टन
२१. वस्त्रामाच्छादनं बासश्चेलं वसनमंशुकम्। इत्यमरः।

क्व नाम जन्माधुनिकी[२२] क्व चस्थितिः क्व धर्म सेवा क्व दुःखमीदृशम्।
क्व भर्तुरग्रे गतिरीदृशी स्त्रियाः क्षमस्व दुःखादथवेति रन्सितम्।।४६।।

न वक्तुमर्हस्यवलेपमीदृशं बृहन्नलायै कुपिते पृथक् पुनः।
नपुंसकस्यावगमो न कुत्रचित् कुरु क्षमां तामिदमर्जुनोऽवदत्।।५०।।

इमामथ स्वाधिकृतौ कृतोद्यमां निषिद्धसाकृतमुवाच कैकयी।
ननु व्रजान्यत्र बिभेति पार्थवो भवेत्[२३] पतिभ्यो निहते चमूपतौ।।५१।।

जगाद कृष्णाय न मुंचदेवि मां मवावशिष्टा[२४] दिवसास्त्रयोदशं[२५]।
प्रतीहि नास्मत् पतिभिः करिष्यते तवोपकारादितरत् कदाचन।।५२।।

तथेति कृष्णानुमता सुदेष्णया समादरेणाप चकार तामसौ।
कथं कथांचिन् नरदेव जन्मभि - र्दिनानि चैवं गमयाम्बभूविरे।।५३।।

ततः सभायां सभयाः शनैः शनै-रूपेत्य दुर्योधनमूचिरे चराः।
विचारितं विश्वमिदं समाहितै-रवापि नामापि न पाण्डुजन्मनाम्।।५४।।

न सन्ति पार्थाः परमार्थतः प्रभो न मद्विधानां किमपीह दुर्विदम्।
कुरुष्व भोगं[२६] कुरुराज सम्पद-स्तदस्त भीरिन्द्र इवामरश्रियः।।५५।।

न सन्ति सत्यं कुरुराजपाण्डवाः किमप्यवेदं न हि तावकैश्चरैः।
परन्तु मत्स्यं हतकीचकान्वयं स एष जेतुं समयस्समागतः।।५६।।

---

२२. आधुनिकी
२३. भवत्
२४. ममावशिष्टा?
२५. त्रयोदश
२६. इत्यधिकः पाठः

इतीरितो[२७]ऽथ स्फुरतासुशर्मणा पितामहद्रोणकृपादिसम्मतः।
पताकिनीभिर्भुवनानि कम्पयंश्चलाल मत्स्यानभिकौरवेश्वरः।।५७।।

युग्मकम्ः–

ततोऽनुमत्या कुरुभर्त्तुरग्रतश्चिराय मत्स्यान् प्रतिसंचितक्रु[२८]धा।
त्रिगर्त्तनाथेन महोग्रसेनया विराटगावः कपटेन वेष्टिताः।।५८।।

निशम्य गोवेष्टनमाशु दंशितो निवेश्य पूरक्षणभारमुत्तरे।
सपाण्डुपुत्रांश्चतुरश्चमूपतीन् विधाय मत्स्योऽधिपतिः प्रतिस्थवान्।।५९।।

तिरोहिते भास्वति मत्स्यसैनिका-स्त्रिगर्त्तवीरान् प्रतिपद्यसम्बरम्[२९]।
महोग्रनादा[३०] विशिखैरवाकिरन् घना घना भूमिरुहानिवोपलैः।।६०।।

शरान्धकारीकृतरोदसी[३१]तलं ज्वलत् कृपाणक्षणरोचिरुच्चकैः।
परस्परं साहसदत्त चेतसां बभूव तेषां क्षणमाजिदुर्दिनम्[३२]।।६१।।

ततो हतानेकपताकिनीपतिः सुषर्मणा निर्मितबाण-वृष्टिना।
अहारि बद्ध्वा विरथो निरायुधः स कङ्क[३३]वक्तार्पित लोचनो नृपः।।६२।।

---

२७. इतीरितो
२८. क्रुधा?
२९. युद्धमित्यर्थः (सद्य हिन्दी कोशः)
३०. मूद्यावौरोदस्यौ रोदसी च ते (इत्यमरः)
३१. मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् (इत्यमरः)
३२. महाराजयुधिष्ठिरस्य परिवर्तितो नाम। यदा पाण्डुवाः विराटनगरीमुपतस्थिरे तदा युधिष्ठिरस्य कङ्क इति नामकृतम् अक्षान् वप्तुं कुशलोऽस्मि देविता, कङ्केति नाम्नास्मि विराट विश्रुतः (वि.प. ८. १०)
३३. स्याद् यशः पटहोढक्का (इत्यमरः)

ससम्भ्रमो भीममभाषताग्रजः समं यमाभ्यां सहसा वृकोदर।
विगाह्यमानां गदया तरण्डया[३४] विराटमभ्युद्धर वैरिवारिधेः[३५]।।६३।।

तथेति सन्त्यज्य रथं समुत्थितः त्रिगर्त्तवीरान् गदया विदारयन्।
मुहुः सुशर्माणमपीयुवर्षिणं विमर्द्य पद्भ्यामचिराद् बबन्ध सः।।६४।।

पृथातनुजैरिति निर्जरैरिव प्रमथ्य सङ्ग्रामपयोधिमुद्धृतः।
मनांसि६तेषां विनयार्हणामृतैः प्रमोदयामास विराटचन्द्रमाः।।६५।।

सपदि विघटितोद्धतान्धकारः कुमुदवनोचितमंशुकं ददानः।
गगनतलमलंचकार चन्द्रः समरकृतमिव मण्डलं विराटः ।।६६।।

प्रतिगृहमबलाभिर्मङ्गलानि क्रियन्तामनुनिशमपि ढक्का[३६]वैजयिक्यैव सन्तु।
नृपतिरथ निशान्यामेव पार्थोपदेशात् कथयितुमिति दूतान् प्राहिणोदुत्तराय।।६७।।

इति श्री लक्ष्मीनाथ नारायण राज राज पण्डित कवि डिण्डिम श्री लक्ष्मी दत्त विरचिते पाण्डवचरिते महाकाव्ये विराटनगरावासो नामषोडशस्सर्गः।

---

३४. वारिधेः?
३५. मनांसि?
३६. उडुपेन इत्यर्थ।

उत्तरगोग्रहणोनाम सप्तदशस्सर्गः

कथयत्सु चरेषु भुभुजो विजयं संसदि राजसूनवे।
ह्रियते कुरुभिर्गवां कुलं द्रुतमित्याहुरुपेत्य बल्लवाः।।१।।

उपनीतमथेन्द्रसूनुना रथमारुह्य विराटनन्दनः।
कृतमङ्गलसंविधानको निरियाय त्वरया संपत्तनात्।।२।।

अनुकूलमपि प्रभंजनं गमयन्तः प्रतिकूलतां[१] हयाः।
विजयेन विमुक्तरश्मयो[२] निमिषार्द्धेन कुरूनुपाययुः ।।३।।

प्रलयाम्बुधिलीलयाऽभितो [३]बलमाणामिति-धोरनादिनीम्।
पृतनामवलोक्य कौरवी-मथबैराटिरवोचदर्जुनम्।।४।।

निगृहाण हयान् बृहन्नले हृदयं साहसमीहते न मे।
तिमिरेण दृशो तिरोहिते वदनं शुष्यति वेपते वपुः।।५।।

अवरोधगतः[४] स्वपौरुषं बहुशः श्रावितवानसि स्त्रियः।
अविजित्य कुरुं निवर्त्तने नियतं नोत्तर कान्तिमाप्स्यसि।।६।।

---

१. प्रतिकूलताम्?
★ गोपालाः (इति)
२. किरणप्रगहोरश्मी (इत्यमरः)
३. रणमाणाम् इति पाठान्तरम्
४. स्त्रयगारं भुभुजामन्तः पुरं स्यादवरोधनम्।
शुद्धान्तश्चावरोधश्चस्यादहः क्षौममस्त्रियान्।। इत्यमरः।।

अहमर्जुनसारथी रथं वचनेनापि न ते निवर्त्तये।
इति पाण्डुभुवा स बोधितो हृदयेनापि न योद्धुमैहत।।७।।

अवतीर्य्य रथात् पलायितं विचलत् बाणजवेन काल्गुनः।
चिकुरे घनकम्बुकङ्कणा - कुलितेनाकलयत् करेण तम्।।८।।

स जगाद कचेषु मुंच मां न मया विप्रकृतं कदापि ते।
यदि मां नयसे पुरं तव? प्रबलप्राणधनेरहं तदा।।९।।

न लभे कति गोधनानि वा भुवने जीवनमेव दुर्लभम्।
अनुकम्पय मामनाथवत् कुरुसेनां जलधौ न पातय।।१०।।

जगदे विनिवर्त्तितो रणा-दथ बैराटिरिदं किरीटिना।
कुरु वीरधृतिं विराडसि स्फुटमुत्साहयसि द्विषन्मनः।।११।।

अवसानमवश्यमेव चेत् न रिपून् हासयितुं तदर्हसि।
अथ दैवबलेन जेष्यसि स्थविरां कीर्त्तिमलङ्करिष्यसि।।१२।।

अपि चेदनुकूलता विधेः प्रजयत्येकतरस्तदा बहून्।
समरादथ विद्रुतोऽपि सन् वचनीयो न भविष्यसि द्विषाम्।।१३।।

अहमेव निपातये कुरून् कुरु सारथ्यमभीस्त्वमद्य मे।
मम संयति कुत्र शत्रवो दिननाथे तपति क्व वा तमः।।१४।।

★ व्यवहार्यश्च राजेन्द्र शुचिश्चैव भविष्यसि।
धनुष्येतानि मा भैस्तत्वं शरीरं नात्र विद्यते (म.वि. ३८/१२)

न तु बाहुबलं भवद्धनुः शरधारा विकिरः सहेत मे।
अपि ते न मतङ्गजावली-दलनाकुण्ठमुखाः शिलीमुखाः ।।१५।।

अवतारय तत् पृथासुतैरिह विन्यस्य मरण्ययायिभिः।
समिधेक सहायमायुधं गतशङ्कस्त्वमितः शमीतरोः।।१६।।

★विचिकत्स न चैत्य[५] इत्यमु तरुमारोह विराट-नन्दन।
ननु पाण्डुसुतानुजीविना-मपथा संचरते न मानसम् ।।१७।।

स तथेति कथंचिदुत्तरो द्रुतमुत्तार्य ततो वनस्पतेः।
उपहृत्य च तत् तदायुधं परिचित्यार्जुनतो विसिस्मये।।१८।।

भवता यदि वेद शंसतु? क्व गताः पाण्डुसुता बृहन्नले।
इति तेन पुनः स भाषितो निजगादोत्तरमिन्द्रनन्दनः।।१९।।

अहमिन्द्रसुतो युधिष्ठिरः स सदस्यो दयिता च मानिनी।
तव सूपकरो वृकोदरो यमजौ वाजिगवाधिकारिणौ।।२०।।

★पुनरेनमवोचदुत्तरो दशनामानि वद त्वमात्मनः।
समरेषु मयाकरिष्यते तव सारथ्यमसंशयं तदा।।२१।।

---

५. चैत्यमायतनं तुल्ये (इत्यमरः) चैत्यं पिशाचादि स्थानमित्यर्थः।

★ दशपार्थस्यनामानि यानि पूर्वश्रुतानि मे।
प्रवयास्तानि यदि मे श्रद्ध्यां सर्वमेव ते।।म.वि. ३९.७

६. विशिखे?

कपिकेतुरवोचदुत्तरं विजयो युद्धपराजयादहम्।
मम जन्मबभूव फल्गुनी मधि तस्मादहमस्मि फाल्गुनः।।२२।।

धनमाशु हरामि वैरिणां मम नामास्ति धनंजयः।
परिधापयता किरीटकं स्वयमिन्द्रेण कृता किरीटिता।।२३।।

समरोऽपि निरायुधे रिपौ नहि बीभत्स्यमहं करोमि यत्।
अतएव जगत्सु सर्वतो मम बीभत्सुरिति प्रथाऽभवत्।।२४।।

ददतुर्विशिखे[६] समङ्करौ सचमानौ मम सव्यसाचिताम्।
यश एव सदार्जुनं लभे ननु तेनाहमभूवमर्जुनः।।२५।।

अविजित्य कदापि विद्विषो न निवर्त्ते मम तेन जिष्णुता।
विदितोऽस्मि बलक्षवाहनो विदधे कृष्ण इति प्रथां पिता।।२६।।

इदमीरितवन्तमुत्तरस्तमवादीदभिवादयन् मुदा।
★मुरहन्तुरिवाद्य दासकौ युधिसारथ्यमहं करोमि ते।।२७।।

अथ सम्प्रति पार्थकं प्रति प्रथमं संयति वाहये हयान्।
त्वयि तिष्ठति शम्भुशिक्षिते तृणकल्पान् गणयामि कौरवान्।।२८।।

विजयैन विचिन्तितान्यथ द्रुतमस्त्राणि समेत्य सर्व्वतः।
कृतदेहपरिग्रहाणि तं जगदुः किं करवाम शाधि नः ।।२९।।

★ दारुको वसुदेवस्य यथा शुक्रस्य मातलिः।
तथा मां विद्धि सारथ्ये शिक्षितं नरपुङ्गव।।वि.प. ४०.२०

हृदि तिष्ठत नित्यमेव मे विदधीतावसरे सहायताम्[७]।
इति स प्रणिपातमेन्द्रिणा-गदितैरन्तरधीयताऽऽयुधैः।।३०।।

अथ विष्णु-पदादुपस्थितो नदमानध्वजवानरो रथः।
विजयेन कृत प्रदक्षिणः सहसारोहि सहोत्तरेण सः।।३१।।

जलजे सति वादिते ततो रणमास्थाय बलारिसूनुना।
निनिमील विराटनन्दन-स्तुरगा जानुभिरस्पृशन् महीम्।।३२।।

श्रवणं परिमृज्य वाजिना-मथ भूमिञ्जयमर्जुनोऽवदत्।
भयमुत्सृज'धावयाग्रतो ननु शङ्खं पुनरेव वादये।।३३।।

अयमुत्तरस्मतस्ततो बहुराकृष्य पुनः पतंजिकान्।
भुवनानि हठादकम्पयन् प्रलयाम्भोद-रवेण कम्बुना।।३४।।

कदलीव करीन्द्रलोलिता सरसीव भ्रमितेव वात्यया।
कपिकेतन कम्बुनिस्वनैः प्रचकम्पे कुरुराजवाहिनी।।३५।।

क्षुभितानवलोक्य सैनिकान् स कुरूणां गुरुरित्यभाषत।
अवधत्त भटाः परस्परं पुरतः प्राप्तमहो महाभयम्।।३६।।

प्रतिकूलममी समीरणाः प्रवहन्तो विकिरन्ति शर्करान्।
अपि भस्मनिभैः वयोधरै-रिदमह्नाय नभस्तिरोहितम्।।३७।।

तुरगा न चलन्त्युदस्त्रवः परिधावन्ति महारवाः शिवाः।
अपि शस्त्रमुपैति कोषतो ध्वजकम्पः कतिधा न जायते।।३८।।

---

७. सहायताम्

कलयामि तथैतदद्भुतं समरेणया यथा मनोरमम्।
अयमुत्तरसारथिः ध्रुवं हरशिष्यः कपिकेतुरागतः।।३९।।

इतरस्य धनंजयादृते नहि मौर्वीकिणलांछनौ भुजौ।
अपि नः समराय फाल्गुनादपरो नैकतरो जगत्यलम्।।४०।।

सुचिरं वनवासवोषितं कृतयुद्धं पुरवैरिणा समम्।
स्वयमेव सुरेन्द्रशिक्षितं प्रतियुद्ध्येदिह पार्थमद्य कः।।४१।।

कलयामि न कौरवे बले प्रतियोद्धारमहं किरीटिनः।
अपि येन किरातरूपधृक् समरे शम्भुरनायि विस्मयम्।।४२।।

इति वादिनमर्कनन्दनः सपदि द्रोणमुदाहरत् क्रुधा।
अनुरंजसि फाल्गुने सदा मम धत्ते न कलां स षोडशीम्।।४३।।

यदि नूनमयं धनञ्जयो विदितो यास्यति कानने पुनः।
अथ चेत् पर एव पातये शरजालैः पुरतोऽवलोकय।।४४।।

अथ सस्मितमित्युदीरितः कृपगाङ्गेयपुरस्सरैरसौ।
कथयस्युचितन्न कर्णकृत-त्वयि सम्भावितमङ्गनायके।।४५।

विजयः कुरुराजसैनिके-ष्विति जल्पत्सुपरस्परं पुनः।
व्यथयन् द्विषतः स्वनैर्गुणं विचकर्ष द्वितयेन हस्तयोः।।४६।।

पुनराह गुरुर्निशम्यते धनुषष्टङ्कृतिनिस्वनस्तथा।
अयमेकरथो यथा भवे-दपरः कोऽपि न सव्यसाचिनः।।४७।।

पुरतस्तव कर्ण जम्बुको विरुधन्नेष जगाम रंहसा।
जगदेकधनुर्धरस्य ते न पुनः स्त्रष्टुमपारि मार्गणैः।।४८।।

नृपतिर्मनुतामरुन्तुदं समयं साधु तथापि कथ्यते।
समराय समं किरीटिना प्रतिभा न प्रतिभाव्यत क्वचित्।।४९।।

निजगाद ततः सुयोधनो भवता भीष्म निर्वार्य्यतां गुरुः।
दृढमेव जयोऽस्ति यद्यसौ विदितो वत्स्यति कानने पुनः।।५०।।

अथ मत्स्यपराभवार्थिनं विजयो मां समियाय यद्यसौ।
परिचिन्तयतो ममान्यथा विधिरन्यत् कुरुते करोमि किम्।।५१।।

न चलन्ति कदा शिवाः कदा तुरगा न भवन्त्युदस्त्रवः।
अपि नाम चमूरजो-भुवा तमसा न व्रियते कदा नभः।।५२।।

इयतैव किमर्जुनाद् भयं गुरुणा वक्तुमिहोचितायते।
अथवोचितमेव संयुगे मतिमान्द्यं जरतो द्विजन्मनः।।५३।।

जरता विपदेव दृश्यते न कदाचित् कुशलं विचिन्त्यते।
यदमुष्य परम्परीणता निजगोष्ठीषु कथा विचित्रणे।।५४।।

वसुनन्दन पण्डितो जनः समिति प्रष्टुमतो न युज्यते।
गुरुरस्तु सुखेन तत् तथा कुरु भज्येत यथा न वाहिनी।।५५।।

इति कोपकषायितेक्षणो क्षितिपव्याहरणोत्तरक्षणो।
निजगाद सुरायगासुतः कुरुराजं स विगर्हयन्निव।।५६।।

रथिनः कतिचिन्नयन्तु गाः कुरुतां व्यूहमथाखिलो गणः।
भवितार्जुन एव यद्यसा-वपयानं न तथापि युज्यते।।५७।।

---

१ मुत्सृज?

स्वयमेव नयस्व किंचगाः प्रतियुद्धयाम वयं किरीटिना।
अति दुष्करमाचरिष्यति ध्रुवमासाद्य भवन्तमर्जुन।।५८।।

चलितेऽथ तथेति पार्थिवे गलितोत्साहमवेक्ष्य तद्बलम्।
परिचायित वीरमण्डलं निजगादोत्तरमिन्द्रनन्दनः।।५९।।

अपयाति पुरस्सुयोधनो रथमेतं प्रतिपातय द्रुतम्।
इह भूभृति पश्य गाण्डिव-स्तनायित्नोः[६] शरजालवर्षणम्।।६०।।

अथ सारथिसूनुवाजिना-ममुना सूचित साधु रंहसा।
गुण्टङ्कृतिभिः स वारितः सृणिभिर्भग्न करीव सादिना।।६१।।

उपगच्छति सव्यसाचिनि त्रिपथासूनुरुवाच सैनिकान्।
कुरुत प्रतिकारमर्जुनः कुरुराजन्यमयं समीहते।।६२।।

पुरतो भव कर्णपार्श्वयोः ★कृपकार्ष्णेययुवांच तिष्ठतम्।
गुरुरस्तु बलस्य मध्यतो भविताहं परिपृष्ठपालकः।।६३।।

अथ तेषु तथा व्यवस्थिते-ष्वभि दुर्योधनमेव धावतः।
विजयस्य रथाङ्गनिस्वनैः विनिवृत्तः सहसा गवां गणः।।६४।।

नमयन् गतिविघ्नकारिणः स विकर्णप्रभृतीन-विद्रुतः।
इषुभिः स किराभिराकिरत् त्रिपथोऽस्तटपादपानिव।।६५।।

अथ कर्णरवेः शरावली-करजालं शमयांचकार सः।
मधवाधनुरभ्र निस्सहद्-धनबाणावलिवारिधारया।।६६।।

---

६. अभ्रमेधोवारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः (इत्यमरः)

★ कृपाचार्याश्वत्थाम्नाविति।

रविनन्दन-बाण-वर्षणं विनयेनाविगणय्य तत् पुनः।
अनलप्रतिमेन पत्रिणा लघुसङ्ग्रामजितः गिरोद्धृतम्।।६७।।

सति कर्णकिरीटिनो रणे कुरवः प्रेक्षणकौतुकैः स्थिताः।
पुरहूतपुरस्सरैः सुरै-रवतीर्णं गगने च सर्वतः।।६८।।

सुरराज-भुवा-तरस्विना शरजालेन तिरोहितो रिपुः।
प्रतिकृत्य शरैरहर्षयत् कृतसिंहध्वनिरात्मनो बलम्।।६९।।

विशिखप्रकरैः परस्परं क्षणमन्तर्दधतोः[१०] प्रवीरयोः।
सपदि प्रतिकारकारिणो-रुदयास्तौ क्षणिकत्वमापतुः।।७०।।

अरिणा हृदि बाणताडितः करिणा सिंह इव प्रबोधितः।
करजैरिव[११] दुस्सहैः शरै- - - र्विजयो मर्मणि निर्बिभेद तम्।।७१।।

उरुबाहुशिरो ललाटके स विकीर्णो विशिखैः किरीटिना।
करिणैव करी जितो जवा-दपनीतोऽथ नियन्तृसाद्गिना।।७२।।

विकिरन् विशिखान् शिखा इव व्यचरत् कौरवसैन्यकानने।
शमिते सति कर्णवारिदे स निदाघोत्थित पावकोपमः।।७३।।

श्रवसी[१२] कलयन् पदौ स्पृशन् विशिखस्तस्य गुरोः पुरोऽपतत्।
कृपशान्तनवौ नमन् यथा स्त्रजत द्रोणसुतं तथापरः।।७४।।

अथ पार्थमयोधयत् कृपौ दिवमन्तर्दधताशु पत्रिभिः।
अमुना च विहस्य गौतमः शरजालैः प्रतिगात्रमर्च्चितः।।७५।।

---

१०. दधतोः?
११. व्याघ्रायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् (इत्यमरः)
१२. कर्णशब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः (इत्यमरः)

विकिरन्तमनन्तमार्गणान्[१३] कृपमालोक्य तथापि फाल्गुनः।
प्रहरन् बहुशं[१४] शिलीमुखै-र्विमुखानस्य चकार वाजिनः।।७६।।

पुनरेष निवृत्य पन्नगः प्रहरन्निन्द्रभुवा गरुत्मता।
क्षतचापफणाहतो[१५] हठा-दिषुचंचुभिरपास्त कंचुकः।।७७।।

हतसारथिमर्जुनः कृपं विकिरन्नानतपर्वभिः शरैः।
उपसृत्य सरोषमन्तरा स भरद्वाजसुतेन वारितः।।७८।।

समुवाच ततः पृथासुतो वनवासेन चिराय दुःखिताः।
प्रतिकारचिकीर्षवो वयं न गुरो कोपमतः करिष्यसि।।७९।।

मयि तत् प्रहरत्वमग्रतः प्रहरामि त्वयि नाहमन्यथा।
यदि शिष्यकृपाऽथ बाधते न तदा मां व्यवधातुमर्हसि।।८०।।

गुरुणा शतशः शिलीमुखान् प्रहितान् वज्रसमानथार्जुनः।
गगनस्थल एव लीलया कृतसिंहध्वनिरच्छिनच्छरैः।।८१।।

स पयोभिरिवाम्बुदो गिरि-र्गुरुमाच्छशदयताशु मार्गणैः।
अमुनाऽपि रथे किरीटिनोऽ-शनिकल्पैर्विशिखैरदृश्यत।।८२।।

किरतोरथ दिव्यमायुधं भुवनं कम्पयतोः परस्परम्।
विरराम न संगरः क्षणं सममेव प्रतिकुर्वतोः तयोः।।८३।।

अथ वागियम्बरादभूत् अहह द्रोण करोषि दुष्करम्।
यदमर्त्यजितं धनंजयं यतसे कोपयितुं तमाहवे।।८४।।

---

१३. कलम्बमार्गण शराः पत्रीरोपइर्षुद्धयोः (इत्यमरः)

१४. बहुशः?

१५. फलाहतो?

अथ बाणकिरं किरीटवा-नयमाचार्यमनन्तकोटिभिः।
विशिखवैरकिरत् तथा यथा कुरवो हा धिगितिप्रदुद्रुवुः।।८५।।

गुरुपुत्रमथान्तरागतं शरधाराविकिरन्तमर्जुनः।
न चिरादकरोदपराङ्मुखं करभं मत्तमतङ्गजो यथा।।८६।।

पुनरागतमात्तकार्मुकं विहसन् कर्णमुवाच फाल्गुनः।
कुरुसंसदि सूत[16] पौरुषं यदवोचस्तदुपस्थितं पुरः।।८७।।

भवताद्य समिद्दुरोदरे शरपाशैः सह दीव्यता मया।
अधुनैव करिष्यते तथा पुनरन्यं न यथावमन्यसे।।८८।।

त्वयि निन्दति धर्मभीरुणा यदहो संसदि मर्षितं मया।
तदिदं प्रकटीकरिष्यते यदि भूयो न पुरोऽपयास्यसि।।८९।।

प्रतिवाचमदत्त सूतजो वचनैः किं कुरु पार्थ कर्मणा।
व्यवसायवतां महात्मना-मतिशेते किलवाचिकं क्रिया।।९०।।

भवता मयि यच्च मर्षितं तदशक्तेन न धर्मभीरुणा।
यदि युद्ध्यति वासवः स्वयं मम चित्ते तु तथापि न व्यथा।।९१।।

अधुनैव हतस्तवानुजः स भवानप्यधुनैव विद्रुतः।
तदपि प्रतिभां न मुंचसी-व्यभिधायाऽकिरदर्जुनः शरान्।।९२।।

अथ मुष्टिमनुष्य तापनि-र्लघु विव्याध दृढ़ेन पत्रिणा।
अलुनाद्विजयोऽपि लीलया लवशो बाणशतेन तद्धनुः।।९३।।

---

१६. सूतपुत्रकर्णः (इत्यर्थः)

हृदि फाल्गुनबाण-ताडिते पुनरेवार्कसुते पलायिते।
किमिदं तव कर्ण साहसं व्यहसीदित्यभिधाय चोत्तरः।।६४।।

अतिवेगभरात् परापतद् गजगन्धर्वपदाति-यादसम्।
स्फुटशेखरपङ्कजश्रियं[17] विदधे शोणित-सिन्धुमर्जुनः।।६५।

हरिशङ्करयोरिव क्षणं ववृधे पाण्डवभीष्मयोः रणः।
न वियन्नदिशो न मेदिनी ददृशे सायकदुर्दिने तदा।।६६।।

हृदि भीष्मशरेण ताडितः शरजालं विचकार वासविः।
अमरा दधिरेऽतिविस्मयं न तथापि त्रिपथातनृद्भवः।।६७।।

समरेऽनतिरिक्तवत्तयो-रिति गाङ्गेयकिरीटमालिनोः।
ववृषः कुसुमानि देवताः कुरवस्तत्यजुरात्मगौरवम्।।६८।।

अथ पार्थ शरावपीडितो वसुजन्मा रथकूबरं[18] दधौ।
विजयेन चमूरभूत् तदा नलिनीवद् द्विरदेन लोलिता।।६९।।

अवलोक्य बलं समाकुलं कुरुराजः शरजालमाकिरन्[19]।
विजयं ज्वलमानमोजसा शलभो बह्निमिवोपजग्मिवान्।।१००।।

अथ सायकलक्षकोटिभिः स विकीर्णस्तरसा किरीटिना।
दधतुःकान्दिशीकता[20] कुरुराजो न जगाम निर्वृतिम्।।१०१।।

---

१७. शेखर?
१८. कूबरस्तु युगन्धरः (इत्यमरः)
कूबरस्त्रिषु चारौ ना कुब्जकेऽस्त्री युगन्धरे (मेदिनी)
१९. माकिरन्?
२०. कान्दिशीको भयद्रुतः (इत्यमरः)

तमुवाच स हं धनंजयः किमिदं कर्म करोषि कौरव।
तव जीवितकातरस्य ते निज दुर्योधनताऽपि नादृता।।१०२।।

अयमस्मि युधिष्ठरानुजः तव पृष्ठे विकिरन् शिलीमुखान्।
मदृते भवतो न रक्षिता तदलं वीर पलायनेन ते।।१०३।।

इति वादिनमर्जुनं तदा प्रतियोद्धुं नृपतौ समुद्यते।
गुरुभीष्मकृपार्कनन्दनप्रमुखास्तत्क्षणमुत्थिता भटाः।।१०४।।

सममेव समस्तकौरवैः क्रियमाणैः शरवर्षमर्जुनः।
विनिवार्य वनानल प्रभो हृदिसर्वान्पतत् स हेतिभिः।।१०५।।

युगपत् समरोद्यतामसा-वघसम्मोहननामभिः शरैः।
कुरुराज-चमूममूहत् विषयैर्मोह इवासतोमतिम्।।१०६।।

★वीरान् विराटतनया प्रहतोत्तरीयान् शङ्खस्वनेन सपदि प्रतिबोध्य सर्वान्।
दुर्योधनस्य मुकुटं च शरेण हित्वा हृष्टः पुरे निववृते पुरहूतपुत्रः।।१०७।।

मामद्य मा नृपतये विनिवेदयेथाः सर्वे भवेम न चिरेण वयं प्रकाशाः।
उक्तः स वर्त्मनि किरीटवतेति गत्वा प्रीतं विराटतनयः[२१] पितरं ववन्दे ।।१०८।।

★ रश्मीन्समुत्सृज्य ततो महात्मा, रतादवप्लुत्य विराटपुत्रः।
वस्त्राम्युपार्धाय महारथानां तूणं पुनः स्व रथमारुरोह।।
दुर्योधनस्योत्तम रत्नचित्रं, विच्छेद पार्थो मुकुटं शरेण।
आमन्त्र्य वीरांश्च तथैव मान्यान्, गाण्डीवघोषेम विनाद्य लोकान्।।
(वि.प. ६१.१५.२७)

२१. विराटतनयः

कथय कथमजैषीः संयति द्रोणभीष्मो –

दयनसुतकृपाश्वत्थामदुर्योधनादीन्।

इति सदसि विराटेनोत्तरः पृच्छ्यमानो

विजयमुखमुदीक्ष्य स्मेरवक्त्रो बभूव।।१०९।।

निस्तीर्णानामितिगहनताज्ञातिभिस्सङ्गतानां

कंसारातिप्रभृतिभिरथ प्रीतये पाण्डवानाम्।

★सौभद्राय प्रमुदितमदात्तुत्तरां यद्विराट-

स्तन्मङ्गल्यादुपरि विदधे मङ्गलं भागधैयैः।।११०।।

इति श्री लक्ष्मीनारायणराजपण्डित श्री लक्ष्मीदत्तविरचिते पाण्डवचरिते महाकाव्ये उत्तरगोग्रहणोनाम सप्तदशस्सर्गः।

★ अभिमन्युर्महाबाहुः पुत्रो मम विशांपते।
जामाता तव युक्तो वै भर्त्ता च दुहितुस्तव।। (वि.प. ६७.३)

युद्धोद्योगो नाम अष्टादशस्सर्गः

यातेष्वथ ज्ञातिषु राजधानीं धनञ्जयो[1] धर्मसुतं बभाषे।
[2]अर्हत्युपायं समराय? कर्त्तुं दुर्योधनो जातु न सामसाध्यः।।१।।

व्रजन्तु दूता नृपतीन् वरीतुं न यावदामन्त्रयते स पापः।
कृष्णं तु लोकत्रयशासितारं निमन्त्रयामि स्वयमेव गत्वा।।२।।

तथेति तेनानुमतः स गत्वा मायाचमूवंचितधार्तराष्ट्रम्।
★सारथ्यहेतोर्हरवद् विरंचि-मामन्त्र्य नारायणमानिनाय।।३।।

निमन्त्रितानामथ पार्थिवानां दूतैरुपाप्लब्धमुपस्थितानाम्।
अक्षौहिणीः सप्त समीक्ष्य दृप्ता तपः सुतेनेदमयादि कृष्ण।।४।।

समागतोऽयं समयः पुरस्ता-दापत्सु मादुद्धर[3] वासुदेव।
भवेद्यथा कौरवपाण्डवानां शान्तिस्तथा चेष्टितुमर्हसि त्वम्।।५।।

किं कुर्म्महे क्षत्रियवंशजाता जित्वा रिपूनेव वयं कृतार्थाः।
यतामहे साम तथापि कर्त्तु-मस्मतकृते मा कुरवोऽविनश्यन्।।६।।

---

१. धनंजयः

२. इत्यधिकः पाठः।

३. मामुद्धर?

★ एवमुक्तस्तु कृष्णेन कुन्तीपुत्रो धनंजयः।
अयुध्यमानं सङ्ग्रामे वरायामास केशवम्।।उ.प. ७.१६

ग्रामानसौ पंच मयार्थमाणो दत्ते न मोहेन विहीनबुद्धिः।
धनाय यत्नः करणीय एव रज्यन्ति दारा अपि नाधनेषु।।७।।

दुरात्मभिर्यद्यपि विप्रकर्त्तुं न किंचिदेतैरवशिष्यते नः।
यत्राऽति धर्मस्तत एव लक्ष्मी-स्तथापि सत्यादिति न व्यतीमः।।८।।

धर्मादवश्यं विजयो ममस्या-दित्थं विदानोऽपि न युद्धमीहे।
राज्येन किं वा यदि बान्धवानां धनेन चेतस्यनुताप एव।।९।।

दैवे भवान् यस्य च पौरुषे स्तो भीमार्जुनो तस्य करे जयश्रीः।
अतस्तु मे कातरतामुपैति पश्यत् सदा कौरवनाशमन्तः।।१०।।

वचो निशम्येति युधिष्ठिरस्य दामोदरोऽवादि वृकोदरेण।
न कौरवाः पाण्डवदूषणेन यथा विनश्यन्ति तथा यतस्व।।११।।

विषानलछद्‌म दुरोदराणि स्मरन्नहं नैव लभे न शान्तिम्।
तथापि युद्धाद् विरतोऽस्मि माभू-द्दर्पोद्धतो भीम इति प्रवादः।।१२।।

विश्वम्भरो भीममथाबभाषे भवान् यदा शंसति शान्तिमित्थम्।
तत् किं लघीयानचलः किमग्निः शीतोऽथवा वारिधिरेव शुष्कः।।१३।।

द्यूतेऽपि येनायमवाप राज्यं तैनैव भाग्येन कृतं तदेतत्।
कृष्णाविनोदाय कृतप्रतिज्ञो दुर्योधनं यन्न जिहांससि त्वम्।।१४।।

स्वप्ने भयं वीक्षितवानसि त्वं स्तम्भः किमूरु तव बाधते वा।
सदैव दुश्शासनशोणितार्थी यदद्य भूयो यतसे शमाय।।१५।।

प्रत्याह भीमोऽथ यदस्य योग्यं क्षिप्तस्त्वयाहं तदपि ब्रवीमि।
कुर्यादधः पादतलेन सर्वान् विरोधिनो माधव वासरात्वे।।१६।।

दोर्दण्डयोरन्तरमेतयोर्मे विलोक्य व्योम समानमेव।
तस्मिन् गतः सन् युधिमुद्यते यो लोकेऽवलोके न तथा पुमांसम्।।१७।।

भावं तव ज्ञातुमवोचमेव भ्रातर्न्नतु त्वामहमाक्षिपामि।
नार्यस्तथा वैद यथाहमोजः तवेति भीमः स्वभुवानुनिन्ये।।१८।।

अभेदमूचे नकुलानुजन्मा ते सन्धये माधव★ मा यतस्व।
तिष्ठन्तु सर्वे शमयामि सोऽहं पांचालपुत्रीह्दयानुतापम्।।१९।।

शैनेयमुख्यैरथ राजवर्गैः सम्भावितायां सहदेववाचि।
नत्रद्वयीमन्तरवाष्पविन्दुः श्वासैः पुरःस्थापितदुःखवार्ताः।।२०।।

साम्नासुखं तिष्ठतु धर्मराजो विस्मृत्य दुःखानि च तानि तानि।
एकस्तु नाऽयं तव भागिनेयः सन्धित्सते सम्बरवैरिकल्पः।।२१।।

यत् द्रौपदेयैः सहितोऽभिमन्युः शैनेयमादाय सहोत्तरेण।
सद् भ्रातृभिः संयति युज्यमानः सन्धावयं पूरयिता पितृणाम्।।२२।।

सत्वं सखा यादवचक्रवर्ती वैयासिको मे श्वशुरः स पाण्डुः।
पिताग्रणीस्सृंजय सोमकानां भर्त्तार एते विदितास्तवैव।।२३।।

एतादृशं पश्य ममावलेपं युष्मासु जीवत्सु कृतं निकृष्टैः।
उत्थाय वेणीमिति दर्शयन्ती कृष्णाय कृष्णा गहनं रुरोद।।२४।

★ परिशिष्ट भागे दर्शनीयम्।

★ दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवस्सवयम्भुः (इत्यमरः)

कुलकम् :–

प्रवेपमानाधरपल्लवाया बाष्पान्धकारी कृतलोचनायाः।
श्रुत्वा विलापं द्रुपदात्मजायाः केषां तदा गह्वरितं न चेतः।।२५।।

आश्वासयन् तामथ वासुदेवो मा देवि रोदीस्तवशल्यमेतत्।
उत्पाटयेदेष हिडिम्बि[४] हन्ता दुश्शासनोरः स्थलशोणिताक्तः।।२६।।

अथेति सत्यं युयुधा न यावत् कियच्चिरं ताम्यतु याज्ञसेनी।
इति ब्रुवन्नेव रथेन कृष्णः प्रतस्थिवान् कौरवपत्तनाय।।२७।।

अत्रान्तरे संसदि पार्थिवानां दुर्योधनं बोधयता हितानि।
किन्तैरवादीति स तेन पृष्टो जगाद शाशार्ङ्गीमणिराम्बिकयेम्।।२८।।

मामभ्यधासीदिति धर्मराजो यद्यंजसा साम तदा समीहे।
परन्तु राधासुत-सौबलाशीराशीविषः शाम्यति विश्वसेत् कः।।२९।।

गुरुं नमस्कृत्य गिरा मम त्वं मध्येसभं सजय वक्ष्यतीति।
भवद्भिरस्मत् कुलदूषणज्ञैः नियम्यते कि न विमुह्यमानः।।३०।।

मोहेन पुंसामपहन्यते धीर्हता च सा हन्ति हिनस्ति लज्जाम्।
सा हिंसिता सेवयते च पापं तत् सेव्यमानं महतेऽजयाय ।।३१।।

सत्यं जयो मे न तथापि योद्धु-मिच्छामि माभूद्विलयः कुरूणाम्।
बह्यात्मनीने जगतामनिष्टे कुर्वन्ति पादं पथि पाण्डुपुत्राः।।३२।।

तुङ्कृत्य संप्रस्थितवानथाहमाहूय तत्रानुचरेण जिष्णोः।
प्रवेशितः स्वर्गइवावतीर्णे पत्राभिमन्योरपि न प्रवेशः।।३३।।

---

४. हिडिम्ब?

आलोकि सत्योऽ[५]पहितस्य विष्णोः पादाब्जमङ्के कलयन् कराभ्याम्।
कृष्णाभुजालम्बितपृष्ठभागो गाण्डीवसम्भूषितदक्षिणोरुः।।३४।।

आश्चर्यमाकस्मिक्रमप्रमेयं लोकत्रयीलोचनलाभनीयम्।
अद्वैतमालोक्य हि तच्चतुर्णां[६] पितुर्ममाभूदथ लोमहर्षः।।३५।।

ततो जगादेति विहस्य कृष्णो नत्वा यथावत् कुरवोऽभिषेयाः।
युधिष्ठिरायार्हति दातुमर्श-मारण्यको[७] हि त्वरते हिताय।।३६।।

क्षिप्तोऽमुना खाण्डवदाहनोऽयं सम्भूय भीमेन समीरणेन।
माधारयत् कौरवकाननेषु निदाधकालीनहुताशलीलाम्।।३७।।

संशोषयेद्वेषरुषा समुद्रा-नद्रीनकाण्डे लवशो विदध्यात्।
दिवोकसं पातयिताऽपि सङ्ख्ये सख्यामया साहसिकः किरीटी।।३८।।

दुर्योधनं बोधय मा विगीस्त्वं कर्णस्य वाचा जयमध्यवस्यन्।
गन्धर्वयुद्धोत्तरगोग्रहाभ्या-मस्मिन् न भग्ना तव किं जयाशा।।३९।।

रामेण[८] शप्तस्य हि सूतसूनोः शस्त्रो प्रकाशेत न मृत्युकाले।
तत् पातितः पार्थशरैः सभृत्यः पांशून् परं यास्यसि युद्धभूमेः।।४०।।

मामर्जुनः प्रस्थितमित्युवाच वाच्यास्त्वया युद्धसमुद्धरास्ते।
कुर्वन्तु कृत्यानि भजन्तु भोगान् संसारिधर्म न चिरात्-त्यजेयुः[९]।।४१।।

---

५. सत्या-सत्यभामा तया उपहितस्येति पूर्वश्लोकार्थः तेन न चतुष्टवानुपपत्तिरिति।

६. चतुर्णाम्रुक्मसत्यभामा विष्णुद्रोपदीधनंजयानाम्। (हस्तलेखे पार्श्व टिप्पणी रूपेण लिखितमस्ति)।

७. आरण्यको-वनवासी। (हस्तलेखेपाश्वङ्प्पणीरूपेण टङ्कितमस्ति।

८. परशुरामेणेत्यर्थः

९. त्यजेयुः

अथाम्बिकेयस्तनयं बभाषे वाचश्श्रुता वत्स रथाङ्गपाणेः।
दयस्व गान्धारभुवे च मह्यं सन्धेहि दुर्योधन धर्मराजात्[१०]।।४२।।

लोकत्रयप्रत्यवहार[११] शक्ते कृप्ते हि तस्मिन्नविजातशत्रौ।
रक्षेति येन क्षणमप्यलीकं दन्दह्यमानं तव नेक्षते स।।४३।।

कर्णो जगादाथ नरेन्द्रमाहे-रहं निहन्तास्मि धनंजयंच।
दुर्योधनः पातयिता च भीमं कच्चित् ततो योत्स्यति कः परेषाम्।।४४।।

अथोत्तरं सान्तनवेन[१२] दत्तं यः पातये संयति पुष्पवन्तो।
ईशानविष्णुर्विजये तदा वा भीमार्जुनौ जेष्यति चेत् तदा सः।।४५।।

पाण्डोः सुताः सूतजसन्तु तावत् सहेत कः केकयकुन्तिभोजौ।
सहेत कः सात्यकिमत्स्य-पांड्यः[१३] पांचाल-चेदीश्वर-चेकितानान्।।४६।।

जानासि राधासुत नाभिमन्युं धनंजयस्यैष नवावतारः।
युष्मादृशां लक्षमपिक्षणेन कृशानुवद्धक्ष्यति वैरिकक्षान्।।४७।।

दुर्योधन त्वंच तथा[१४] विधेहि यथा वदत्येष पिता भवन्तम्।
अथाकुलीनस्य तु सूतसूनोर्वाचा कुरून् मास्म विनीनसस्त्वम्।।४८।।

या शक्रदत्तास्य करे च शक्तिः तामच्युतो धक्ष्यति हुङ्कृतेन।
यः पूजितोऽमुष्य शरो हि ब्रध्नः तं पत्तिभिः पातयिता च पार्थः।।४९।।

---

१०. धर्मराजात्?
११. प्रत्यवाहर?
१२. शान्तनवेन?
१३. पाढ्य
१४. तथा

निन्दन् व्यथा[१५]पार्थगुणानुरक्तो भीष्मो[१६] न मां द्रक्ष्यति शस्त्रहस्तम्।
इति क्रुधावस्फुरिताधरोष्ठः शस्त्राणि सन्ध्यास? रवेस्तनूजः।।५०।।

एवं विवादे कुरु सैनिकाना-मुपेत्य तत्रापचितो[१७] मुकुन्दः।
मामान्वय[१८] सौबल सम्मतेन स वक्तुमारम्भि सुयोधनेन।।५१।।

विश्वम्भरस्याथ तनूरुहेभ्यो बर्हिस्सखा ब्रह्ममुखा निरीयुः।
रामार्जुनौ तस्थतुरंशकूटे भीमादयः पादतले च तस्थुः।।५२।।

निर्याय वीरेषु निमीलितेषू कृष्णेन कुन्तीमथ शान्तयित्वा।
प्रतिष्ठमानेन निवर्त्य सर्वान् करेण धृत्वा जगदे स कर्णः।।५३।।

★जानामि यत् त्वं जनितोऽसि कुन्त्यां विवस्वता तत् कथयामि किं ते।
तदेहि राजा भव पाण्डवानां युधिष्ठिरो विन्दतु यौवराज्यम्।।५४।।

जानीहि नैते कुरुराज वीराः स्थास्यन्ति भीमार्जुनयोः पुरस्सात्।
प्राप्तं गृहाण स्वयमाधिपत्यं मा कौरवाणामनुगः पदव्या।।५५।।

वैकर्त्तनः कृष्णमथोदमूचे यथात्थ मां यादवनाथ योग्यम्।
परन्तु दुर्योधनमद्य हास्यन् न कस्य भूयासमहं विहस्यः।।५६।।

स त्वं जगन्नायक यस्य नेता योद्धा किरीटी स च भीमसेनः।
जाने जयस्तस्य युधिष्ठिरस्य तथापि मुंचामि न धार्तराष्ट्रम्।।५७।।

---

१५. वृथा
१६. भीष्मः
★ भास्कराहस्करब्रध्नप्रभाकरविभाकराः (इत्यमरः)
१७. मान्वयत्?

नीते समाप्तिं मयि फाल्गुनेन तस्मिन् मया वा जगदेकवीरे।
पाण्डोः सुताः पंच परिपृथिव्यां स्थास्यन्ति दामोदर विद्धि सत्यम्।।५८।।

तूर्णं कुरुक्षेत्रमुपैतु तस्मादक्षोहिणीभिः स हि धर्मराजः।
चिराय तृष्णाकुलिता कुरुणां रक्तासवैः तृप्यतु भूतधात्री।।५६।।

तथेति कर्ण पुरजिद्विसृज्य संगम्य धर्मात्मजमित्युवाच।
दुर्योधनो धार्मिक सामवत्ते दत्ते न भूमेरपि सूचिकाग्रम्।।६०।।

अलं विलम्बेन वयं विभाते कूर्म्मो विधानं कुरुजाङ्गलाय।
निर्वापयाम स्त्वदरातिगर्वं तान्ताऽचिरं तुष्यतु हन्त कुन्ती।।६१।।

इत्थं हरौ तत्र वदत्युलूको जगाद पार्थानिदमभ्युपेत्य।
राजा कुरुणां कुरुजाङ्गल[१६]स्थो-दयाह युष्मानवकर्णयध्वम्।।६२।।

शश्वन्मया विप्रकृता भवन्तो यत् सत्यभीता गहनं हसन्ते।
तत्साम्प्रतं योद्धुमुपैति बद्ध्वा कण्ठे कुठारं भजताथ रामाम्[२०]।।६३।।

कृष्णा यदा दास्यमुदासयद्वः तदा क्व भीमः क्व च गाण्डिवो वा।
कृष्णोऽयमाभीरकुलेन पुष्टः क्व वा तदासीत् भवतां गतिर्यः।।६४।।

उलूकमूचे विजयस्तदानी-मोजायितुं साधु सुयोधनस्य।
गत्वा वदोलूकमपाण्डुपुत्रान् द्रष्टा यथावत् कुरुजाङ्गलस्थान्।।६५।।

---

१८. पूजानमस्यापचितिः (इत्यमरः)

★ सोऽसि कर्ण तथा जातः पाण्डोः पुत्रोऽसि धर्मतः।
निग्रहाद् धर्मशास्त्राणा-मेहि राजा भविष्यसि।।उ०प० १३७.६।।

१६. जाग्गलस्थः इदमाह?

आयोजनस्थाय सुयोधनाय गाण्डीवमेवोत्तरमेव दाता।
कदापि गोविन्दपदारवृन्द[२१] वन्दारवो नोत्तरयन्ति वाचा।।६६।।

दहामि वः पाशुपतेन चार किन्त्वाजिदूतो भवानित्युपेक्षे।
कर्त्तुम् मृषा नार्हति हन्त निन्दा-मापद्विधो गोपकिशोरकस्य।।६७।।

गोपः शिशुः कुप्यति नाम यस्मै तस्यावतारं न विलोकयामि।
अतःपरं भीष्मगुरू यदंशा-वन्ये तव स्युः परमाणवोऽपि।।६८।।

इत्थं क्रुधा जल्पक एष जिष्णोः कृष्णो जगादानुमतो नृपाणाम्।
उत्तिष्ठ राजन् विजयाय पश्य धर्मस्य लीलां चिरसंचितस्य।।६९।।

राधेयमूलाय सुयोधनाय पुराणयोः कोपमुदीक्ष्य पुंसोः।
त्रासेन जातो भवदंशुजालः त्वरामधादस्तमनाय भानुः।।७०।।

यदा यदा हन्त मरीचिमाली जगाम पार्श्वेचरमाचलस्य?
तदा तदा चुम्बनसत्वराभूदाश्लेषमन्दा सुहृदो रथाङ्गी।।७१।।

सरोजिनीनां मुखमुद्रणाभी रथाङ्गयोः कातरया च दृष्ट्या।
निषिद्धमानोऽपि पपात दैवादस्ता-चलादम्बुनिधौ दिनेशः।।७२।।

अथोत्सुका सन्धिदिवावसाने कृष्णेव सन्ध्या सहसानुरक्ता।
तदेष्यतो धर्मभुव; सुधांशोः प्रसादमासाद्य बभूव तूष्णीम्।।७३।।

म्लानः खालानामपि चेष्टितेभ्यो हृद्भ्योऽपि सारङ्गदृशा[२२]दुरुहः।
अह्नाय मोहादपि दृष्टिरोधी जहार लोकत्रयमन्धकारः।।७४।।

---

२०. बामाम्(इति पाठान्तरम्)
२१. अरविन्द?
२२. शारङ्गदृशाम्

वियच्चकाशे तिमिराणि चेरुः सिन्दूरमुद्रामुदयः प्रपेदे।
राजाद्विजानामचिरादजागः कुमुद्वतीनां वदना नि[२३] रेजुः।।७५।।

दिक्षु प्रसादे किमु कौमुदीनां चारेऽथवा वर्त्मनि मानिनीनाम्[२४]।
पलायने वा तमसां तदानी[२५] सर्वात्मना वेग इवाविरासीत्।।७६।।

द्युर्वारिधिः प्रागुदयात् सुधांशो ररंज पश्चादुदये प्रसन्नः।
ज्योत्स्नातरङ्गैः परिपूरिताशो मन्दानिलैरुत्तरलीबभूव।।७७।।

एकातपत्रे रतिनायकस्य निशाकरे जाग्राति सानुरागम्।
एणीदृशो दिग्विजयाय सद्यो दधुः पताकिन्य इव प्रसाधाम्।।७८।।

ज्योत्स्नातरङ्गः कुमुदानि मुक्ताः सुधाकरः कोमलफेन पूरः।
एतावता तुल्यमभूत् पयोधेः नक्तं विशिष्ये[२६] पुनरङ्गनाभिः।।७९।।

छत्रं सुधांशुः कुसुमानि बाणा बलानि बाला ऋतवः सहायः।
जेतुं जगद् वांछति कामदेवे का वा विभूतिः महसाविरासीत्।।८०।।

प्रसाधनानि प्रमदा विधाय निधाय पादौ पथि बल्लभस्य।
रहस्यामालपकृतां सखीनां करं दधत्यः सुषमाम[२७]वाप।।८१।।

यदा यदा वल्गति पद्मयुग्मं तदा तदा कूजति राजहंसः।
विलासिनीनामभिसार-काले सखाविदस्येदमवादि यूनाम्।।८२।।

---

२३. वदनानि
२४. मानिनीनाम्?
२५. तदानीम्
२६. विजिग्ये इति पाठान्तरम्।
२७. सुषमा

विलिप्तकर्पूरपरागधारा हारावली दोलदुरोजभासाः।
दुकूलवत्यः[२८] कुमुदावतंसाः प्रतस्थिरे राजगृहं महिष्यः।।८३।।

बिलम्ब्य केलीगृहदेहलीषु सालीक[२९]मालीकरमुत्सृजन्त्यः।
भजन्ति शालाशयनीन यावत् यूनां मनोऽदूयत तावदेव।।८४।।

प्रकोष्ठयोरर्पितपादपद्मा स्मित्वा यदालोकत पक्ष्मलाक्षी।
यद्वाप्रियोऽचष्ट्त सम्भ्रमेण न तावता किं मदनः कृतार्थः।।८५।।

पत्राणि वक्त्राणि मधूनि वाचः श्वासो न वासो नयने सरोजे।
ईष्यापदंशः सह कामिनीभिः प्रकारि[३०] वीरैरथ वीरपानम्।।८६।।

अकारणं क्रोधमपूर्णवाक्यं समस्त कण्ठग्रहमङ्गनानाम्।
अनादृताकूतमनर्धहासं मदोऽपि लावण्यमुदाजहार।।८७।।

नतभ्रुवामाननमभ्युपेतं दृशा भटानामधरो मुखेन।
कण्ठोऽथ दोष्णा कवरी करेण कान्ताः प्रियैस्ताभिरभीक्रमेण।।८८।।

चुकूज शङ्खो ननृते मृगाभ्यां कलानिधिर्मौक्तिकमुज्जहार।
नक्षत्रमालाभिरपाति मेरोः स्थेमानमालम्बत हन्त शम्पा।।८९।।

आर्द्रीभवत् स्वेदमरन्दलेशैर्नखांशु किंजल्कदलांगुलीकम्।
करारवृन्दं[३१] कमलेक्षणायाः कश्चिन्नधायोरसि निर्ववाव।।९०।।

---

२८. दुकुलवत्यः
२९. सालीक
३०. प्रकारि?
३१. करारविन्दम?

कपोलयोर्न्यस्यकरौ कथंचित् कान्तेन कान्तामुखमुन्नमय्य।
नाचुम्बि तत्राहित[३२] लोचनेन ★चित्रार्पितेनेव चिराय तस्थे।।६१।।

तासां हृदि न्यस्य करो कथंचि-दाकस्मिकं नीविमपि स्पृशन्तः।
क्रुधा करालैर्मधुरैः स्मितेन दोलां युवानो गमिता दृगन्तैः।।६२।।

धौताननेन्दौ[३३] कवरी च यादृक् तादृककपोले मकरी न किम्वा।
संख्याःकरे किंचिपरिच्छदस्ते कलावति क्लाम्यसि कस्य हेतोः।।६३।।

इतीति शंसन्नपरोविलासी[३४] करेण धृत्वा करमुत्पलाक्ष्याः।
कपोलपालीमथ वाष्पसिक्तां सम्मार्जयन्नेव मुखं चुचुम्ब।।६४।।

युग्मकम्—

विहारभाजामिति सैनिकानां सीमन्तिनीमङ्गलमेदिनीभिः।
समुल्लसत् साहसलालसानां वरुथिनीवद् विरराम रात्रिः।।६५।।

कर्षन् परागं कमलोदरेभ्यःश्चुम्बन् तडागेषु[३५] तरङ्गमालाः।
वपुर्विलासालसमङ्गनानां विलोक्य मन्दं पवनश्चवाल।।६६।।

सन्तानयन् कोकिलकूजितानि सम्भावयन् पङ्कजसौरभानि।
उज्जीवयन् वामदृशां च भावं पद्माटवीनां पवनः प्रतस्थे।।६७।।

प्रासाद[३६]वातायनवातवासा-नासाद्य कासारसरोरुहेभ्यः।
आस्येषु निस्पन्दिनि निष्पतन्तो मृगीदृशो जागरयन्त[३७] भृङ्गाः।।६८।।

---

३२. हित?

★ चित्रार्पितारम्भ इवावतस्ये (कादिलास रघुवंश)

३३. द्यौताननेन्दौ

३४. नपरो

३५. तडागेषु।

३६. प्रासाद

३७. जगारयन्त

अत्रान्तरे कामरसावसनाने अयं विराजा मिव[३८] वीरभावः।
नीहारभानौ पतिते पयोधो भित्त्वान्धकारं[३९] रविरुज्जगाम।।९९।।

उदेति पूर्वांचलरत्नशेखरोऽरवीन्दलक्ष्मीः[४०] कुरविन्दमण्डपः।
रथाङ्गनानामनुरागसागरः श्रियेतर व्योमतमालपल्लवः।।१००।।

दिक्करङ्गलोचनो कुचादिकुङ्कुमद्रवो।
दारितान्धकारवारणा सृगार्द्रकेसरी।।१०१।।

युग्मकमः–

अहर्लक्ष्मीलीलामणिमुकुटमाखण्डलहरिद्
वधूटीतारङ्गवियदलिकसिन्दूरतिलकम्।
प्रदीपं रोदस्यो कमलवनलावण्यनिकरं
पुरस्तल्पोत्थाय तपनमुपतिष्ठन् चमुपते।।१०२।।

दानप्रीतेरिति मधुकरैर्वल्गिभिः स्वैरहस्ते
-- - - - रत्नसवनिताः श्रेयसीः वा दृगन्तः।
स्वीकुर्वन्तः सरसविसिनीमङ्गलाचारमाला-
मूर्वीपालाः सर इव गजास्तल्पमुंझाम्बभूवुः।।१०३।।

इति श्री लक्ष्मीनारायण राय राजपण्डित कवि डिण्डिम श्री लक्ष्मीदत्त विरचिते पाण्डवचरिते महाकाव्ये युद्धोद्योगो नामाष्टादशस्सर्गः।

---

३८. विराजामिव

३९. भित्वा

४०. अरविन्द

अभिमन्युवधोनामोनविंशतितमस्सर्गः

अथाभ्यर्च्य धातारमाधायवह्निं प्रसाद्यावनिद्यौ सदो दक्षिणाभिः।
मुदा दंशिताः सैनिकाराव्रजन्तः कुरुक्षेत्रमारादराजन् विराजः।।१।।

विपर्यस्तवेलाविवापारवारो युगान्ते ज्वलन्ताविवादित्यचन्द्रौ।
बलौधावलब्ध्वा रणोत्साहभासा बलन्तावनष्टावभूताम्।।२।।

भुवाक्रान्तसम्भ्रान्तभोगीन्द्रचूडा चमत्कुर्म्म चंचद्भुवो रेणुभारैः।
निरस्तेऽनयोः सेनयोः सन्निपाते त्रिलोकी क्व लीना तदा वेद को वा।।३।।

हयानां रयोत्थैः पताकाग्रजातैः स्वनत् कर्णपातप्रभूतैरिभानाम्।
निरस्तेषु वातैस्समस्तेषु धूली-वितानेषु भूयो व्यराजन्त वीराः।।४।।

ततो वारिजं वादयामासुरेके परे ज्यामकर्षन् मुरोजग्मुरन्ये।
कियन्तो भुजस्तम् समीक्षाम्बभूवुर्जजागार वीरोद्धतः कोऽपि भावः।।५।।

अथालोक्य सम्बन्धिनः सव्यसाची मुदा चीयमानावदानप्रसादान्।
कथं नाम हन्यामहं बन्धुवर्गा-नतश्चिन्तया नाध्यगच्छत् विधेयम्।।६।।

परित्यज्य गाण्डीवमच्छायवल्गं रथोपान्तमाश्रित्य तं तस्थिवांसम्।
प्रसाध्यं परं सांख्यपातंजलाभ्या-मभाषीष्ट वेदान्तवेद्यं मुकुन्दः।।७।।

तनौ भूर्भुवं स्वर्मुखं वीक्ष्य विश्वं शिवाकंसविध्वंसनस्य प्रबुद्धः।
रणारम्भ-संरम्भघोरं बभार स्वरूपं स कल्पान्तकालानलोऽयम्।।८।।

गुरून् भीष्मपूर्वान् नमस्कृत्य सर्वान् पुरस्कृत्य भर्त्तान् युयुत्सुं प्रहृष्टः।
निजां वाहिनीमेत्य जज्वालराजा दिधिक्षन्निवाशेषविश्वं हुताशः।।९।।

★अनन्तं नृपः पुण्ड्रकं भीमसेनो महेन्द्रात्मजो देवदत्तं च दध्मौ।
तदुत्थः स्वनः पांचजन्यः सुनादो मिलत् पुष्पधोषध्वनिः संजगाहे ।।१०।।

नदत् वीरवाद्यं रणत् सिंहनादम् पराभूय भानुं पतद्बाणवर्षम्।
यशोलुब्धनिःक्षुब्धयोधं ध्वजिन्योः क्षणंगोरमासीदथ द्वन्द्वयुद्धम्।।११।।

रणोत्साहमत्ता यशोदत्तचित्ताः शरीरेषु वारिप्रवाहेष्वनास्थाः।
धनुर्वेदशिक्षापरीक्षासु दक्षाः पुरस्तो न पृष्ठं भटाः कोऽपि[1] जग्मुः ।।१२।।

शरानुत्किरन्तोऽरिभिर्लून-चापाः क्रुधा स्पष्टशक्त्यृष्टि[2]यष्टिप्रहाराः।
हताश्वास्तथा केऽपि निस्त्रिंशहस्ताः समं विक्रमेणैव निर्वाणमीयुः।।१३।।

पराक्रान्तिभाजि क्षणादाजि दक्षे-परस्मिन् परं व्यूहमध्यप्रविष्टे।
द्विषत् यत्रिणां वृष्टयः स्वर्वधूटी-कृपादृष्टयः तुल्यकालन्निपेतुः।।१४।।

★ पांचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं बीमकर्मा वृकोदरः।।
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुधोषमणिपुष्पकौ।। भ. गीता १५.१६।।

१. केऽपि

२. शक्त्यृष्टि

रथेष्वश्वपत्ति[3] व्रजानुत्क्षिपद्भिः शरौघैस्तिरोभूतरोदस्थलानि[4]।
अथ द्वैरथानां सहस्राणि लक्षं यशः क्षालितक्षात्रधर्माण्ययुध्यन् ।।१५।।

समीकावनीकालरुद्रैकमूर्ते – रलन्नाग्रतः स्थातुमन्योऽभिमन्योः।
विहायेति गाण्डीविनं बाणवर्षी पुरोऽभूदमर्षी जवेनास्य भीष्मः।।१६।।

गुरो[5]र्बाणवर्षं शिशुं वारयित्वा हठादच्छिनत् पत्रिणा केतुतालम्।
शरैः शैल्यहार्दिक्यशारद्वतानां क्रुधाधावतां मर्मबाधामधासीत्।।१७।।

बले[6] फाल्गुने सम्यगालोचमाने यथाशक्ति जेतुं नदीजे सपत्ने।
धनुर्ज्यारथानां परीवर्त्तलीला-नटोऽसौ पराचक्रमे बालचन्द्रः।।१८।।

प्रकोपेन देवव्रतं दिव्यमस्त्रं प्रयुर्ज्जानमालोक्य बाणोपविष्टाः।
नरे कर्मणा मानुषन्नेव युद्धयत्यनेकेऽभवन्नुत्पथस्था रथस्थाः।।१९।।

स दुर्योधनप्रेरितः क्षात्रधर्मं धिगित्यापगेयः परित्यज्य पार्थम्।
अलं चालयामास पांचालसेनां समुत्थापयन्नापगाः शोणितौघैः।।२०।।

शरैरावृताः शोणिता निस्त्रवन्तः पतन्तः पृथिव्यामराजन् विराज;[7]।
मधौ पुष्पितानां पलाशद्रुमाणां वहन्तः श्रियं मारुतान्दोलितानाम्।।२१।।

---

३. रतेष्वश्व
४. भूद्यावौ रोदस्यौ रोदसी च ते (इत्यमरः)
५. गुरो?
६. बले ? रणे इत्यपि प्रतिभाति।
७. मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् (इत्यमरः)

रणे[८] भीष्म भल्लेन संक्षिप्यमाणे समीक्ष्यक्षपामन्तरायं महान्तम्।
विधायावहारं कृताशेषकृत्यः सभायां बभाषे हरिं धर्मराजः।।२२।।

हरे वाहिनीं मे दहत्येष भीष्मो निदाधे वनालीमिव ज्वालमाली।
अतो देव देवव्रतायान्तकाय क्षमे दातुमेतानहं न क्षितीशान्।।२३।।

बहूनेव दिव्यायु[९] धैः सोऽवधीन्मे रथान् वीक्ष्य मध्यस्थतामस्य जिष्णोः।
परं भीम एष स्थितः क्षात्रधर्मे विचक्राम तेनाद्य सेनावशिष्टा[१०]।।२४।।

समाश्वासयामास विश्वम्भरस्तं जयस्तेमहीपाल चिन्तां जहीहि।
सहैकेन[११] भीमेन गाण्डीवधन्वा दहत्येष विश्वानि के धार्त्तराष्ट्राः।।२५।।

न जानासि सेनान्यमाग्नेयमेनं न भूमीन्द्र माद्रीसुतावश्विनौ वा।
श्रुतः किं न ते सात्यकिः सत्यसन्धो न देवव्रतस्यान्तको वा शिखण्डी।।२६।।

यदि प्रातरस्यापगेयं प्रतिस्यात् सुनासीरसूनोरुदासीनतेव।
तदा वज्रनाभेन वज्रेण सत्यं विडौजाभवेयं तदोजायिताद्रेः।।२७।।

अथ प्रांजलिर्व्याहरद् धर्मराजो विजेतास्महे नाथ युष्मत्सनाथाः।
तदस्मत् कृते मात्मसत्यं विहासी-स्त्रिलोकी कलस्याः कुलाली कृपा ते।।२८।।

---

८. दिव्यायुधैः
९. सेनावशिष्टा
१०. सहैकेन
११. स्रोतस्वती द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽपगा (इत्यमरः)

गिरैवाथ तस्योदरे सानुरागे मुराराविवोद्यत् प्रभापाटलाक्षे।
रणो दारुणः पाण्डवैः कौरवाणां तदा दैवतैर्दानवानामिवाऽभूत्।।२९।।

कृपाद्रौणगाङ्गेयदुर्योधनाग्रे हतानेकसाहस्त्रसेनासहस्त्रम्।
इरावन्तमेकान्तविक्रान्तवन्तं जहाराथ रात्रिंचरोऽलम्बुषस्तम्।।३०।।

ततः कालकंजाहिते हव्यवाहे क्रुधा कौरवारण्यदाहप्रवृत्ते।
नदन् सिंहनादं नदीजस्तडिद्वा - नवारं शरासारमुज्झांचकार।।३१।।

अधारि? प्रभोदग्रभीष्मास्त्रजाल-प्रतानायमानप्रतापप्रभावः।
पुनश्छिन्न मूलानिव क्षोणिपाल-द्रुमानिन्द्रजन्मांशुमाली ततान।।३२।।

ततः स्यन्दनैर्मर्दयन् स्पन्दनौघान् गजैरेव निघ्नन् गजानेकवीरः।
विदूरं क्षिपन्नूरुवातैः पदातीन् जगत्प्राणजन्मा कलिङ्गान् ममन्थ।।३३।।

अथोत्थाय शारद्वतद्रोणगङ्गा-सुतद्रोणिमद्रेशहार्दिक्यमुख्याः।
दुराशस्य दुर्योधनस्यापकारात् पृथासूनुसेना कृतान्तीबभूवुः।।३४।।

ततः सत्यकापत्यभीमाभिमन्युत्रिवेदीरणक्षोणिवेदीप्रतिष्ठान्।
विपक्षावनीपालकक्षानधाक्षीदिषूदर्चिषा नुद्यमानेन सद्यः।।३५।।

बलं पाण्डवीर्य परीत्य ज्वलन्तं स्त्रवन्ती[१२]भवं बाडवं सम्वरीतुम्।
न भीमो न वा सात्यकिर्नाभियुनं गाण्डीवधन्वाऽपि शक्तो बभूव।।३६।।

---

१२. रक्ष्यमाणः

हरे मां जहि स्यामहं श्लाघ्यमृत्युः सरित्सूनुनाहूयमानं तमित्थम्।
क्रुधा चक्रमादाय धावन्तमाजौ दधाव र्जुनः पादयोः पद्मनाभम्।।३७।।

शपे श्रीनिवास त्वया शातयिष्ये शरैः शान्तनव्यं शिखण्डिद्वितीयः।
गिरेति प्रतीतः पुराणस्य सख्युः पुनः स्यन्दनं देवकीनन्दनोऽगात्।।३८।।

बले भीष्मभीत्या ततो भज्यमाने महास्त्रं स माहेन्द्रमाविधाय।
दशस्यन्दनानां सहस्राणि सद्योऽवधीत् सप्तदन्ताबलानां शतानि।।३९।।

त्वया नित्यमेकायुतं निघ्नता मे नवाहीन हा हा बलं शिष्टमल्पम्।
तदद्य स्वमृत्युं वदाथेति नक्तं तपस्येन पृष्टः तमाचष्टभीष्मः।।४०।।

असौ काशिराजस्य कन्या शिखण्डी वधार्थं ममाभूद्वरेणेन्दुमौलेः।
पुरस्कृत्य तं मामलं जेष्यसि त्वं शतेनापि न त्वन्यथा वत्सराणाम्।।४१।।

तथेति प्रतीतागुरुप्रीतिभाजः प्रणम्यापगेयं गलद्बाष्पधाराः।
परावृत्य नारायणाराधिनस्ते त्रियामा विरामाय तस्थुः सकामाः।।४२।।

प्रभाते ततः सोऽभिनेताभिमन्यू-रसंवीरमन्यूनमन्यू रराज।
क्षतक्षत्रियप्रोच्छलच्छोणिताम्बु-च्छटा पिंछिलाजिस्थलाबद्ध नृत्यः।।४३।।

कृपद्रोणभीष्मादयो वीरभद्रा-सुभद्राजमभ्यद्रवन् धार्त्तराष्ट्राः।
पृथक्कर्णिकारैस्सतानेकवीरो मुदा भासमानः समानर्च्च बाणैः।।४४।।

---

१३. अधावद्धनुः

महाश्चर्यमाचार्यदेवव्रताभ्यां सकोपप्रयुक्तानि दिव्यायुधानि।
न्यषेधीत् स दिव्यायुधैरेकवीरः शराभ्यां तयोः किंचकेतुं चकर्त्त।।४५।।

बले हीयमाने भिया हन्त भैष्म्या पुनश्चक्रमालोकमाने मुकुन्दे।
पुराणस्य सख्युः प्रियं पूरयिष्यन् भृशं पाटलाक्षः किरीटी बभाषे।।४६।।

हरे वाहय त्वं हयानद्य सोऽयं शिखण्डी मया विश्वतो रक्षमा[१३]णः।
क्षितौ पातयित्वा शरैः सान्तनव्यं प्रकर्वीत निर्वीरमूर्वीकदम्बम्।।४७।।

तथेति प्रसन्नेन पीताम्बरेण स्वयं श्रावितः पार्थवाक्यं शिखण्डी।
अथावद्ध[१४]नुर्नादयन्नाततज्यं स वर्ज्यान्नव? क्षात्रधर्मेण भीष्मम्।।४८।।

कृपद्रोणभूरिश्रवः शल्यमुख्या-नहो रुद्धता मार्गणैरर्द्धमार्गे।
जयेनाभिगुप्तं शरैः. पीड्यमानं तमालोक्य शश्वत् निशास्वासभीष्मः।।४६।।

कुरुव्यूहमुद्धूय भीमाभिमन्यू जयन्तावथालोक्य ते यावदैन्द्रिः।
तपःसूनुसेना चरानापगेयः शरैस्तावदुच्चापचैस्संजहार।।५०।।

क्रुधा कृत्तचापोऽमुना बाणवर्षी नवीनं धनुर्य्यद्यदादत्त भीष्मः।
गुणारोपतुल्यक्षणं तन्युवन्तं स्तुवन्नर्जुनं चेतसा सिस्मये सः।।५१।।

ततो मण्डलीभूतगाण्डीवकुण्डो - त्थितैः काण्डचण्डानिलैः खण्डितेषु।
कृपद्रोणमद्रेश्वर-द्रोणिदुर्यो-धनाग्रेषु भीष्मं शिखण्डी तताप।।५२।।

---

१४. तिष्ठत्सु

शरैः खण्डखण्डीकृतारातिचक्रः सुगाण्डीविना रक्षमाणः शिखण्डी।
मुहुः सर्वतः पश्यतश्तालकेतोः रथं बाणजालैः करालैर्ववर्ष।।५३।।

तदारिङ्गतासङ्गरक्षोणिरङ्गे महासूत्रधारे हरावर्जुनेन।
रथस्सारथिश्चक्रपालाश्च जघ्ने त्रयी तेन पैतामहीतुल्यकालम्।।५४।।

समूलं ततः कौरवाशालतायाः पृथिव्याः प्रतीरत्वमव्याजमेकम्।
सुधारोचिषं ब्रह्मचर्याम्बुराशेः शरैः पातयामास भीष्मं शिखण्डी।।५५।।

जयाशेव दौर्य्योधनी पाण्डवीया महाभीरिवक्षांत्रियीव प्रतिष्ठा।
धृतिः पार्थिवी सिद्धिराद्याश्रमीया प्रभाकापि दैवव्रती सम्भृताभृत्।।५६।।

ततो नवतमावृत्य सङ्ग्रामभूमी स्तमावृत्य तिष्ठत्सु[१५]राजन्यकेषु।
रवेरुत्तराशागते सव्यपक्षे ययाचे[१६] स दुर्योधनं वारि शय्ये।।५७।।

अथालोक्य गान्धारिकेयोपनीतं सकर्पूरमम्भो महार्हश्चतल्पम्।
दृशा तेन शिष्टः किरीटी व्यधत्त त्रिमार्गाभुवोमार्गणीं कीस्शय्याम्।।५८।।

मणीकुम्भधारानुकाराः तुषाराः सुगन्धीरपो दक्षिणे तस्य पार्श्वे।
समुत्थपयामास पार्जन्यभासा पृषत्केन[१७] भित्त्वा भुवं शक्रपुत्रः।।५९।।

---

१५. ययाचे
१६. पृषत्केन।
१७. नास्ति

अथोवाच देवव्रतो धार्त्तराष्ट्रं त्वया वीर दुष्टः किरीटिप्रभावः।
मदन्तो रणस्तावदास्तामयं वः स नास्ति[१८]त्रिलोके जयेदर्जुनं यः।।६०।।

अनुक्त्वैव दुर्योधनेऽथ प्रयाते गते चातुरेसानुजे धर्मराजे।
इताः कौरवा हन्त पार्थाः कृतार्था रुदन्नित्थमागत्य कर्णस्तमूचे।।६१।।

अहं सौतिरेष प्रभोरङ्घ्रिमीडे महत्ते महत्त्वं महांश्च प्रसादः।
दशाहानि दुर्योधनस्योपरोधात् प्रसन्नोऽपि यत् पाण्डुपुत्रानतापीः।।६२।।

[१९]वसो वासुदेवाभिभूतस्त्रिलोगी-जनैरप्यजेयः किरीटीति जाने।
तथाप्येष दुर्योधनं प्रीणयिष्यन् यथावद् व्यवस्येयमाज्ञापयस्व ।।६३।।

जरासन्ध माजावजैषीस्त्वमेकः पृथायां तथा जायथा सप्तसप्तेः।
यथाशक्ति दुर्योधनं प्रीणयेथाः तमित्थं परिष्वज्य तत्याज भीष्मः।।६४।।

प्रभातेऽभिषिक्तोऽथ[२०] सेनाधिपत्ये गुरुः कर्णदुर्योधनाभ्यां प्रसन्नः।
तयोरीस्थितं[२१] बन्धनं धर्मसूनोः प्रतिज्ञातवानर्जुनासन्निधाने ।।६५।।

तदाकर्ण्य दूतोदितं धर्मराजो विनिश्वस्य कृष्णाविति व्याजहार।
श्रुता किं भरद्वाजसूनोः प्रतिज्ञा तथा चावधेय यथाहं न लज्जे।।६६।।

---

१८. प्रीणयिष्यन्?
१६. अभिषिक्तः
२०. तरोरीप्सितम्?

अथाभाषताधोक्षजो[२२] मास्मभैषीः कियानेष जिष्णोर्यदि स्यादविप्रः।
असत्यप्रतिज्ञो भविष्यत्यवश्यं न के नाम पश्यन्ति वद्यं जगत्ये।।६७।।

किरीटी बभाषे ततो धर्मराजं यदावादि दामोदरेणेदमित्थम्।
स कामं हरेरन्यथा कर्त्तुमीष्टे किरातोऽपि न द्रौणभोजः कियद्वा।।६८।।

गिरा कृष्णयोः प्रीयमाणोमनस्वी पुनः सङ्गराय प्रतस्थे तपस्यः।
हृषीकेशलोकेशयोर्वर्धनाभिः पिनाकीव कुप्तः पुरीमन्थनाय।।६९।।

अथ क्षत्रियाणामपारास्त्रधारा[२३] समुल्लोलकीलालकल्लोलमालः।
मुहुर्मज्ज[२४]दुन्मज्जदुन्मत्तनृत्यं कबन्धाण्डजो युद्धसिन्धुर्बभाषे।।७०।।

सुभद्रासुतद्राविता भीमभग्ना मुहुः सात्यकेयैः शरैः पात्यमाना।
हिडिम्बीसुताडम्बरध्वानभीता कुरूणां वरूथिन्यभृदव्यवस्था।।७१।।

---

२१. वनमाली बलिध्वन्सी कंसारातिरधोक्षजः (इत्यमरः)

२२. मपारास्त्र धारा?

२३. महुर्मज्ज

★ जयाशा यत्र चास्माकं प्रतिधातोच्धितार्चिषा।
हरिचक्रेण तेनास्य कण्ठे निष्कमिवार्पितम्।।(कु.स. २.४६)

★ युधिष्ठिरोवाच -
त्वं वार्जुनो वा कृष्णो वा बिन्द्यात्प्रद्युम्न एव वा।
चक्रव्यूहं महाबाहो पंचमोऽन्यो न विद्यते।।
(म.द्रा. ३४.१५)

२४. भवत्

अथाभिद्रवन्ती पृथासूनुसेना स्वप्नन्तीरवं तीव्रमुच्चैरवन्ती।
गुरूदन्वता तन्वता सायकोर्म्मीन् पुनः प्रापिता मन्थराविप्रतीयम्।।७२।।

शरैस्सर्वतोहन्यमानेषु सैन्य-प्रधानेषु संरम्भिगा कुम्भजेन।
धृतो धर्मराडित्थमाशंसमाने रिपाविन्द्रजन्मा जवेनाजगाम।।७३।।

भरद्वाजपुत्रेण वायव्यबाणे रथाकृष्णयोः पश्यतोः क्षिप्यमाणः।
क्षणप्राप्तनक्षत्रभासोऽन्तरीक्षे विमानानि शापैरिवापेतुरुर्व्याम्।।७४।।

ततः सर्वतः पर्वतास्त्रेण रुद्धा गजः क्षिप्रहस्तो मदिष्णुः सजिष्णुः।
पदातीन्द्रवद्द्रोणबाणद्रुमाली स्तदा का कथा कौरवाशालतायाः।।७५।।

गुरुः शातकोटि ज्वलत् कोटिलक्षे-गिरिं शातयित्वाथ शातक्रतव्यम्।
तिरोधाय धारा न धाराधरास्त्रै-र्मुदा वारयत् कौरवान् नीलकण्ठान्।।७६।।

तद्भ्राणि धूमध्वजास्त्रेण दग्ध्वा किरीटी निर्वचद्भिर्नचायुधेन।
तथोदक्षिपत् कोटिलक्षान् विपक्षान् गुरुः स्वीयरक्षा विलक्षो यथाभूत्।।७७।।

भरद्वाजपुत्रेण कृत्वावहारं समाभाक्षि दुर्योधनो नक्तमित्थम्।
पुरः कृष्णयोः शक्यते धर्मराजो न देवासुरैर्द्धर्त्तुमस्मादृशाः किम्।।७८।।

अथ प्रेरिते कर्णदुर्योधनाभ्यां समाहूय संप्राप्तकेः सप्तिगर्त्तैः।
नरे तत्र नारायणैर्दूरनीते रणं प्रातरारेभिरे धार्त्तराष्ट्राः।।७९।।

द्विषन्मन्त्रणागुप्तपाण्डुप्रवीरैः क्षणक्षिप्तपक्षेतरक्षोणिपालैः।
मृगेन्द्रैरिवोद्भिन्न मातङ्गयूथैः पराचक्रमे सम्परायाटवीषु।।८०।।

गुणोट्टङ्किटाङ्कारनाराचधारा सन्निर्घात वातज्वलज्वलज्वातवेदाः।
पतत् स्यन्दनोर्वीधरान् दोलितोर्वी-समिद् बीषणास्संहृतिः सा बभाषे।।८१।।

करीन्द्रस्थितः कामरुपाधिराजो नवीनः सरवामेऽमातङ्गभाजः।
द्विषत् पर्वतान् सर्वतोऽज्रवाणैः क्षितौ पातयन् पातवेगश्चकार।।८२।।

ततो भीमधाराधरो भल्लवर्षैः तदुर्वीधरैः सर्वतो निर्ववर्ष।
अमुं सागसं भागदत्तः सनागः समागत्य सद्यो रथं निर्ममन्थ।।८३।।

अथारुह्य कुम्भान्तरं तस्य भीमो गदावारितारातिं नाराचवर्षः।
सरोषं जघानाङ्घ्रिणा मर्मणीभं सुरान् साध्वतं प्रथयन् साहसेन।।८४।।

मनागेव सम्मील्य सद्यो विनिद्धः करीन्द्रोऽभिभीमं क्रुधावमानः।
महासाहसेनापि सेहे निरोर्द्धुं न सौभद्रपांचाल-सैनेयमुख्यैः।।८५।।

तदाकर्ण्य कोलाहलं पाण्डवानां सहस्राणि संसप्तकानां स हत्वा।
पराश्चाथ नाराचकारासु रुद्ध्वा किरीटी जवेनागमत् कामरूपम्।।८६।

शरैः कंचुकं सुप्रतीकस्यनमृस्तदाखण्डलिः खण्डखण्डीचकार।
महल्लादवं बिभ्रतः तस्यराज्ञो गुणंचापमप्यङ्कुशंचव्यलावीत्।।८७।।

क्रुधा तेनमुक्तस्तो विष्णुपाशः स्फुरन्नाव्रजन् वीक्ष्य नाराथगेन।
तिरोधाय पार्थं भुजाभ्यां गृहीत्वा *निधाय स्वकण्ठे कृतोनिष्करूपः।।८८।।

पुनः प्रेरितं भूभृता पंचकृत्व-श्चकर्त्तार्द्धचन्द्रेण जिष्णुः करीन्द्रम्।
शरेणापरेणाजहाराशु दोर्प्यो-धनं भागधेयं शिरो भागदत्तम्।८९।।

हते कामरूपे कपीन्द्रध्वजेन क्रुधासर्वतः पाण्डुवीरैः परीतम्।
द्रुतं विद्रुतं कौरऽआणामनीकं सरिद् वारिवत् सेतुभङ्गाद् बभूव।।९०।।

समागत्य संपूतकैराह्वयद्भिः समीकाय भीमानुजेऽथ प्रयाते।
पती मत्स्यपांचालयोः कुम्भयोनिः कृतान्तातिथीकृत्य शत्रून् ममन्थ।।९१।।

पुरो धावतो गर्जतः क्षोणिभाजो नुदन् वारिवाहानिव द्रोणवायुः।
किरन् बाणरेणून् पथा येन यातो न तत्र प्रतीयायितुं कोऽपि सेहे।।९२।।

ततो धर्मराजो बभाषेऽभिमन्युं त्रिमर्त्तोऽपि तावत् स नीतोऽन्यतस्ते।
अयं ब्राह्मणः सर्वथा मां जिवक्षु-स्तधा ब्यूहमेतद्विचक्रं चकार।।९३।।

ऋते फाल्गुनादच्युतात् वच्चकार्णेः परो व्यूहमेतन्न जानाति भेत्तुम्।
ततः शाङ्गर्धन्वेव सत्वं मथान द्विचद्वारिधिं वाहिनीं मे ग्रसन्तम्*।।९४।।

समं सात्यकिद्रौपदद्रौपदेय-भवं[२५] त्पार्ष्णिपालो भवेदेव भीमः।
वयं फाल्गुनात्ः[२६] शाङ्गिर्णो भागिनेया-द्दते भारमन्यत्र कुत्रार्प्पयामः।।९५।।

---

२५. फाल्गुनात्

२६. गान्धारजे

तथेति प्रतिज्ञाय नत्वा गुरुभ्यः पितृगां गुरोरेकवीरः पुरोऽभूत्।
हिमानी समानीषु बर्षाणि मुंचन् स राजन्यराजीवराजीवनेषु।।९६।।

पराभूय भूयोभिराचार्य्यमस्त्रैः स भित्त्वा द्विषद्वाहिनी गाहमानः।
परीतोऽपि राधयदुर्योधनाद्यैः सहस्त्रं दशक्षत्रियाणां जघान।।९७।।

शरेणाथ कोशल्यमुन्मथ्य दृप्तं पुरः प्राप्तमित्याह दुःशासनं सः।
अहं त्वामवश्यं चिरायापरुद्धं हनिष्यामि न त्वं पलायिष्यते चेत्।।९८।।

अरे भद्रराधेय दुर्योधनाद्याः भवन्तो हि वध्येषु ताते विभक्ताः।
अमी ब्राह्मणाश्च त्रयो द्रोणमुख्या-स्ततो वो न हन्मीति जानीथ सत्यम्।।९९।।

इति व्याहरन्नेव दुःशासनेन प्रकीर्णः शरैः कर्णिभिः सर्वतोऽसौ।
क्षणेनैव तम्मोहमानीय भल्ले-स्ततो मांगणैरन्तरानर्च्च कर्णम्।।१००।।

स बाधामुपाधाय राधासुतेन जिह्वानिवेषुन् मुहुः कीर्य्यमानान्।
शरैः पन्नगाराति-चंचूकराले-मुदाबर्धमानोऽनुनादीर्धमार्गे।।१०१।।

ध्वजं पातयित्वा धनुः शातयित्वा शरैस्तेन कर्ण पराभूयमानम्।
परित्रातुकामाः पुरोधावमानाः तदीयानुजाः पंच पंचत्वमापुः।।१०२।।

अथाद्रीदद्रवत् गौतमद्रोणिमद्रांस्तथामृमुहत् द्रोणमाविध्य भल्लैः।
स दुर्योधनं विद्रूतं धर्त्तुकामः शिरो युद्धयुतो लक्ष्मण[२७]स्याजहार।।१०३।।

---

२७. दुर्योधनस्य पुत्रः

विवर्णेऽथ कर्णे सशल्ये च शल्ये गते गौतमे विद्रूते द्रोणपुत्रे।
स गान्धा-[२७]जे भज्यमाने च भोजे जघानारि मातङ्गयूतं नृसिंहः।।१०४।।

अहं पीड्यमानः शरेणाभिमन्यो-र्ह्रिया केवलं द्रोणतिष्ठामि युद्धे।
अहो दुष्प्रसह्यं शिरोरस्य तेजः पुरः कौरवेन्द्रस्य कर्णे अभाषि।।१०५।।

गुरुः प्रत्युवाचेति न स्यन्दनस्थः सुनासीरनासीरकैरप्यमर्त्यैः।
असौ शक्यते जेतुमिष्वासपाणिः नयामोऽयं तेन वैयथ्य[२८]मेनम्।।१०६।।
तथेति प्रवीरैरथो कर्णमुख्यैः समस्तैः समस्तादमुष्मिन् परीते।
उपागच्छतः पाण्डवादिन्दुमौले-र्वरैणैक कोऽवारयत् सिन्धुराजः।।१०७।।

चकर्त्ता(?) च वैकर्त्तनस्तस्य चापं हयान् भोजराजः कृपःसारथिंच।
अपि द्रोण दुर्योधनद्रोणिमद्राः शिशुं सर्वतः सर्वशस्त्रैरवर्षन्।।१०८।।

ततश्चर्म षङ्गं[३०] दधानोऽभिमन्युः गतिं कौशिकीं बिभ्रदाकाशगामी।
पतेदेष कुत्रेति सर्वे सचिन्ताः परं तापमीयुर्विधेयानभिज्ञाः।।१०९।।

गुरुस्तस्य चिक्षेप खड्गं तदानीं शैरैर्मर्म्मभिर्मायिभिश्चर्म कर्णः।
गदापाणिरागत्य सद्रोणसूनो रथं सारथिंचाशुकारी ममन्थ।।११०।।

---

२८. वैरथ्य
२९. खड्गम्
३०. दुर्निमित्तम्?
सर्गान्ते ''श्री भत्रदेवस्य लिपिः'' इति लिखितमस्ति।

ततो गाहमानो बलं कौरवाणां सहस्राणि हत्वा गदापाणिरेकः।
शरैराहतो व्रीडयन् विश्ववीरं शरीरं विहायेन्दुबिम्बं विवेश।।१११।।

बिया कृष्णगाण्डीविनोः कौरवेषु प्रयातेषु दीनो रुदन् मुक्तकण्ठम्।
पथि व्यासवाग्भिः श्लथीभूतशोकः सुहृद्भिः सबं धर्मराजो निवृत्तः।।११२।।

समुन्मध्य संसप्तकानेकवीरः पथि प्रेक्ष्य चिन्ताकुलो-दुर्निमितम्।
समागत्य तत्राभिमन्योः प्रवृत्तिं निशम्यैव गाण्डीवमुञ्चन् पपात।।११३।।

आश्वासितो वासुदेवेन बुद्धः
किरीटी रुदन् मुक्तकण्ठं जगाद।
क्व रामप्रियः कुत्र कामद्वितीयः
क्व शिक्षानिधिः शार्ङ्गिणो भक्तिदक्षः।।११४।।

हा वत्स दुर्ल्ललित जगदेकवीर
हा हा तृणीकृतमहारथचक्रवाल।
हा मामकीनभवभाविकधर्मसूनोः
स त्वं मुकुन्दमुपसृत्य न वन्दसे किम्।।११५।।

हे वत्स द्रुतमेहि देहि हरये प्रत्युत्तरं पृच्छते
चक्रव्यूहमहो कथं त्वभिनस्तांस्तानजैषीः कथम्।
राज्ञा यत्तवमातुलस्य च पितुर्भारोऽयमारोपितो
व्यूहः साहसिकेत्य सौभुजभृतां कीर्त्तिःहता लज्जया।।११६।।

दुःक्षत्रेण जयद्रथेन तपसो गर्वेण निर्वारिते

धृष्टद्युम्नहिडिम्बमर्दनमुखे निशंङ्कमेकाचरन्।

कर्ण-द्रोण-कृपप्रधानरथिभिःसम्वेष्टितस्सर्वतो

ध्यात्वा हन्त शिशुः किरीटिहतकं-श्वासानवश्यंजहौ।।११७।।

व्याजादेव स राजाकुरुपतिरुचिता नीचतासूतसूनो-

र्मद्रेशो भद्र एव क्षणमपि शकुनिर्जिह्मतां नो जहाति।

धिक्भोजं धिक् कृपं धिग्भवतु गुरुसुतं धिग्धिगाचार्यमेकः

शाक्तीकैः शाक्तिको यत् बहुभिरपिहतो हन्त न न्याययुद्धे।।११८।।

गायन्तीषु शिवासु मङ्गलमसृङ्मत्तैः पिशाचैः पुरः

प्रारब्धे नधने सुतेन कृतिना विक्रम्यपाणौ कृताम्।

श्वः सिन्धोरुधिरैः स्नुषामिव समिद्भूमीत्र चेद् भूषये

यत् सत्यं हि तदा वपूंषि जुहूयामह्नाय[31] बह्नावहम्।।११९।।

इति श्री लक्ष्मीनारायण राय राजपण्डित श्री लक्ष्मीदत्त विरचिते पाण्डव चरिते महाकाव्यऽभिमन्युवधो नामोनविशतितमस्सर्गः।।

---

३१. जुहूयाम्यहनाय इति भवितव्यम्।

पाण्डवविजयो नाम विंशतितमः सर्गः

सुप्ते पुनः पाशुपतं स लब्ध्वा जयद्रथं निर्जितमेव जानन्।
उत्साहयन् संसदि धर्मराज-मुदाजहारेन्द्रसुतःप्रभाते।।१।।

प्रयाहि राजन् विजहीहि शङ्कां जानीहि लक्ष्मीः करगामिनी ते।
एकेन सख्या सह माधवेन मथ्नामि सिन्धुं शरमन्दरोधैः।।२।।

यद्येनमद्यामरचक्रवर्ती पाति[1] स्वयं संयति वज्रपाणिः।
तथापि कीनाश-[2]पुरीम-शून्य - महं करिष्यामि जयद्रथेन।।३।।

तथेति राज्ञानुमतः तरस्वी बीभत्सुरारुह्य रथं बभाषे।
सम्भूय विश्वम्भरसात्यकिभ्यां शशीव मेरुं गुरुभार्गवाभ्याम्।।४।।

गत्वा समीपं समराङ्गणस्य किरीटमाली युयुधानमूचे।
तथा निमित्तानि समुद्भवन्ति वधोयथा सिन्धुपतेरदूरे।।५।।

जयद्रथस्तितष्ठति यत्र गुप्तः तत्रैव गच्छमि सहाच्युतेन।
त्वया पुनः सावहितेन राजा रक्ष्यो यता द्रोणवंश न यायात्।।६।।

तथेति यातेऽथ शिनिप्रवीरे युधिष्ठिरस्यान्तिकमिन्द्रसुनुः।
दुर्म्मर्षणं कुंजरयूथनाथं जिगाय दुश्शानमप्यकाण्डे।।७।।

---

१. पाति
२. कृतान्ते पुंसि कीनाशः (इत्यमरः)

व्यूहस्य चक्रेण कटस्य धृत्वा पार्थो गुरुं प्रांजलिरित्युवाच।
आचार्य मां भावय भावुकेन भवत् प्रसादाद्विजयेय सिन्धुम्।।८।।

जिष्णो निवर्तस्व न शक्ष्यसि त्वं पुरो मम व्यूहमिदं प्रवेष्टुम्।
इतीरयन्नेव तमाशुबाणै-रवाकिरत् कौरव-सैन्यपालः।।६।।

निवार्य स द्रोणशरान् शरौघेः विशेषयिष्यन् गुरुतोऽपि शिक्षाम्।
शतैः सहस्त्रैरयुतैः शराणा-मशातयत् तावद् एव शत्रून्।।१०।।

प्रदक्षिणीकृत्यगुरुं प्रयाते ततः किरीटिन्यभिसिन्धुराजम्।
भिया विपर्यस्तबलं कुरूणां लुन्नं गजेनेव कुलं मृगाणाम्।।११।।

पार्थस्तथाप्यायत एव पश्चाद् गुरोः पुरो वर्त्म रुरोध बाणैः।
भिन्दन् मुहुः स्यन्दनवारणेन्द्रान् ममार्ज च स्वस्य रथस्य मार्गम्।।१२।।

बैकुम्ठदोर्दण्ड विलोड्यमानो गाण्डीवमेधोत्थितबाणवर्षैः।
ज्वालाजटालः पटलेन भासां निवातमर्म्मान्तिकघर्मभानुः।।१३।।

महारथानां प्रवरस्तरस्वी यो यः पुरस्तत्क्षणमास जिष्णोः।
तं तं स गाण्डीवमहोरगोत्थः पुप्लोष भल्लोध हलाहलाग्निः।।१४।।

क्रोशस्थितेन प्रहिताः परेषु पार्थेन यावद् विशिखा न पेतुः।
मुक्तो मुकुन्देन स तावदेभ्यः क्रोशान्तरे दृश्यत नन्दिघोषः।।१५।।

द्रोणेन दिव्ये कवचे निबद्धे सक्रोधनेनाथ सुयोधनेन।
गाण्डीवधन्वा जुहवे मृगेन्द्रो मदाविलेनैव मतङ्गजेन।।१६।।

सहेलमेकैकमनेकसंख्यै-स्तद् वाणवर्षं विशिखैर्निवार्य।
आकर्णमाकृष्यधनुः किरीटी भल्लानि चिक्षेप सुयोधनाय।।१७।।

राजानमाजाववसाद भाज-मालोक्यरोधेऽय कुपप्रधानाः।
नानाविधैस्तत्क्षणमस्त्रशस्त्रैः सर्वे समन्तादकिरन् महर्षी।।१८।।

गाण्डीविना मण्डलकार्मुकेण सर्वानगर्वानिषुभिर्विधाय।
महारथान् वैरिचमूरमन्धि निदाघशुष्का शिरिवनाटवीव।।१९।।

कंम्बोजराजस्य कलिङ्गजानां बलङ्गजानां बलवैरिसूनुः।
चकर्त्त भल्लैः कुलिशैर्विडोजा शिलोच्चयानामिव चक्रवालम्।।२०।।

इत्थं विनिर्गम्य चमूसमूहा-दीव्हामृगौधादिव केसरीन्द्रः।
आवल्यमालोक्य तुरङ्गमाणां जंगाद गाण्डीवधरो मुकुन्दम्।।२१।।

संसार-सन्तारण-तीर्ण एव प्रतीप-सेना-समराय-सिन्धुः।
आरादसौ सिन्धुसुतो वराकः साकल्यमेव त्वदनुग्रहेण।।२२।।

केऽमी गुरुद्रोणिकृपार्कसूनुः पुरस्सरा कृष्णधनुर्धरा मे।
एतामहं वारयिता पदातिस्त्वया विशल्यास्तुरगाः क्रियन्ताम्।।२३।।

तथेति सङ्क्रन्दननन्दनस्य वाचारधाच्चक्रधरेऽवतीर्णे।
गाण्डीव-धन्वा कुलिश-प्रकाण्डा-स्तं वेष्टयामास भुवः प्रदेशम्।।२४।।

क्रीडन् मराली कमालभिरामां सुधा-समीचीन-नवीन वीचीम्।
मध्ये रिपूणां सरसीमसंस्नां स वारुणास्त्रेण पुरश्चकार।।२५।।

हरे हयान् पातयति प्रसन्ने तत्राम्बुशत्रूनभितः समेतान्।
धनंजयः संयति संजहार कल्पान्त-भास्वानिव कालमेधान्।।२६।।

तत् कर्म गाण्डीव[३] भृतोऽवलोक्य न केवलं विस्मयमाप विश्वम्।
विश्वम्भरोऽपि स्फुटगर्विताभ्यां प्रतोदमालोकत लोचनाभ्याम्।।२७।।

हरेर्विशल्यैः[४] पुनरेव मुक्तं रथं समारुह्य पृथाकुमारः।
संल्लापयन् वैरिमुखाम्बुजानि स कोऽप्यकस्मादुदयाय चन्द्रः।।२८।।

यामे तृतीये त्वरितस्तृतीयः पार्थो मुदा पूरयतिस्म शङ्खम्।
तन्नादमाकर्ण्य विशङ्ककमानो जगाद शैनेयमजातशत्रुः।।२९।।

रवेरवस्थाचरमापुरस्ता-दस्ताचलः प्राप तदानुरागम्।
जयद्रथः सन्निहितो यथा स्यात् तथा ध्वनिः सम्प्रति देवदत्तः।।३०।।

तद् गच्छसिद्ध्यै[५] भवकर्णधारो विरोधिसेनार्णवमध्यवृत्तेः।
मुकुन्दनाडवतस्त्वमैन्द्रेः? सद्वीपमाविन्द्तु सिन्धुराजम्।।३१।।

तथेति राजानमथ प्रणम्य शिनिप्रवीरो विनिमय्य चापम्।
प्रवेष्टुकामो द्विषतामनीकं द्रोणेन सद्यो रुरुधे कलम्बैः।।३२।।

छित्वा शरांस्तानविशत् तरस्वी प्रदक्षिणीकृत्य गुरोर्गुरुं सः।
चकार सेनां कृतवर्मणोऽपि विलोकमानस्य च कान्दिशीकम्[६]।।३३।।

वृष्णिप्रवीरस्य समीरणस्य ये ये पुरो भूपतयो बभूवुः।
तांस्तानसौ मार्गणवारिदेन जग्रास नक्षत्रगणानकाण्डे।।३४।।

---

३. गाण्डीव
४. हरे
५. लक्ष्य इति प्रतिभाति।
६. कांदिशीको भयद्रुतः (इत्यमरः)

संहृत्य कौरव्यचमू तमांसि जाग्रत स भूरिश्रवसा तमेन।
प्रहिष्यमाणश्चरमेण पुंसा शरेण चक्रेण जवादमोचि।।३५।।

निकृत्तबाहोरथ सौमदत्तेर्मत्तेभगामी स कृपाणपाणिः।
दूप्तः परिक्रम्य शिरश्चकर्त्त प्रपश्यतां कौरवसैनिकानाम्।।३६।।

पुनः पुनः सात्यकिसम्भवेन क्षिप्तः सकोपेन चतुर्भुजेन।
गाण्डीवधन्वा गहनस्समीरो विपक्षवृक्षान् बहुधादुदधा७र।।३७।।

अस्ताचला८चुम्बिनि भानुबिम्बे सवेपमानौ मनसा तपस्यः।
सस्वीकृतद्रोणसमीकभारो धनंजयाय प्रजिघाय भीमम्।।३८।।

सावारयन्तं विशिखैरसंख्यै-र्द्रोण जवेनाथ रथावतीर्णः।
आदाय दोर्भ्यां रथशैलशृङ्गा-दुदक्षिपत् वृक्षमिव द्विपेन्द्रः।।३९।।

भीमस्ततो भोजभुजङ्गराजं जित्वा गरुत्मानिव तीव्रवेगः।
पुनः पुनः पत्रिजवेनमूलं द्रुमस्य कर्णस्य रथं बभञ्ज।।४०।।

वैरथ्यमानीय कदर्थ्यमानो वृकोदरो भास्करनन्दनेन।
विदूरमुक्षिप्य कृपं कृपालु-र्मल्लेन मूर्च्छामुपनीय कर्णम्।।४१।।

चकार सङ्क्रन्दननन्दनोऽपि नाराचधाराचयमन्धकारम्।
विद्राव्य च द्रोणसुतं किरीटी जयद्रथेनाथ समागतोऽभूत्।।४२।।

तं सिन्धुराजोऽन्धकवत् त्रिनेत्रं क्षगं महाभैरव-युद्धकारी।
प्रबोधयामास शराम्बुवर्षे-धाराधरो गह्वरसुप्तसिंहम्।।४३।।

---

७. बहुधोद्दधार?

८. अस्ताचला

अथार्द्धचन्द्रेण धनंजयेन मूर्द्धामुत्कृत्य जयद्रथस्य।
न्यस्तं करे तस्य पिता विहाय भूमौ शुचा भिन्नशिरः पपात।।४४।।

कृष्णस्य शङ्खस्तवबोधितेन तदोपनीतं किलदारुकेण।
छित्वा रथं सात्यकिमारुतिभ्यां समन्निवृत्तोऽभवदिन्द्रसुनुः।।४५।।

रात्रिञ्चरौधैः सह रात्रियुद्धे मायाभिरायासितसूतसूनुः।
घटोत्कचः कौरवराजसेनां यतस्ततः शातयतिस्म बाणैः।।४६।।

वैकर्त्तनः शक्तिमथेन्द्र-दत्तां-प्रयुज्य शम्पामिव विस्फुरन्तीम्।
कथंचिदभ्यर्थनया कुरूणां वीरं हिडिम्बी-तनयं जघान।।४७।।

किरीटमाली कुपितस्तदानीं शर-प्रतानानि तथा ततान।
द्रोणः क्व वा कुत्र कृपः क्व कर्णो भोजोऽथवा कुत्र यथा न जिज्ञे ।।४८।।

इत्थं पराभूय तमस्यराती-निद्रातुराणभयं स दत्त्वा।
जगाद सर्वे शृणुत प्रवीरा युद्धं न यावत् तिमिरं कुरुध्वम्।।४९।।

तथेति हर्षेण भटास्तुवन्तः किरीटिनं सर्वत एव सर्वे।
रथे गजे वाजिनि भूतले वा यथा स्थिता एव तदा निदद्रुः।।५०।।

संहार कर्त्रा तमसामकाण्डे प्रसादिते चन्द्रमसा दिगन्ते।
दोः शालिनामा-वन-कैरवाणि सम्भृत्य भूयोऽपि विकाशमीयुः।।५१।।

ततः प्रवृत्ते समरेऽमरेश-पुत्रेण भग्नामवलोक्य सेनाम्।
दुर्योधनेनाभिहतः कदूक्ति-बाणैर्भरद्वाजसुतश्चुकोप।।५२।।

पांचालसेना-कदली-वनानि द्रोणद्विपेन्द्रः प्रमदो मृदित्वा।
युद्धात् निवृत्तो भव पुत्रकेति वाङ्कुशेनाङ्गिरसो न्यषेधि।।५३।।

अथ प्रभाते वचनैः पितृणां मन्दीकृतं वीक्ष्य गुरुं मुकुन्दः।
त्वरान्वितो धर्मतनूजमूचे द्रोणे वद द्रोणि-वधं छलेन।।५४।।

कृष्णाज्ञया यत् क्रियते न तत्र पापं विभाव्येति जगाद राजा।
जिष्णोः शरैः संयति सोऽयमश्वत्थामा हतः किन्तु नरो न हस्ती।।५५।।

तदा तदाकर्ण्य सुतस्य शोकाल्-लोकान्तरं गन्तुमना मनस्वी।
संन्यस्तशस्त्रः समुपेत्य धृष्ट-दुम्नेन सङ्गेन जावादनावि।।५६।।

भग्ने भरद्वाजतनूजसेना-वाधावतां पाण्डवसैन्यवाराम्।
निमज्जतां स्त्रोतसि कौरवाणा-मौलूक्यमालम्बत कर्ण एकः।।५७।।

कोपादथ द्रोणसुतेन मुक्तो[९] नरायणास्त्रे[१०] सति दुर्निवारे।
न्यस्तायुधे कृष्णगिरा समस्त-सज्जै रथे मारुतिरेव तस्थौ।।५८।।

दग्धे रथे चण्डगदैकपाणि-र्धावनिन्नभिद्रोणिमदीनसत्त्वः।
आपद्विषत्सायक दह्यमानो युद्धोद्धरः संरुरुदे मधुघ्ना[११]।।५९।।

द्रौणिस्तदप्यस्त्रमवेक्ष्यमोघमवर्तत प्रीडन्तोत्तमाङ्गः।
कौरव्यसेनासु च विद्रुतासु पाण्डुप्रवीराः शिविराणि जग्मुः।।६०।।

सेनापतेः कृत्य ततः प्रभाते दुर्योधनोद्रौणिमतेन कर्णम्।
द्विषज्जिगीषा द्विगुणप्रसादः प्रवर्तयामास पुनः समीकम्।।६१।।

संहारमिच्छन्निव कालरुद्रो बलं बहुद्रोणसुतोऽवहत्य।
युद्ध्यन् पराभूय धनंजयेन दुरादुदक्षिप्यत सायकौधेः।।६२।।

९. मुक्ते
१०. नारायणास्त्रे
११. मधुघ्ना

कृपं कृपालुर्विरतं स हित्वा हत्वा सहस्राणि महारथानाम्।
गान्धारदुर्योधनभोजराजान् पद्भ्यां जवेन द्रवतो जहास।।६३।।

कथं कथंचित् प्रतिपाल्यसेनां-वैकर्त्तनो नर्त्तितकालपृष्ठः।
दुर्योधनो हन्तहतोऽयमित्थं वदन् न यावत् सधनं जयाय ।।६४।।

निवातवर्म्मद्विषतान् न्यषेधीदहिस्तुरासाहमिव क्षपां सः।
दिव्यायुधे तेन ततः प्रयुक्ते कर्णो विवर्णः शिविरं प्रतस्थे।।६५।।

विलोक्य शोचन्तमथ प्रदोषे वृषः कुरूणामृषभम्बभाषे।
त्वय्यागते दृग्विषये ममाभूद्यर्जुनो जीवति तेन नूनम्।।६६।।

श्वः प्रातराजावनिहत्य पार्थं नाहं निकर्तेय निबोध सत्यम्।
परन्तु यद्येष मुकुन्दतुल्यः शल्य स्वयं वाहयते हयान् मे।।६७।।

न दूरवेगे न दृरुप्रहारे समः समे वा न लघुप्रयोगे।
मत्तः पुनः केवलमच्युतेन विशिष्यते सारथिना किरीटी।।६८।।

दत्तं पिनाकप्रतिमं धनुर्मे रामेण पार्थाय च पावकेन।
आर्त्ताय निस्सारथिरेष चेत् स्यात् तदा ममायं न लभेत कक्षाम्।।६९।।

तथेति साकाङ्क्षमथेत्थितेन सारथ्यहेतोः कुरुनायकेन।
अभ्यर्थमानो बहुमद्राजः पार्थं स्तुवन् भानुभवं निनिन्द।।७०।।

वीरोऽसि कर्णादतएव सूतं पिनाकपाणेरिव पद्मयोनिम्।
एतस्य वांछामि भवन्तमाजौ राजस्तदुत्तिष्ठ[12] कुरु प्रसादम्।।७१।।

---

१२. राजंस्

दुर्योधनस्येति गिरा प्रसन्ने गृहीतरश्मौ सति मद्रराजे।
प्रारुह्य कर्णो रथमर्जुनेन पर्युत्सुको योद्धुमथ प्रतस्थे।।७२।।

ततः प्रवृत्तेषु रणेषु हत्वा संसप्तकान् यावदुपेति जिष्णुः।
दुर्योधनस्तावदियेष हन्तुं तपस्तनुजं स्वयमेव बाणैः।।७३।।

अधीरतां प्राथमिकीमवाप्तौ युधिष्ठिरः क्रोधमतां दधानः।
दुर्योधनं दुःप्रसहैः कलम्बैः वैरथ्यमानीय जहौ दयालुः ।।७४।।

अवेक्षणाम त्वरितेन सख्युः कर्णेन दुरादिधुभिः करालैः।
धर्मात्मजः पीडितसर्वगात्रो मन्दाक्षमन्दः शिविरं जगाम।।७५।।

युधिष्ठिरातिक्रममर्कसूनो-रमर्षयन् मारुतिरक्रमेण।
न केवलं तं विरथीचकार भल्लेन निश्चेतनमप्यकार्षीत्।।७६।।

पतङ्गजन्मा सपदि प्रबुद्धः क्रुद्धः समुत्सृज्य स मार्गवारस्त्रम्।
आचक्रमे संहतिमक्रमेण कृतान्तवत् सोमकसृंजयानाम्।।७७।।

कृष्णौ तदा सर्वत एव सर्वान् संसप्तकानेत्य रताभिरूढान्।
आवर्जितानां द्युतिभिर्भुजानां कपीनिवोदक्षिपतां कपीन्द्रौ।।७८।।

बद्ध्वार्जुनस्तानथ नागपाशैर्बैहीयसः प्रत्यवकृत्य बाणैः।
स्वां वाहिनीं कर्ण-कदर्थ्यमाना-मालोक्य चाभाषत कैटभारिम्।।७९।।

पश्यामि न श्रीधर धर्मराजं दुर्योधनं प्रीणयते च कर्णः।
करोति भीमोऽपि न सिंहनादान् किमेतदालोचय मा प्रमादीः।।८०।।

तथेति कंसारि रथोपनीय रथे बभाषे पवमानपुत्रम्।
राजा क्व जानीहि वृकोदर त्वं रिपूनसौ वारयिता किरीटी।।८१।।

याते मयि स्यान्नियतं कुरूणां पलायितो भीम इति प्रवादः।
त्वमेव तद्गच्छ सहार्जुनेन सर्वानरीन् वारयिताहमेकः ।।८२।।

गिरेति भीमस्य तथेति पुंसोः पुराणयोः प्रस्थितयोरथैनम्।
वेगैर्मरुद्वज्रधरः प्रहारैः भियेव भेजे कुपिते कृतान्तः।।८३।

तपस्तनूजं शिविरेशयानं विक्षिप्य गाण्डीवमथेन्द्रसूनुः।
धिक्कृत्य सद्यः पुनरात्मसिद्ध्यै व्रतं दधौ कर्णवधप्रतिज्ञाम्।।८४।।

जिष्णौ ततः प्रीणयितुं नरेन्द्रमभि प्रयाते जविना रथेन।
माद्रेयमालोक्य बहुप्रकारं तदा दधाते कमपि प्रसादम्।।८५।।

उद्धूय हार्दिक्य कृपप्रधानान् संहृत्य लक्षाणि च शत्रुसैन्यान्।
क्रोधेन राधेयमभिप्रयाते गाण्डीवपाणौ जगती चकम्पे।।८६।।

भीमोऽथ लब्धप्रसरस्तरस्वी विलोक्य दुश्शासनमृद्धकोपः।
स्मृतप्रियाधर्षणजातहर्षो रथादवप्लुत्य जवादधावत्।।८७।।

वर्षन्तमुच्चावचबाणवर्षं दुःशासनं केशचये गृहीत्वा।
सन्ताड्य पद्भ्यां भुवि पातयित्वा वक्षो विदार्य क्षतजं पपौ सः।।८८।।

वैकर्णदुर्योधनभोजराज-शारद्वतद्रोणसुताः पुरोगाः।
दुश्शासनोरस्थलशोणितानि पिबामि गौर्गौरिति मन्त्रयध्वम्।।८९।।

इतीरयित्वा रुधिराणि पीत्वा विलोकनोत्कम्पित्वीरवर्णः।
करोमि किम्बा तव मृत्युना य[13] त्रातोऽसि दुश्शासनमित्यमुंचत्।।९०।।

---

१३. यत्

केचिन् मिमीलुः कतिचिन्निपेतुः परेन्द्रवन् साध्वसमापुरन्ये।
दृष्ट्वैव दु;शासनशोणिताक्तं भ्राम्यन्तमुद्राममदं नरेन्द्राः।।६१।।

महेन्द्रपक्षे जयमर्जुनस्य सौरे जयं वांछति सूतसूनोः।
अथान्धकत्र्यम्बकयोरिवासी-दसहस्यमेकाम्बिकयोः समीकम्।।६२।।

तयोरनूनानतिरिक्तशिक्षा[१४] सिद्धान्तदीक्षागुरुगर्वभाजोः।
बाणग्रहारोपणमोक्षगेषु संलक्षयामास करौ न कश्चित्।।६३।।

गन्धर्वदेवासुरकिन्नरीयं यदा यदस्त्रं ससृजे तयोर्यः।
तदा तदन्यो हत इत्यजस्त्रं सखेदहर्षं जगदेव जातम्।।६४।।

अथासुहल्लूनशरासनज्य-स्तेनाशुगेर्मर्मणि ताड्यमानः।
अङ्गेशितुः पश्यत एव जिष्णुः चकर्त्त कण्ठे वृषसेनमिष्ट्या।।६५।।

कर्णेन मुक्तो हि मुखपतत्री पथ्यश्वसेनेन कृतप्रवेशः।
रथे पदाभ्यां नमितेऽच्युतेन किरीटमुत्पाट्य जगाम जिष्णोः।।६६।।

स विस्मयं तिष्ठति वासुदेवे किरीटमिष्ट्या परिवर्त्यपार्थः।
अशङ्कितोत्कर्त्तनमस्य वर्गे यथार्थमेवास्य शिरोव्यधासीत्।।६७।।

सन्धानहेतोः पुनरर्थयन् तं भुजङ्गमं भानुसूतो बभाषे।
द्विःसन्दधे जातु न बाणभाजौ जयोऽस्तु वा - - - - - - ?।।६८।।

कोपादथ प्रस्थितमश्वसेनं जाज्वल्यमानं पुरतः पतन्तम्।
भल्लैर्मुकुन्देन कृतप्ररोधो गाण्डीवधन्वा लवशो लुलाव।।६९।।

---

१४. शिक्षा

कर्णेन कर्णावधि कर्षितज्यं प्रयुज्यमानं बहुबाणवर्षम्।
आलोक्य कालोऽयमिति प्रसह्य जग्रास तस्याथ रथं धरित्री।।१००।।

राधासुतः स्यन्दनतोऽवतीर्य किरीटिनं दृप्तमिदं बभाषे।
त्वामेव-वर्ण्ये भुननत्रयेऽस्मिन् धनुर्द्धराधीश्वरमिन्द्रसूनो।।१०१।।

★तत् क्षत्रिय श्रोत्रिययावदुर्वी-गृहीतमेतं रथमुद्धरामि।
तावत् प्रतीक्षस्व ततः सुखेन सङ्ग्रामिकीर्मज्य वीर कीर्तिम्।।१०२।।

तथेति बीभत्सु कृताभ्यनुज्ञः कर्णोभुजाभ्यां रथमुज्जहार।
आरुह्य तत्राप्रतिमप्रतापो नाराचवृष्टिं पुनरेष चक्रे।।१०३।।

विहस्य कोपेन कपीन्द्रकेतुः कर्णाय कर्णावधिकर्षितज्यम्।
उदीरयद्दिव्यमुदारमस्त्रं त्रिलोचनः शूलमिवान्धकाय।।१०४।।

वीरो रसः शान्तिमवापमानो नतिं जगाम क्षितिरुन्ननाम।
निकृत्तमूर्धा निपपात कर्णो भेजे विवर्गो रविरम्बुराशिम्।।१०५।।

दत्ताभयो वैरिवरूथिनीभ्यो निवृत्य [१५]भीमानुमतेन कृष्णो।
राज नमागत्य शयानमात्तं मार्तण्डपुण्त्रो हत इत्युपास्ताम्।।१०६।।

अभ्युत्थितः प्रागिव तत् कथायाः स्नातोऽमृतेनेव तपस्तनुजः।
आघ्राय गण्डे परिरम्भ कण्ठे स्तुतिं तयोराशिषमेव[१६] तेने।।१०७।।

★ यावच्चक्रमिदं भूमेरुद्धरामि धनंजय।
न मां रथस्थो भूमिष्ठमसज्जं हन्तुमर्हसि।। म. कर्ण प. ६६.६४

१५. राशिष

१६. न?

हते च कर्णे कुरवोभयार्त्ताः प्रस्थे हिमाद्रेः क्षणदां विनीय।
चमूपतिं सूरमवाप्य शल्यं प्रातर्मुदा सङ्गरमागमंस्ते।।१०८।।

महारथानामथ शात्रवाणां प्रतप्यमानोऽपि शरप्रतानेः।
भद्रेश्वरो मण्डलितैकधन्वा युद्धेन विस्मापयतिस्म विश्वम्।।१०९।।

एकत्र केतूनपरत्रमौर्वी रन्यत्र वाहानितरत्र सूतान्।
समन्ततः सोमकसृंजयाना-मार्त्ताय निःपत्रिभिरुच्चकर्त्त।।११०।।

मधुद्विषा बध्यविभागकाले शल्यो ममांशे हत इत्युदीर्य।
संहर्त्तुकामाऽथ तमभ्यधाव-द्वलं विडौजा इव धर्मराजः।।१११।।

अस्त्रप्रतीघातविदृनोत्थ ज्वालाकरालाखिलदिग्विभागम्।
मद्रेशधर्मात्मजयोः क्षणं तत् बभूव युद्धं नमुचीन्द्रसौरम्।।११२।।

मद्राधियं मर्मणिभल्लविद्दं दृष्ट्वा समालम्बित-केतुयष्टिम्।
धर्मात्मजे धावति हन्तुकामे सद्यः कृपाद्याः पुरतो बभूवुः।।११३।।

विद्राव्य संद्रोणसुतं पृषत्कैः भोजं पराभृयु कृपं विचित्य।
गान्धारमुद्धूय च धार्त्तराष्ट्रं वैरयमानीय जहास राजा।।११४।।

शल्यो गदावारितभीमधृष्ट द्युमन्प्रधानाखिलयोधयूथः।
युधिष्ठिरेणाथ पपात भिन्नः क्रोंचोगिरिः शक्तिभृतेव शक्त्या।।११५।।

हत्वा सहस्त्राणि समद्रकाणां प्रधावतां साहसलालसानाम्।
विषादयन् कौरवमानसानानि ननाद राजा घनसिंहनादम्।।१०६।।

युध्यन् सहस्त्रैः सहितोऽश्ववारैः शरौधवर्षं शकुनिः समन्तात्।
कुन्तेन सद्यो नकुलानुजेन शूलेन शुम्भोऽत्रिभुवेव जघ्ने।।११७।।

पाण्डुप्रवीराः परिवेष्टयन्तौ दुर्योधनस्याथ बलानि जघ्नुः।
प्रसह्य लब्धप्रसरा धनान्ते मातङ्गयूथानि यथा मृगेन्द्राः।।११८।।

भर्त्ता स एकादश वाहिनीना-मेकामुपादाय गदां पदातिः।
युद्ध्यन् समन्तादरिभिः परीतः शून्या दिशो वीक्ष्य विवेश चिन्ताम्।।११९।।

दुर्योधनः पाण्डवसैन्यचक्रान् मतङ्गजानामिव यूथनाथः।
दावाग्निमध्यादपयाय तूर्णं द्वैपायनं नाम सरो विवेश।।१२०।।

शिखण्डिना वयासगिरा स राजा युक्तेन गावग्लनिना समेतः।
निरुद्धवाष्पोऽथ निजामवस्तां माता पितृभ्यामिति सन्दिदेश।।१२१।।

इष्टानि पूर्तानि कृतानि सम्यक् पदंचमूद्धिद्विषतां निधायि।
कदापि न क्षात्रपयादतीतं करोमि किम्वा बलवद्धिदैवम्।।१२२।।

अन्याययुद्धेन न मान्निहन्युः पाण्डोः सुता इत्यपयानमेतत्।
स्वीकारिते धर्मसुतेन सत्यं यद्वा करिष्ये[17] तदनन्यशक्यम्।।१२३।।

यस्याः कृते हन्त वसुन्धरायाः कर्णादिनार्यो विधवा बभूवुः।
तां दुष्टदारानिव किम्विहाय शुद्धो न युद्धज्वलने भवेयम्।।१२४।।

शोको ममार्थे न कदापि कार्यः स्वर्गं भजे गुप्तकुलव्रतोऽहम्।
दुःखाय मे किन्तु यदन्धयोः स्युः कर्णव्यथा भीमकटूक्तयो वाम्।।१२५।।

भर्त्ताहमेकादश वाहिनीनां हर्त्ता च कर्त्ता च महीपतीनाम्।
गज्जामि हन्तैकतरो विमध्ये युवां हताशः किमु सन्दिशामि।।१२६।।

---

१७. निवेदितेऽन्ते?

आक्रन्द्य गाव ग्लनिरार्त्तनादं राजानमानम्य ततः प्रयातः।
दुर्योधनो मन्दमुदासुनेत्रः प्रविश्य तस्तम्भ स माययाम्भः।।१२७।।

व्याधैस्तदागत्य निवेदितेन्ते
निशम्य कौन्तेय भटा नदन्तः।
समेत्य दुर्योधनमाह्वयन्तो
जवेन तत् तोयमवेष्टयन्त।।१२८।।

सङ्ग्रामाय यदाजुहाव मुरजिद्वाचा तपोनन्दनो
व्याख्यानैरथ राहुजोपनिषदं सम्भूय दुर्योधनम्।
तज्जातं कुरुशासितुः सुरपुरप्रास्थैपुरोमङ्गलं
प्रायश्चित्तमनुत्तमं खलुसतां यत् किंचिदाभाषणम्।।१२९।।

इति श्री लक्ष्मीनारायण राजपण्डित कवि डिण्डिमलक्ष्मीदत्तविरचिते
पाण्डवचरित्रे महाकाव्ये पाण्डवविजयो नाम विशंतितमः सर्गः।

एकविंशतितमः सर्गः

अथ धर्मभुवाहूयमानो मानधनोनृपः।
उवाचान्तर्जलाद्वाचं वाचालितनभ स्थलाम्।।१।।

यदाह्वयसि नः पार्थ क्षात्रधर्मानुदीरयन्।
तत् तथैव व्यवस्यामः क्षणं विश्राममाचर।।२।।

किंचापदि महीपानां आं नापयानेन दूषणम्।
तथापि न तथा कुर्यां बन्धुशोकेन कर्षितः।।३।।

न राज्यमथवा प्राणानीहे कर्णविनाहृतः।
अन्यायसमरत्रासादहमन्तर्हितो जले।।४।।

एष हन्तास्मि वः सर्वान् यदि न्यायेन युद्ध्यत।
नेन्द्रादपि तदा दूये गदा यदि करे मम।।५।।

बुक्तशेषा पृथिव्येषा दत्ता ते प्रतिगृह्यताम्।
व्रजामि तपसेऽरण्यं हतः स्वजनबान्धवः।।६।।

तमुवाच ततो राजा तात माभव कातरः।
उत्तिष्ठ दिवमारोह त्वं वारोहय वीर नः।।७।।

एकेनैव त्वया सार्धं योद्धव्यं सुभटेन मे।
मा बैरुत्तिष्ठ - -।।- - - - - - - - - -।।८।।

- - - - -वं पृष्ठो गाण्डीविना हरिः।
जगाद शिक्षितो राजा भीमसेनो बलाधिकः।।९।।

न्याययुद्धे ततो नैतं जातु जेता वृकोदरः।
ऋजुना धर्मराजेन संशये पातिता वयम्।।१०।।

उरू भेत्स्यात् गदा युद्धे प्रतिज्ञां पूरयन्नयम्।
तदा भवति[1] सार्थोऽयमष्टादशदिन श्रमः[2]।।११।।

अध्यापितस्य रामेण कृताभ्यासस्य भूयसा।
दुर्योधनस्य विजयी गदायुद्धे न दृश्यते।।१२।।

ललाटे ताडितस्तेन ततः पवनन्दनः।
रराज रुधिरोद्गारी स्त्रवद्धातुरिवाचलः।।१३।।

ततः कोपेन महता वेगेन परिभूय तम्।
गदया हृदि संताड्य मोहयामास मारुतिः।।१४।।

राजा निमिषमात्रेण ससम्भ्रम समुत्थितः।
गदामुद्भ्रामयामास सिंहनादं ननाद च।।१५।।

उत्साहासनस्तस्य भीमसेनो धनंजयात्।
दृष्टोरुभङ्गसंकेतः तथा मतिमथादधे।।१६।।

प्रहारवारणायाथ दिवमुत्पततो जवात्।
गदया कौरवस्योरुं बभंज विजयाग्रजः।।१७।।

★यदा मौलावुपस्पृष्टं राजानं वीक्ष्य लाङ्गली।
चुकोप भीमसेनाय तमाह च तदा हरिः।।१८।।

---

१. भवति

२. दिनश्रमः

★ शिरस्यभिहतं दृष्ट्वा भीमसेनेन ते सुतम्।
रामः प्रहरतां श्रेष्ठश्चुक्रोध बलवद्बली।। श.प. ५९.३।।

आर्य दुर्योधनं पापमन्यायेन जवान यत्।
नापराध्यति तद्भीमः प्रतिज्ञायदपूरणात्।।१९।।

प्रतिज्ञपालनं धर्मः क्षत्रियस्येति जानता।
न तावद् भवता क्रोधः कर्त्तुं भीमाय युज्यते।।२०।।

जलानलविषद्यूत वनवासादिभिश्चिरम्।
एतेऽमुना विप्रकृताः कृतं पार्थेषु तत् क्रुधा।।२१।।

तथापि न महाराजश्चरणस्पर्शमर्हति।
स्वस्ति वो याम इत्युक्त्वा बलरामः प्रतस्थिवान्[३]।।२२२।।

भीमसेनाचरितं पापं राजानमिति चिन्तितम्।
राजधर्मस्य कथनेस्तमाश्वासयदच्युतः।।२३।।

निन्दामसहमानः स्वां गोविन्देन कृतान्ततः।
भङ्गुरोत्थित पूर्वाङ्गो जगादेति सुयोधनः।।२४।।

श्रुतोऽसि कंसदासस्य राजधर्मानुदीरयन्।
अहो न लज्जसे साधो मामलज्जन्तु जल्पसि।।२५।।

कौरव्यस्य वचः श्रुत्वा गोविन्दमिति निन्दतः।
परस्परमुपामन्त्र्य पार्थवीराः प्रतस्थिरे।।२६।।

अथ स्वशिविरं[४] गत्वा धर्मराजपुरस्सराः।
स्यन्दनेभ्योऽवतेरुस्ते विमानेभ्य इवामराः।।२७।।

उवाचाथ हरिः पार्थ रथादावतरदग्रतः[५]।
धनुरादाय गाण्डीवमक्षयाश्च महेषुधीः।।२८।।

---

३. प्रतस्थिवान्?
४. स्वशिविरम्?
५. रथादवतराग्रतः

तथैवावतरत् कृष्णो विष्णोः पालितशासनः।
कपिरन्तर्दधे केतोर्हरिरश्वानमुंचत।।२९।।

अवतीर्णे ततः कृष्णे गृहीतसकलायुधे।
भस्मासादभवद्वह्निमहसा सहसा रथः।।३०।।

पूर्वमेव रतो दग्धो गुरुकर्णायुधैरयम्।
अतिष्ठन् मदधिष्ठानादित्यूचे विष्टरश्रवाः।।३१।।

अथप्रस्थापितो राज्ञा विस्मितेनासुरान्तकः।
द्रुतमाश्वास्य गान्धारीं[६] पुनरेनमुपागमत्।।३२।।

पांचालानामथोत्साहं सेहे सर्वसहा यतः।
विज्ञाय तदभिप्रायं क्षणं दध्यावधोक्षजः ।।३३।।

स ततौ मङ्गलव्याजात् समं सात्यकिपाण्डवैः।
नदीमोघवतीं गत्वा जपंस्तामवसन् निशाम्।।३४।।

अथ भानोरुणाद्रोणी रभिषिक्तो महीभुजा।
कृतवर्म्मकृतान्वीतो विदेश गहनं वनम्।।३५।।

कौशिकेन हतान् वीक्ष्य निशिसुप्तान् सवायसान्।
अनुपातो ययौ ताभ्यां शिविरं पाण्डुजन्मनः ।।३६।।

महेश्वरवरप्राप्त-करवालो गुरोः सुतः।
एत एवावधीत् सर्वान् सुप्तान्[७] पाण्डवसैनिकान्।।३७।।

अश्वत्थामा विधायाशु तन्निवेशमपूरुषम्।
दुर्योधने तथा वेद्य गङ्गामभि ययौ भिया।।३८।।

---

६. गान्धारीम्?

७. इत्यधिकः पाठः ।

★अथागत्यावदत् पार्थान् धृष्टद्युम्नस्य सारथिः।
निशि सुप्तं हतं सर्व अश्वत्थाम्ना भवद्बलम्।।३९।।

तदाकर्ण्य हतोऽस्मीति[८] मूर्च्छितं तपसः सुतम्।
दध्युश्च सिषिचुस्तोयैः सर्वेवाष्पाकुलेक्षणाः।।४०।।

आनीता नकुलेनाथ द्रौपदी शोक-विक्लवा।
विललाप गलद्बाष्प विधूताधरपल्लवात्।।४१।।

अथ प्रायोगरिष्ठायां तस्यां द्रोणिवधं प्रति।
धनुरादाय नियति भीमे नकुलसारथौ।।४२।।

प्रस्थिता रथमास्थाय कृष्णधर्मसुतार्जुनाः।
ददृशुस्त्रिपथातीरे व्यासपार्श्वे गुरोस्सुतम्।।४३।।

द्रोणिना भीमभीतेन मुक्तभीषिकया ततः।
ब्राह्ममस्त्रं षनीचक्रे ब्राह्म्येणैव धनंजयः।।४४।।

अस्त्रयोरथ तेजोभिर्दह्यमाने जगत्त्रये[९]।
नारदं वीक्ष्य मध्यस्थं संजहारास्त्रमर्जुनः।।४५।।

उत्तरायाः पतद्गर्भे ममास्त्रमिति वादितनम्।
अश्वत्थामानमशपत् कोपेन पुरुषोत्तमः।।४६।।

---

८. अस्मीति?

★ तस्यां रात्र्यां व्यतीतायां धृष्टद्युम्नस्य सारथिः।
शशंस धर्मराजाय सौप्तिके कदनं कृतम्।। सौ.प. १०.१
एतैनरगजाश्वानां प्राशक्तिपरश्वरैः।
सहस्राणि निकृन्तदिभर्निःशेषं ते बलं कृतम्।।सो. प. १०.१७४

९. जगत्रये?

स्वयं देवर्षिणादत्तमश्वत्थाम्नः शिरोमणिम्।
ददुरागत्य कृष्णायै कृष्णेन सह पाण्डवाः।।४७।।

उत्थाय शोकतमसः प्रदीपमिव तन्म्मणिम्।
स्वयमाधत्त पांचाली धर्मराजस्य मूर्द्धनि।।४८।।

अत्रान्तरे च विदुर व्याससंजयसूक्तिभिः।
त्यक्तशोकः कुरुक्षेत्रं धृतराष्ट्रः समाययौ।।४६।।

सहैव भरतस्त्रीभिस्तमायान्तं निशाम्यते।
प्रत्युद्गम्य नमश्चक्रुः तपः सूनुपुरः सराः।।५०।।

दुर्योधनपिता तत्र परिरप्सु वृकोदरम्।
परिरभ्याय भीमं स बाहुभ्यामचूर्णयत्।।५१।।

धृतराष्ट्रं गतामर्ष तत्र संजयगर्जितम्।
हा हा भीमेन शोचन्तमित्युवाच चतुर्भुजः।।५२।।

मा शुचः कौरवाधीश नैष भीमस्त्वया हतः।
आयसी प्रतिमा ह्येषा मया प्रागेव कारिता।।५३।।

जीविष्यन्ति न ते पुत्रा निहतेऽपि वृकोदरे।
अस्थाने तव कोपोऽयं वंचितोऽसि ततो मया।।५४।।

दुर्योधनस्यापनयं जानन्नपि जनाधिप।
हन्तु मिच्छसि यद् भीमं केयं तव विवेकिता ।।५५।।

धृतराष्ट्रोऽवदत् कृष्णदमित्थं यदात्थ माम्।
किं करोमि सुतप्रेमा[10] यद्धृतेर्मामचालयत्।।५६।।

★ माय शुचो धृतराष्ट्रं त्वं नैष भीमस्त्वया हतः।
आयसी प्रतिमाह्येषा त्वया राजन् निपातिता।।स्त्री. प. ११.२३

१०. प्रेमाद्

धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञाता गान्धारीमभिवाद्य ते।
पृथावधपृथुरस्काः प्रणेशुः सह शौरिणा ।।५७।।

भवतः स्त्रीसमाक्रन्द मन्दभागोऽथ पाण्डवाः।
- - - [11]केयं समादृत्य ययुः समरमेदिनीम्।।५८।।

विलेपुरथ वीराणां बालाविगलितत्रपाः।
निमज्जयन्त्यः करुणे जगत् कुररिका इव।।५९।।

विसंष्ठुलासु स - - - - - - - - सुपिना सुपः।
-तथा कथं शेषे स त्वं शोणित-कर्दद्मे।।६०।।

यो बुद्धस्ताल-भङ्गेन नारीमधुरगीतिषु।
शिवानामाशिवावारैर्हन्त स त्वं न बुध्यते।।६१।।

कीर्त्यङ्गनापरिणयो विराजामुचितः प्रभोः।
- - - - - - - - - सागरा समाभिधेहि मा ।।६२।।

यं बालव्यजने बाला वैरिणां त्वामवीजयन्।
तमद्य वत् वीजन्ति पक्षैरकुशलाः समाः।।६३।।

यस्त्वं सिंहासनासीनः सेवितोऽसि करीश्वरैः।
सुप्ताः क्षितितले सोऽद्य गृध्रैरहह सेव्यसे।।६४।।

कर्त्ता कनकवृष्टीनां भर्त्ता च शरणार्थिनाम्।
हर्त्ता[12] वैरिस्त्रियांः सोऽयं हन्त हस्तः प्रियस्य मे।।६५।।

गृह्णाति न बलात् कण्ठे कांची बध्नाति न च्युताम्।
खथमद्य न तेनाथ मयि लीलाकरः करः।।६६।।

---

११. आम्बि
१२. इत्यधिकः पाठः

राज्ञां दुहितरो यस्मै स्पृहयन्ति धृतव्रताः।
तदद्य तव चुम्बन्ति तवास्यमशिवाः शिवाः।।६७।।

दुर्जरीकृत-सर्वाङ्गं शरैः स भृकुटीमुखम्।
अद्यापि न जहाति त्वां वीर लक्ष्मीः प्रतिव्रताः।।६८।।

परमेण च रूपेण गिरा च स्मितपूर्वया।
हरन्नः सरसां चेतो हन्तासि मयि निर्दयः।।६९।।

नार्यः भजन्तु मा वीरान् मा च वीरान् प्रसूयत।
शयाना वीरशयने यदेते न लपन्ति नः ।।७०।।

वदन्तीनामिति श्रुत्वा देवीनां परिदेवितुम्।
शिवाः शकुनयोप्यासन् मुक्तमांस-परिग्रहाः।।७१।।

तदा बहुधाश्चेष्टाः शृङ्गारकरुणाश्रयाः।
राजबद्ध्वोर्विदधिरे नव-वैधव्य-मोहिताः।।७२।।

धर्मराजगिरा नारीराश्वास्य विदुरस्ततः।
- - - - - - -स क्षारं सहितो जनैः ।।७३।।

कौरवाः सह कृष्णेन निष्श्वसन्तं तदस्त्रवः।
बन्धुस्वजनमित्राणि त्रिपथायामतर्पयत्।।७४।।

कानीनम्मे सुताः कर्ण तर्पयध्वं सहोदरम्।
इति कुन्त्योदिते पार्था रुरुदुः (गुरु)दुःस्थिताः।।७५।।

तट एव त्रिमार्गायाः धृतराष्ट्रेण सम्मतः।
अकारयदजातारिरन्त्येष्टिमवनी-भुजाम् ।।७६।।

दह्यमानोऽथ शोकेन लोकेश सहबान्दवैः।
भीष्मादाकर्णयामास स धर्मानितिहासवत्।।७७।।

ततो मा से- - -[१३] सिताष्टम्यां गते देवव्रते दिवम्।
मोहेन महताविष्टः स पपात धरातले।।७८।।

व्यास-नारद-गोविन्द-धृतराष्ट्रपुरस्सरैः ।
मुहुराश्वास्यमानोऽपि संज्ञामापचिरेण सः।।७९।।

ततो हा भीष्म हा कर्ण हा सौभद्रे - - - -[१४]।
- - - नैव गङ्गायाः प्रापि मोहो महीभृता ।।८०।।

अम्बिकेयस्तमाचख्यौ राजन्नुत्तिष्ठ मा शुचः।
धर्मेण विजितामेतामुपेहि भरताश्रयम्।।८१।।

तूष्णीमेव तथाप्येनं निश्वसतमधोमुखम्।
आबभाषे हरिः कोऽयं मोहस्तव - - - -।।८२।।

बोधितो बहुधासि त्वं विदुरव्यासनारदैः।
तथापि न तवाश्वासः कुतस्त्यासावधीरता।।८३।।

भवता पालितः[१५] सम्यक् क्षात्रधर्मः कुलोचितः।
हन्त हर्षप्रदे कोऽयं विषादस्तव जायते।।८४।।

इत्युवाच ततो राजा मुरारे[१६]म्यगात्थ माम्।
न किन्तु लक्ष्यते शान्तिः पातयित्वा पितामहम्।।८५।।

विरहेण च कर्णस्य मनो मे बहु तप्यते।
अनुजानीहि गच्छामि वनं प्रीतोऽसि मे यदि ।।८६।।

---

१३. घ
१४. ममायुषः
१५. पृथासुत
१६. पालितः

अथ नाथदया-सिन्धो दीनबन्धो तथा कुरु।
कुरुज्ञाति-वधोत्थानि यथा पापानि मा तपन्।।८७।।

तमेवं वादिनं व्यासो जगाद जगतीपतिम्।
युधिष्ठिर तव प्रज्ञा न सम्यगिति मे मतिः।।८८।।

निबद्धाः कर्मसूत्रेण न स्वतन्त्राः शरीरिणः।
चक्रवत् परिवर्त्तन्ते का तत्र परिदेवना।।८९।।

तथापि यदि [17]पाप्मानमात्मानमिह मन्यसे।
यजस्व हयमेधेन धर्म एव तमोनुदः।।९०।।

यथा दाशरती रामो यथा वा भरतो नृपः।
अश्वमेधं ततः कृत्वा मुक्तः सन्तापतो भव।।९१।।

मरुस्तेन मषेद्[18] दत्तो बहुत्वादुज्झितो द्विजैः।
तत् त्वं हिमवतः प्रस्थाद्वित्तमानय सत्वरम्।।९२।।

धृतराष्ट्रहरिव्यासै रित्थमाश्वासितो नृपः।
हस्तिनापुरमागच्छ[19] क्रतवे कृतनिश्चयः।।९३।।

अथानर्त्तपुरं याते हरौ सात्यकिना सह।
समयञ्ञमयामास कृच्छ्रेण तपसः सुतः।।९४।।

पुरस्कृत्य ततो व्यासं नमस्कृत्य च शार्ङ्गिणम्[20]।
- - - - - - - - - - - - -[21] हिमवन्तं प्रतस्थिरे।।९५।।

---

१७. स
१८. मरवे।
१९. गच्छत्?
२०. गर्ङ्गिणम्?
२१. हिम्?
सर्गान्ते पुष्पिकायाः अभावो विद्यते। अतएव काव्यमिदम् अपूर्ण प्रतिभाति।।